राज
कॉमिक्स विशेषांक
मूल्य 20.00 संख्या 85
महाकाल
सुपर कमांडो ध्रुव
एक आकर्षक स्टीकर मुफ्त

टकराव ! यह छोटा सा शब्द अपने अन्दर कितना विध्वंस समेटे हुए है, इसको बहुत कम लोग समझ पाते हैं-
जब बादल टकराते हैं तो चमकती है बिजली ! और जब ये बिजली जमीन से टकराती है तो राख के ढेर में बदल जाते हैं विशालकाय वृक्ष। जब पृथ्वी के अन्दर की चट्टानें आपस में टकराती हैं तो आ जाता है भूकम्प ! कांप उठती है जमीन ! लेकिन जब जमीन पर दो महाशक्तियां टकराती हैं तब उसका परिणाम और भी विध्वंसकारी हो सकता है। टुकड़ों-टुकड़ों में टूट-कर ब्रह्माण्ड में बिखर सकती है हमारी पृथ्वी-
तू अपनी मानसिक शक्तियों का चाहे जितना विनाशकारी वार कर ले, महामानव ! लेकिन किरीगी अपनी योगिक शक्तियों की मदद से तुझे कभी सफल नहीं होने देगा।
NUCLEAR MISSILE
महामानव अब वह पुराना वाला महामानव नहीं रह गया है, जिसको इस तुच्छ से लड़के ने मात दे दी थी।...
... अब मेरी शक्तियां और प्रभावकारी हो गई हैं। अब तू मुझे मानवों का विनाश करने से नहीं रोक सकता! क्योंकि आज इन मानवों का काल महामानव बनकर आया है...
महाकाल
कथा एवं चित्र : अनुपम सिन्हा
इंकिंग : विट्ठल कांबले
सुलेख एवं रंग : सुनील पाण्डेय
सम्पादक : मनीष गुप्ता

राजनगर हर मायनों में एक मेट्रोपोलिस है। एक महानगर। बढ़ते हुए ट्रैफिक और जगह-जगह लगते जाम इस बात की गवाही देते हुए लगते हैं-
लेकिन आज से राजनगर वासियों को ट्रैफिक की इस मुसीबत से थोड़ी सी राहत जरूर मिलने वाली है। क्योंकि आज से राजनगर में चलने वाली है, जमीन के नीचे चलने वाली भूमिगत मेट्रो ट्रेन। और मेट्रो रेल के इस उद्घाटन के अवसर पर मुख्य प्लेटफॉर्म पर जमा हैं, राजनगर के लगभग सभी जाने-माने लोग-
सुपर कमांडो ध्रुव भी-
ENQUI
ESCALAT
आप इस मेट्रो पर चढ़ने वाले पहले व्यक्ति होंगे, मेयर साहब!
आइए, ट्रेन पर चढ़कर इसका उद्घाटन कीजिए।
मुझे यहां पर कोई खास काम तो नहीं है...
... लेकिन जहां पर इतने सारे गणमान्य व्यक्ति एक साथ जमा हों, वहां पर किसी भी अनहोनी होने का खतरा अपने-आप ही बढ़ जाता है।...
... वैसे भी मुझे किसी खतरे का आभास हो रहा है।
ALATOR
ध्रुव का आभास गलत नहीं था। क्योंकि उसी वक्त प्लेटफॉर्म के दूसरे छोर पर-
सुनो, कैमरा जरा नेताजी पर ज्यादा फोकस करना। मेयर पर नहीं। ऊपर से आदेश आए हैं। इसका सीधा प्रसारण हो रहा है न!
मैं जानता हूं। तभी तो इतनी देर से मैं ट्रेन और मेयर को कम, नेताजी को ज्यादा ढूंढ़ रहा हूं।
शाबाश! तुम्हें इसका इनाम भी मिलेगा...
... फोकट में काम नहीं करना है।...

... नेताजी से कहकर तुमको कहीं पर एक फ्लैट सस्ते में एलॉट करवा देंगे।

अरे! अरे! ये तो बेहोश हो रहा है! इतनी सी खुशी भी बर्दाश्त नहीं कर पाया।

अब मुसीबत तो यह है कि नेताजी पर कैमरा कौन... फिक्स... करे... कर... आऽऽह!

बात पूरी हो पाने से पहले ही नेताजी का पी. ए. भी जमीन सूंघ चुका था-

और उसके तुरन्त बाद- आसपास खड़े सभी लोग पके जामुन की तरह जमीन पर गिरने लगे-

यह महक कैसी है?
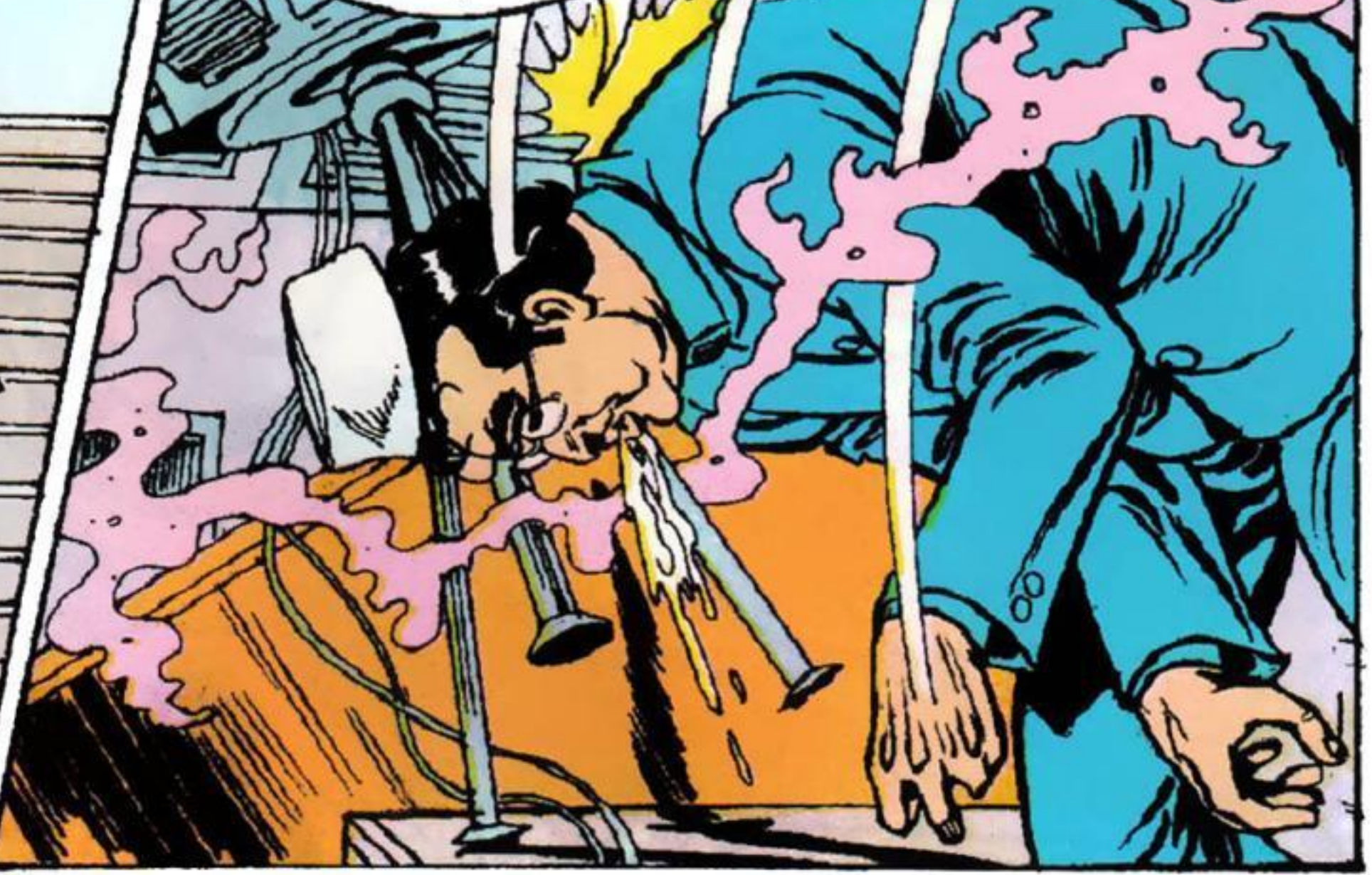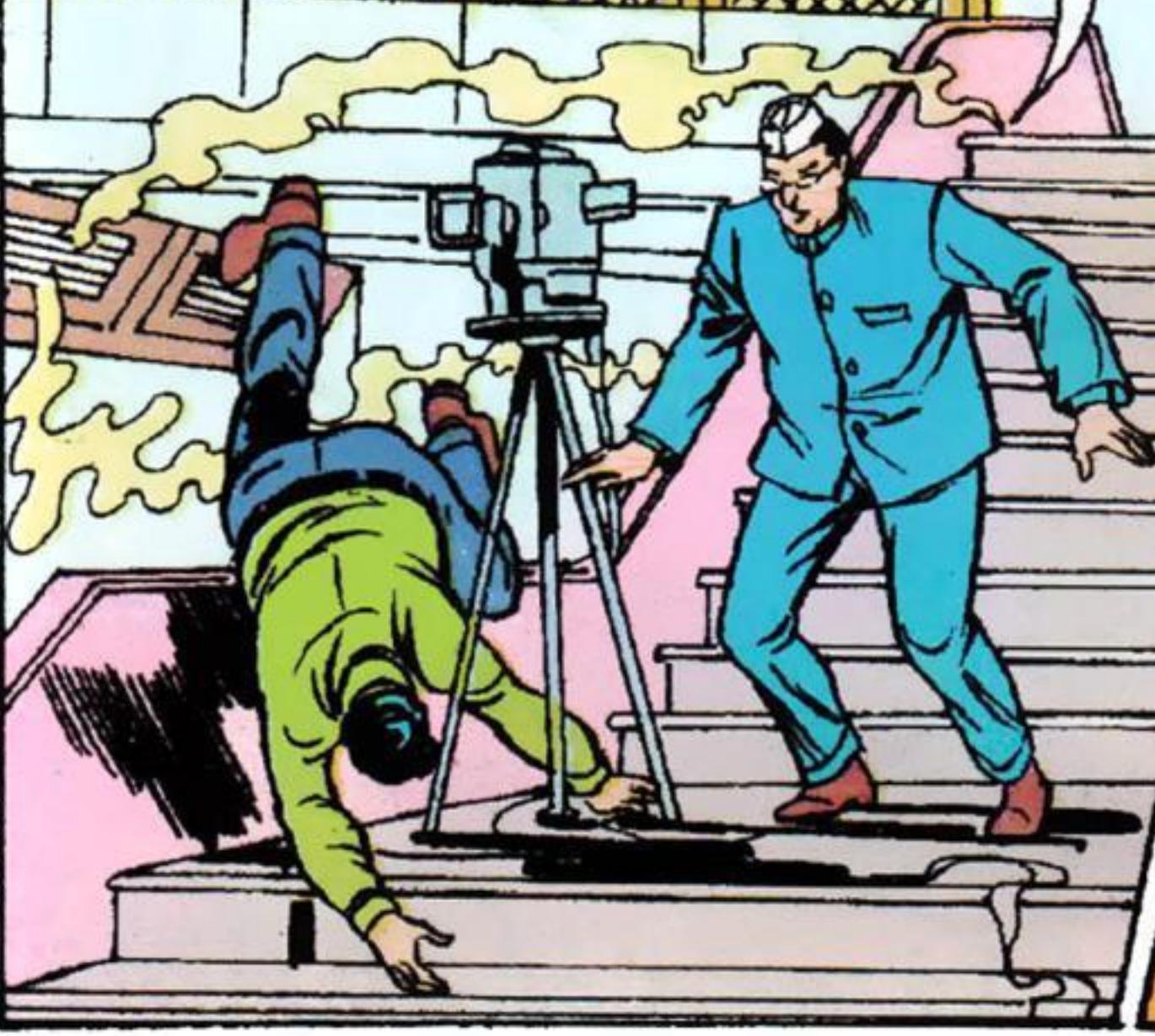
किसी गैस की महक लगती है। मीठी-मीठी।

भागो!

प्लेटफॉर्म पर बेहोश करने वाली गैस फैल रही है!

आवाज की गूंज खत्म होने से पहले ही प्लेटफॉर्म पर भगदड़ मच गई-

कुछ भाग पाए। कुछ वहीं पर गिर पड़े। और अधिकतर के शरीरों को भागते हुए लोगों के जूते रौंदने लगे-

मुझे इसी का डर था। यह भूमिगत रेल-ट्रैक चारों तरफ से बन्द है। और यहां के वातावरण को एयर कंडीशनिंग द्वारा साफ एवं स्वच्छ रखा जाता है!

और ये साफ जाहिर है कि किसी ने एयर कंडीशनिंग प्लांट के जरिए प्लेटफॉर्म पर कोई खतरनाक नर्व गैस फैलाई है।...
...प्लेटफॉर्म के उस छोर पर लोग सबसे पहले बेहोश होने शुरू हुए थे। गैस जरूर उसी कोने के 'एयर कंडीशन डक्ट' से आई है। और अगर ऐसा है तो गैस फैलाने वाले उसी डक्ट के आस-पास होंगे।
इन अपराधियों तक तुरन्त पहुंचने का एक ही तरीका है। मुझे इसी डक्ट से ऊपर तक जाना होगा...
... और इस डक्ट में खतरनाक नर्व गैस भरी हुई है।...
तड़ाक
गैस से भरी, संकरी डक्ट में रेंगता हुआ ध्रुव सतह के उस स्थान की तरफ बढ़ रहा था-
... अब देखना यह है कि मैं कितनी देर तक सांस रोक सकता हूं। क्योंकि इस नर्व गैस की हल्की सी महक भी मुझे पलभर में बेहोशी की दुनिया में पहुंचा देगी।
जहां से अपराधी भागने की फिक्र में था-
नर्व गैस की टेस्टिंग कामयाब रही अहमद! लोग बेहोश होने में दो सेकंड से ज्यादा समय नहीं ले रहे हैं...
यानी हमारा इस मेनहोल की दीवार तोड़कर यहां की डक्ट में नर्व गैस डालने तक की मेहनत करना बेकार नहीं गया...
... लेकिन अब यहां से निकल लो। कहीं कोई आ गया तो मुसीबत हो जाएगी।
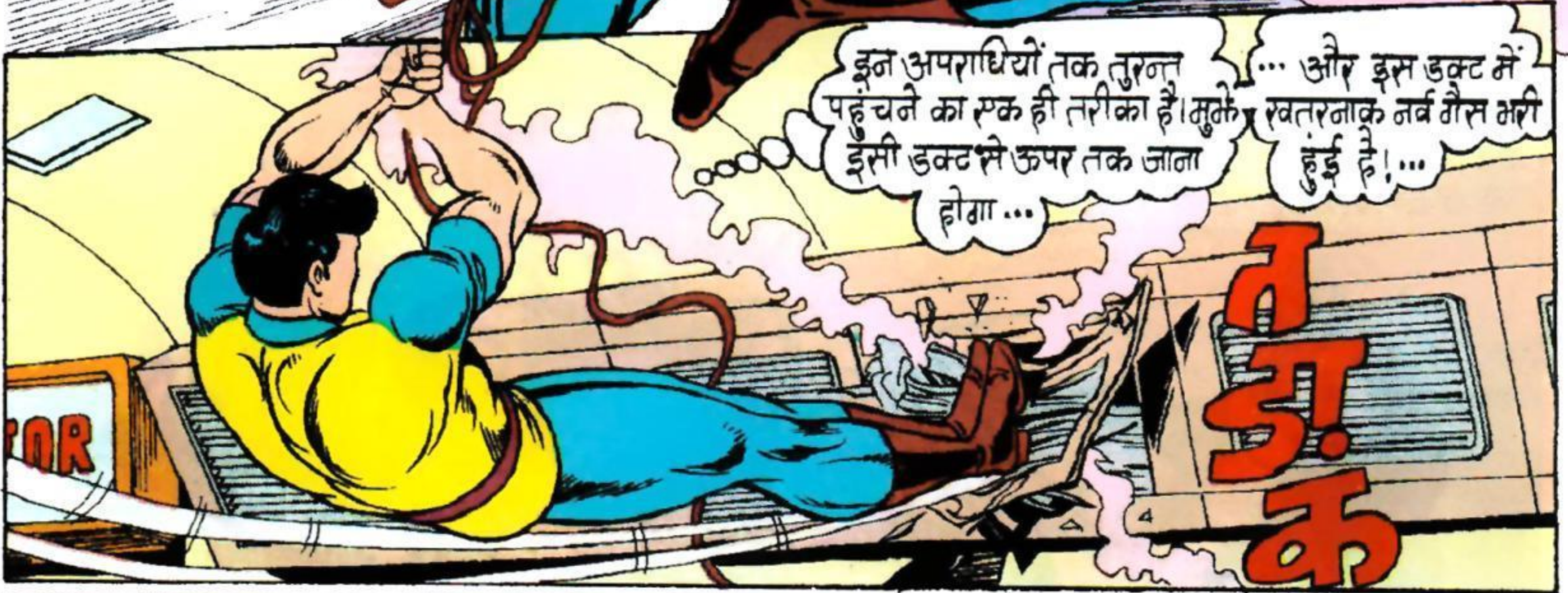
अब पाइप लपेटने वाली मोटर चलाओ, और फिर यहां से तुरन्त फूट लो!
गैस सिलेंडर भी गाड़ी में डाल लो!
ओफ! अब तो सांस रोकनी असंभव लग रही है। फेफड़े फटे जा रहे हैं!...
...मुझे जल्दी से ऊपर पहुंचना होगा।
और यह काम इस पाइप को पकड़कर आराम से किया जा सकता है!
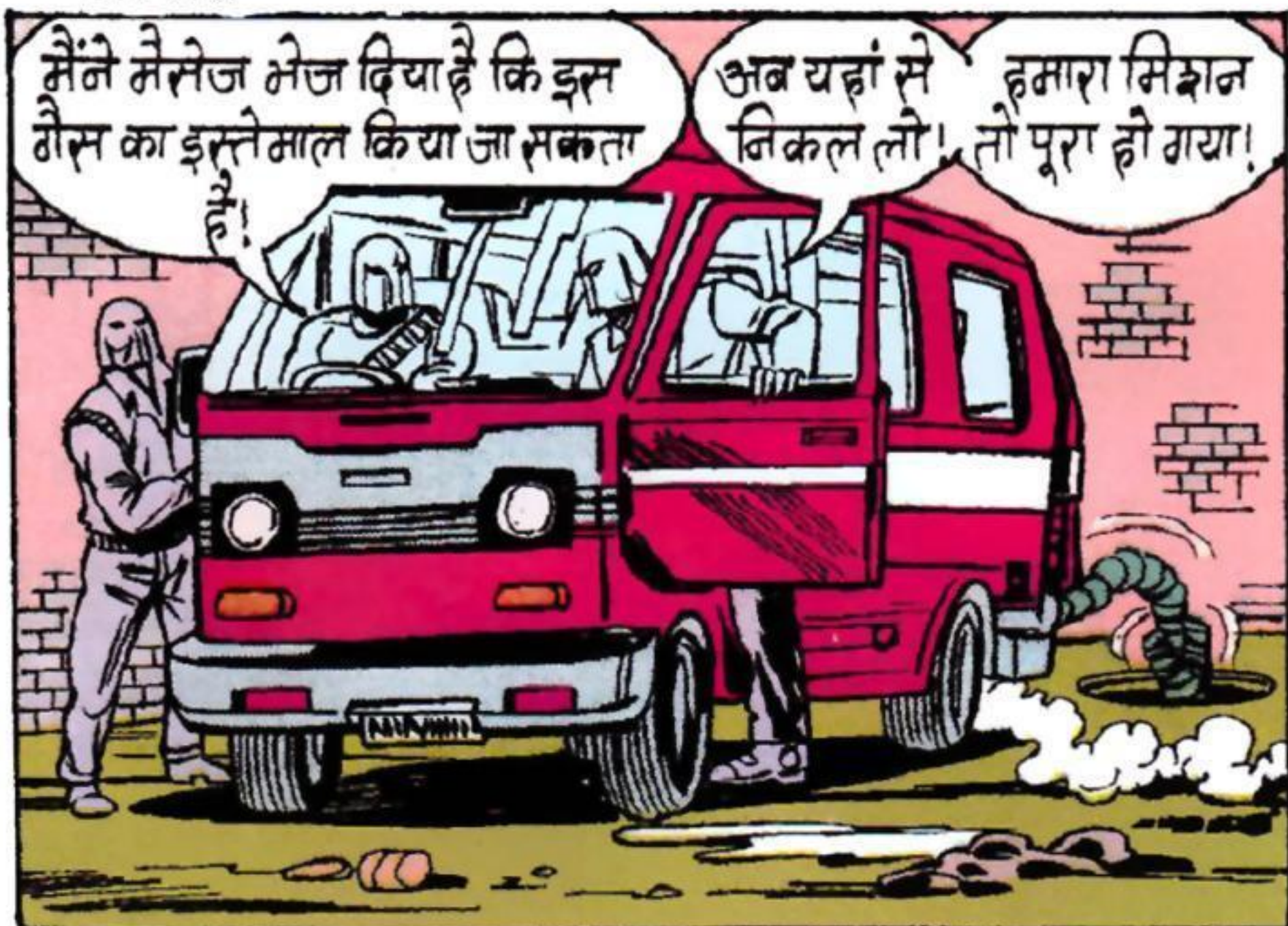
मैंने मैसेज भेज दिया है कि इस गैस का इस्तेमाल किया जा सकता है!
अब यहां से निकल लो!
हमारा मिशन तो पूरा हो गया!

तुम्हारा मिशन तो खत्म हो गया, लेकिन मेरा मिशन अभी-अभी शुरू हुआ है।
और उसे पूरा करने के लिए मुझे तुम लोगों की जरूरत पड़ेगी!
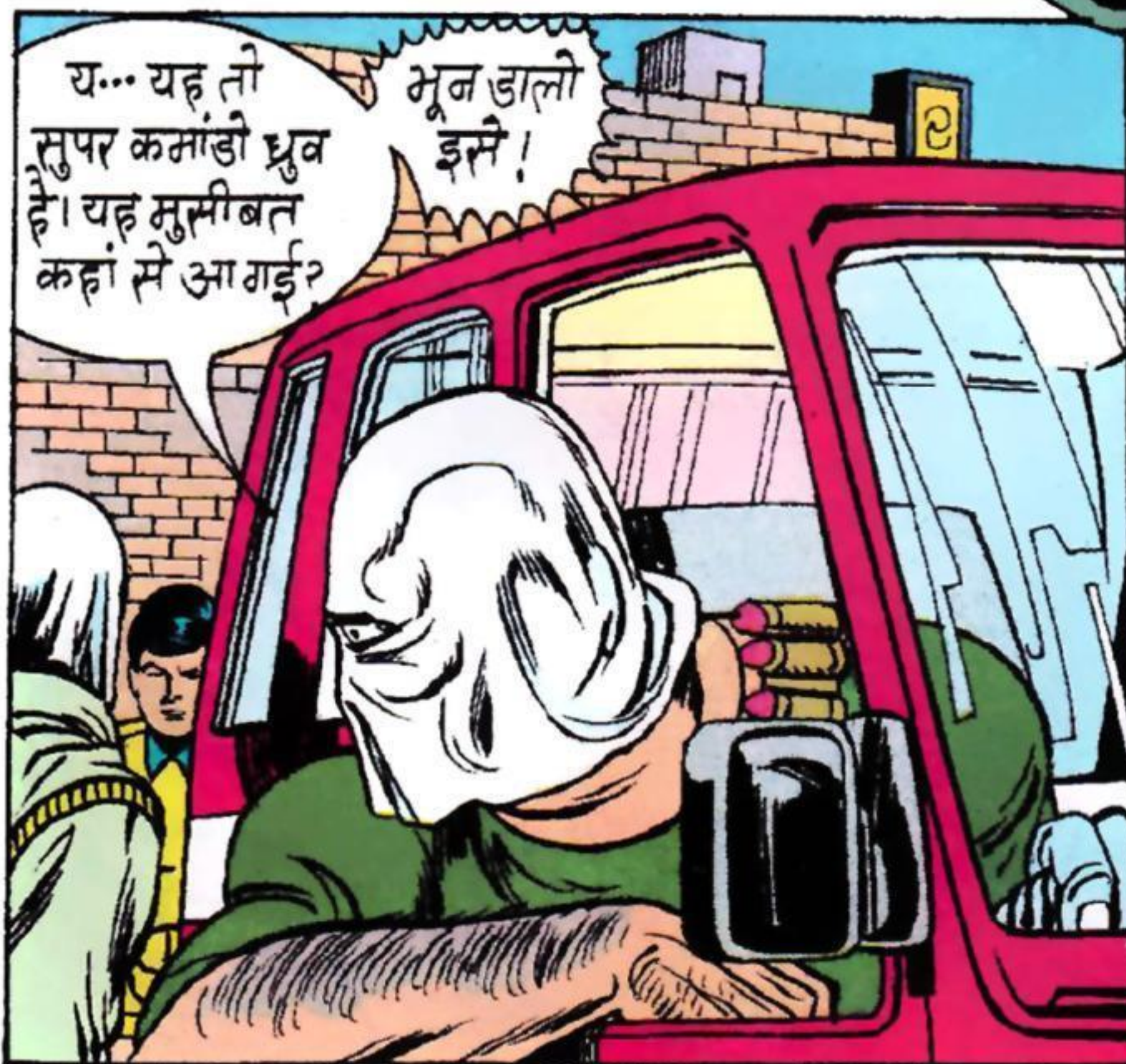
य... यह तो सुपर कमांडो ध्रुव है। यह मुसीबत कहां से आ गई?
भून डालो इसे!
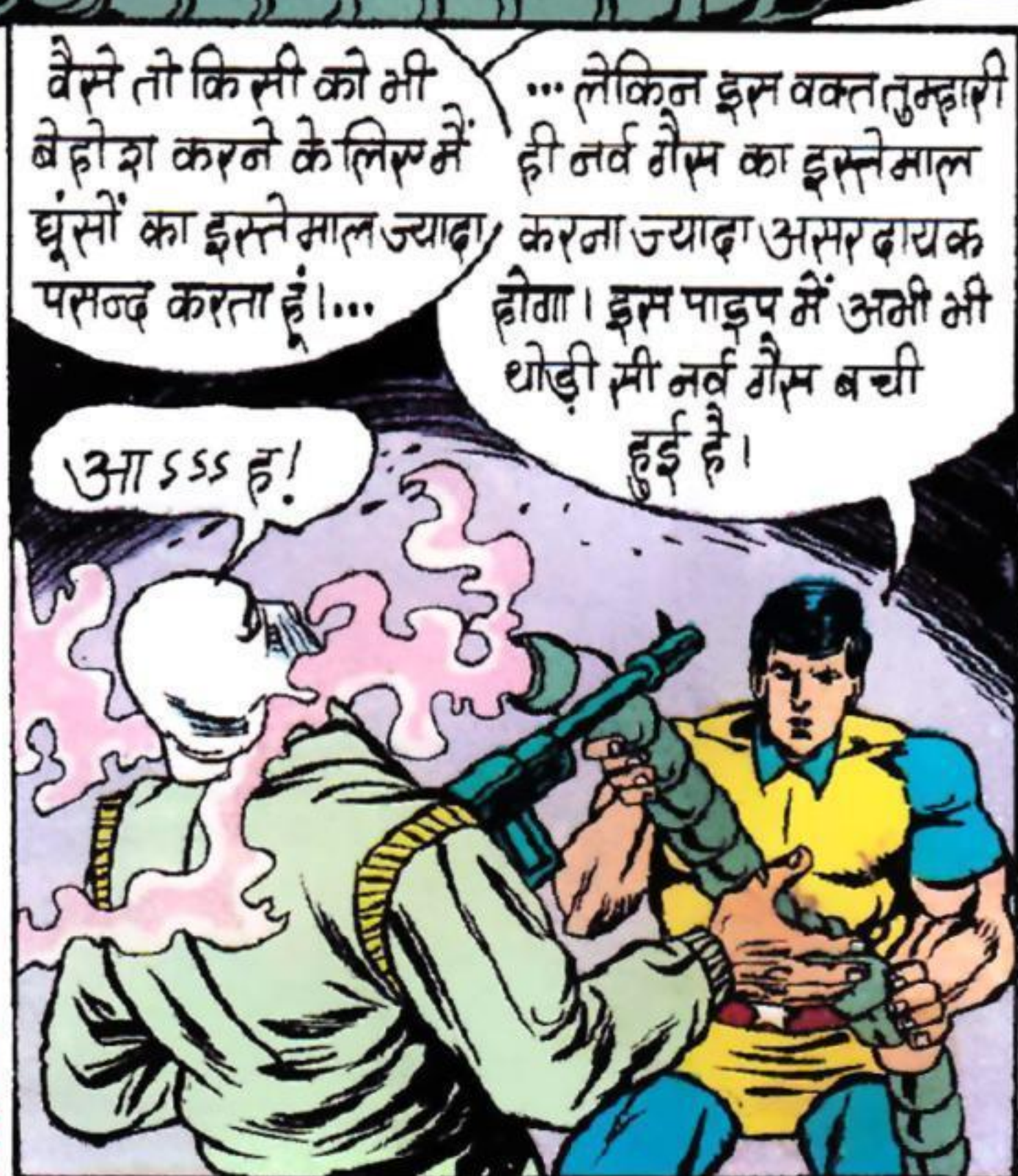
वैसे तो किसी को भी बेहोश करने के लिए मैं घूंसों का इस्तेमाल ज्यादा पसन्द करता हूं।...
...लेकिन इस वक्त तुम्हारी ही नर्व गैस का इस्तेमाल करना ज्यादा असरदायक होगा। इस पाइप में अभी भी थोड़ी सी नर्व गैस बची हुई है।
आऽऽऽह!
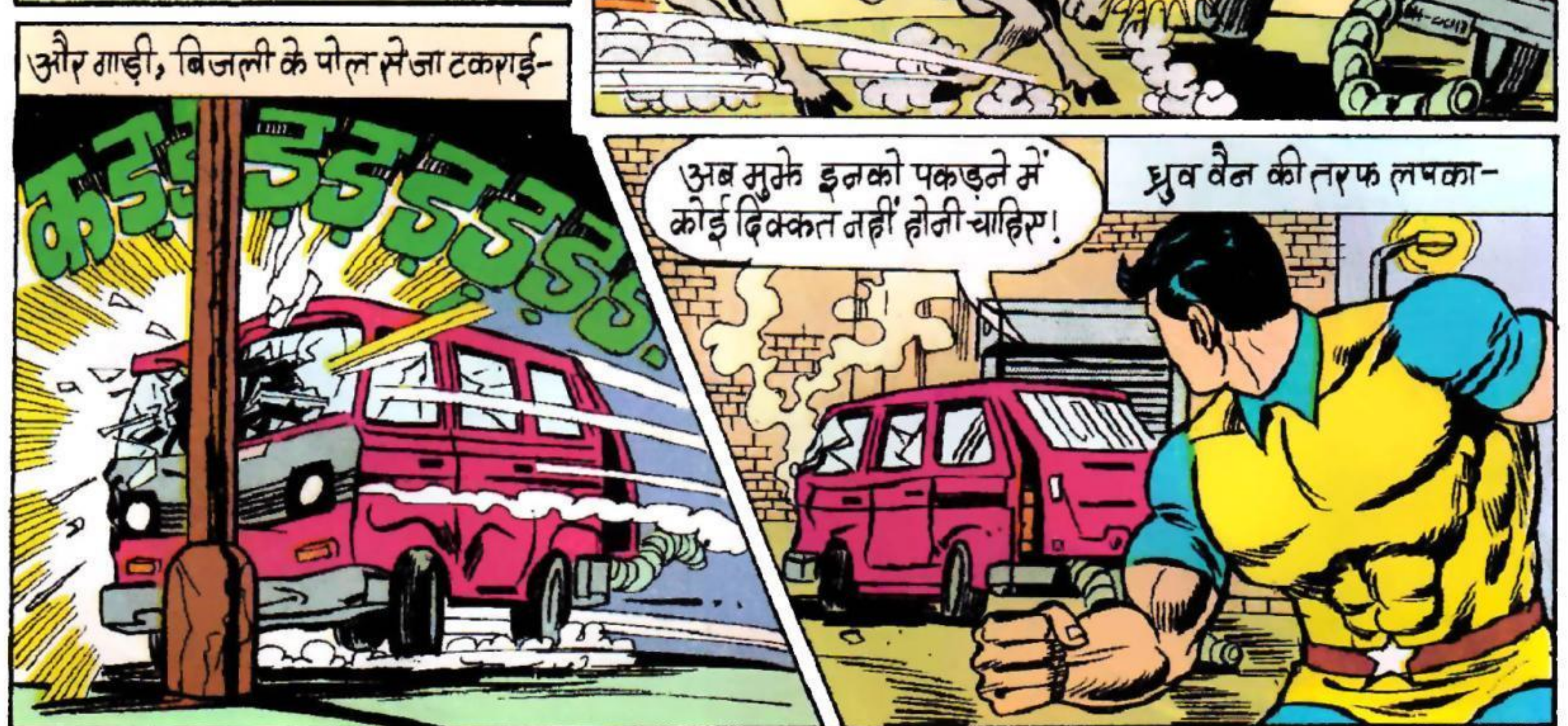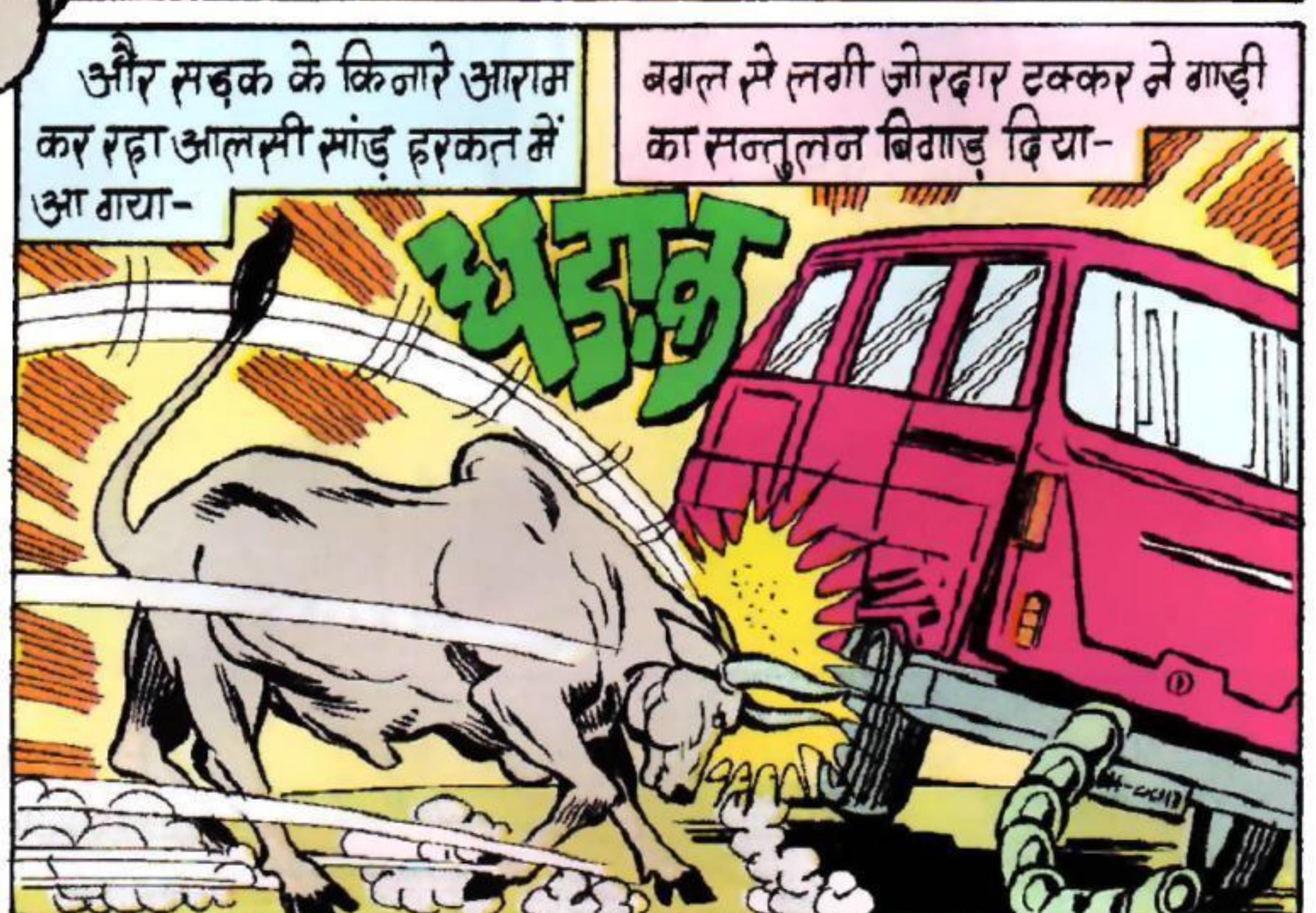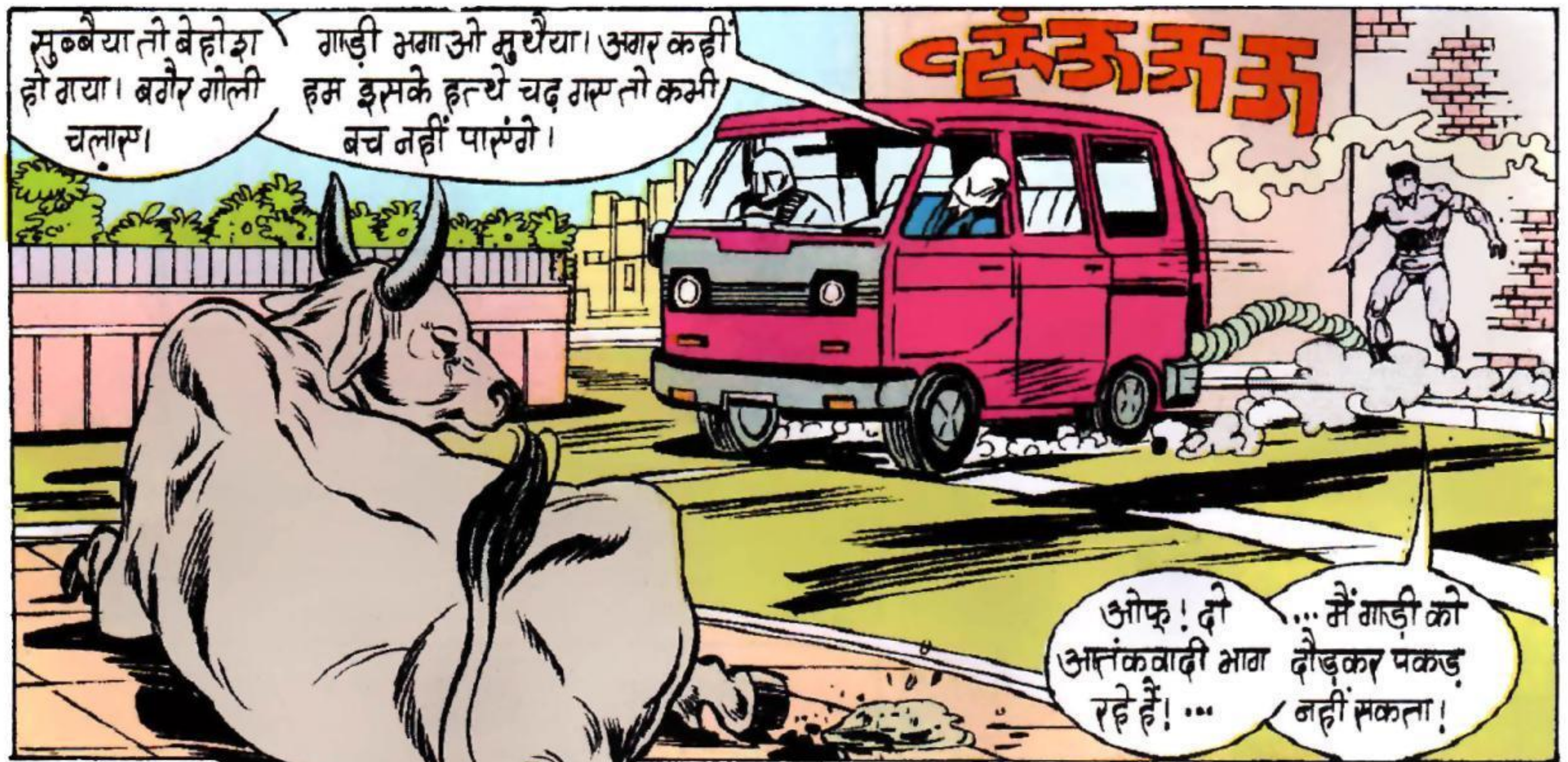
सुब्बैया तो बेहोश हो गया। बगैर गोली चलाए।
गाड़ी भगाओ मुथैया। अगर कहीं हम इसके हत्थे चढ़ गए तो कभी बच नहीं पाएंगे।
व्रूंऊऊऊ
ओफ्! दो आतंकवादी भाग रहे हैं! ...
... मैं गाड़ी को दौड़कर पकड़ नहीं सकता!
अब मुझे गाड़ी को ही रुकवाना होगा!
बांऽऽऽऽ
ध्रुव के गले से एक रंभाहट निकली-
और सड़क के किनारे आराम कर रहा आलसी सांड़ हरकत में आ गया-
बगल से लगी जोरदार टक्कर ने गाड़ी का सन्तुलन बिगाड़ दिया-
धड़ाक
और गाड़ी, बिजली के पोल से जा टकराई-
कड़ड़ड़ड़ड़ड़
अब मुझे इनको पकड़ने में कोई दिक्कत नहीं होनी चाहिए!
ध्रुव वैन की तरफ लपका-

लेकिन अगले ही पल उसे जमीन पर गिर जाना पड़ा-
अरे! रॉकेट! ये मुझ पर रॉकेट से हमला कर रहे हैं। यानी इनके पास रॉकेट लांचर है।
ये कोई मामूली आतंकवादी नहीं लगते। जरूर इनका संबंध किसी अंतर्राष्ट्रीय आतंकवादी संगठन से है।
हम इस रॉकेट लांचर का इस्तेमाल अब तक इसलिए नहीं कर रहे थे, क्योंकि इसका प्रयोग करना, पुलिस फोर्स को दावत देने के बराबर है।...
... लेकिन अब हम तुझे खत्म करके ही जाएंगे।
ओह! गोलियों से तो बचना मुझे ज्यादा मुश्किल नहीं लगता है। लेकिन 'रॉकेट लांचर' से बच पाना अलग ही बात है...
... अगर रॉकेट के सीधे वार से बच भी गया तो धमाके से बच पाना असंभव है।...
... खैर, जब तक सांस, तब तक आस...
... कोशिश तो करनी ही है...
जल्दी कर अहमद! इससे पहले कि पुलिस यहां पर आ जाए, इस छोकरे का काम तमाम करके फूट ले।
दबा ट्रिगर!
लेकिन ट्रिगर पर दबी उंगली...
... दबी रह गई-

यह 'आयामी द्वार' और 'शीत किरणें' तो एक ही आदमी का काम हो सकते हैं। और उसका नाम है...

...धनंजय!

तुम यहां पर क्या कर रहे हो?

तुमको ढूंढ़ रहा हूं। और वह भी पिछले तीन दिनों से लगातार!

तुम आखिर थे कहां पर? राजनगर में तो नहीं थे!

हां! मैं राजनगर से बाहर था। मंगल ग्रह जाने की तैयारी कर रहा था।★

मंगल ग्रह?

फिर, तुम मंगल ग्रह गए या नहीं?

★ जानने के लिए पढ़ें 'अंधी मौत' 'षड्यंत्र'

क्या है रामसिंह?
वायरलेस पर अभी-अभी मैसेज आया था सर! मेट्रो रेल प्लेटफॉर्म पर फैली गैस की रिपोर्ट आ गई है। यह वही गैस है, जिसके चार सिलेंडर, दो महीने पहले 'डिफेंस रिसर्च सेंटर' से चोरी हुए थे।
SUBWA
आई सी! लेकिन इस वैन में तो एक ही सिलेंडर बरामद हुआ है। बाकी तीन सिलेंडर कहां गए?
यह तो इनके होश में आते ही उगलवा लेंगे सर! फिलहाल आप इस कागज पर नजर डालिए। यह उधर बेहोश पड़े आतंकवादी की तलाशी में मिला है!
कोई नक्शा बना हुआ है इस पर!
यह क्या बना हुआ है? कुछ ऊटपटांग सा लगता है!...
जरा मुझे भी दिखाइए सर!
कागज पर नजर डालते ही ध्रुव चौंक उठा-
ओह! यह नक्शा तो राजनगर के समुद्री तट का लगता है। और समुद्र में जिस जगह पर 'x' का निशान बना हुआ है, वह जगह स्वर्ण नगरी से ज्यादा दूर नहीं है।
धनंजय भी मुझे किसी जरूरी काम से स्वर्ण नगरी ले जाना चाहता था! मुझे तुरन्त स्वर्ण नगरी पहुंचना होगा!
एक जरूरी काम याद आ गया एस॰ पी॰ साहब! मैं बाद में आकर आपसे मिलता हूं!
?

कुछ देर बाद- समुद्र की गहराइयों को चीरता हुआ ध्रुव...
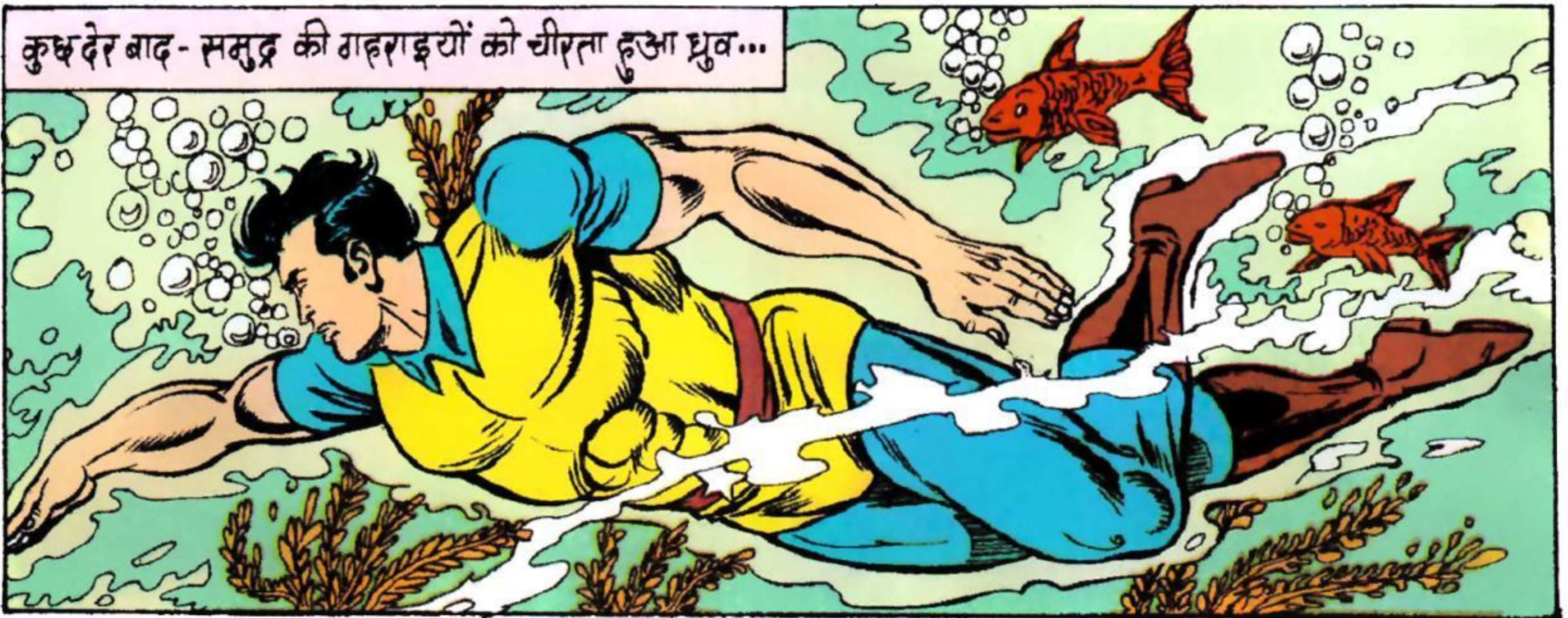
... एक अदृश्य आवरण से ढकी हुई रहस्यमय स्वर्ण नगरी में खड़ा था-
स्वागत है ध्रुव! तुमको अगर इतनी जल्दी ही आना था तो मेरे साथ ही आ जाते!
यह सब छोड़ो! पहले मुझे बताओ कि मुझे यहां पर क्यों बुलाया है? स्वर्ण नगरी में सब ठीक-ठाक तो है न?

सब ठीक-ठाक है। आओ मैं तुमको दिखाता हूं कि हमको यहां पर तुम्हारी जरूरत क्यों पड़ गई!

यह देखो! यह है तुमको यहां पर बुलाने का कारण!
महामानव!
यह यहां पर कैसे आ गया? इसको तो ज्वालोक में सामरी ने कैद करके रखा था!

ओह! तो तुम लोग यहां पर महामानव को 'हिप्नोटाइज' करके रखते हो क्या?

नहीं, ध्रुव! महामानव जैसे अतिविकसित मस्तिष्क वाले प्राणी को देर तक हिप्नोटाइज करके रख पाना संभव नहीं है। इसको ऐसी सुस्त अवस्था में रखने का तरीका हमारे मानसिक विशेषज्ञ प्रसेन ने निकाला है।

हां, ध्रुव! इसको बन्दी बनाए रखने के लिए मैंने यह यंत्र बनाया है। यह यंत्र किसी भी व्यक्ति के दिमाग पर ऐसा प्रभाव डालता है, जिससे उस व्यक्ति को ऐसा आभास होता है, मानो उसकी सबसे बड़ी इच्छा पूरी हो गई हो!

इस वक्त महामानव अपने ख्यालों में खोया हुआ यह देख रहा है कि उसने पूरी पृथ्वी से मानवों का विनाश कर दिया है। इसीलिए अब यह सन्तुष्ट और शिथिल हो गया है...
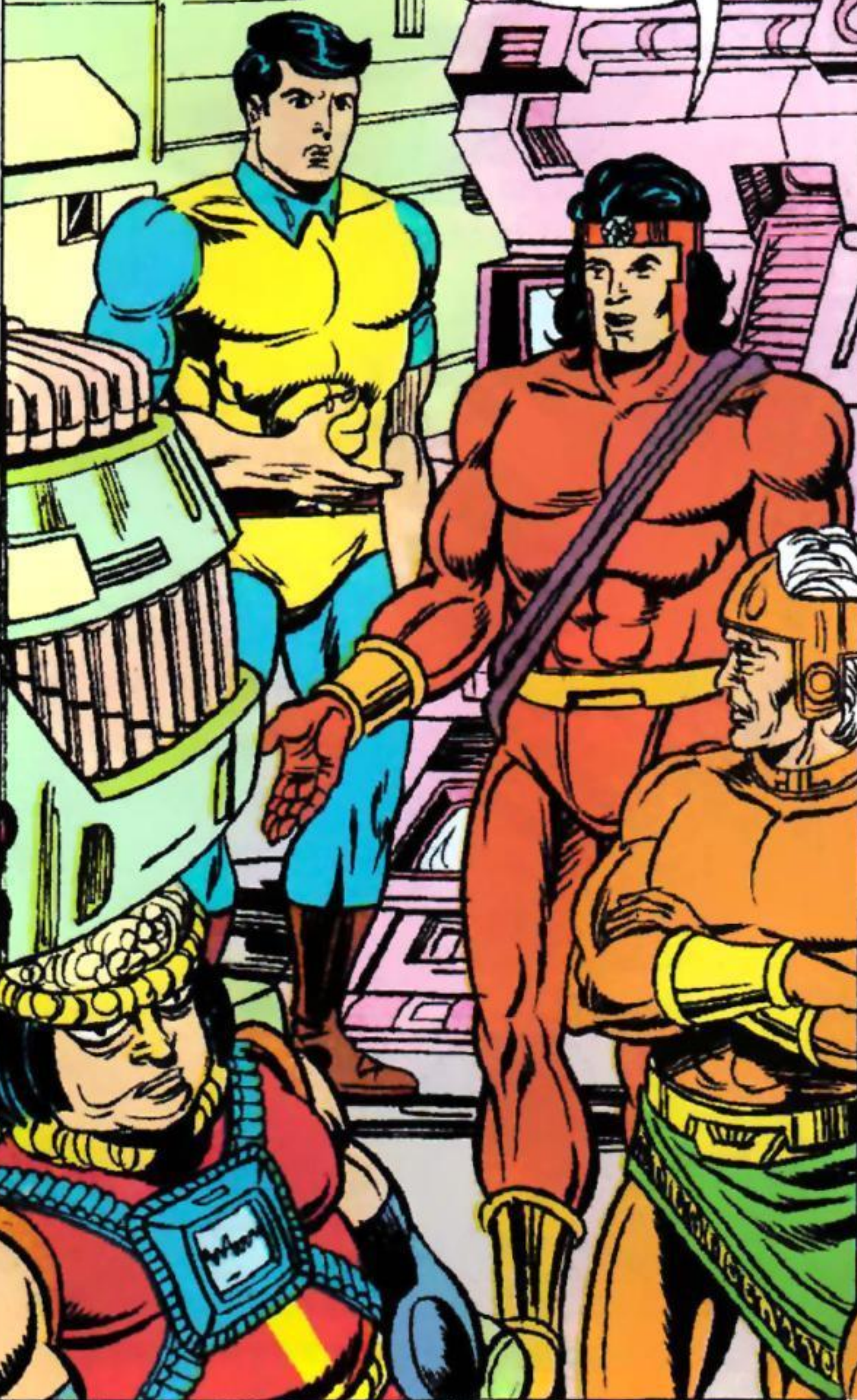
बधाई हो! आपने अपना काम सफलता से पूरा कर लिया है।

अभी नहीं ध्रुव! अभी तो मुझे महामानव की मानसिक ऊर्जा का इस्तेमाल करना है।...

... महामानव के अन्दर इतनी मानसिक ऊर्जा का भंडार है, जिसे अगर विद्युत ऊर्जा में बदल दिया जाए तो पूरी पृथ्वी को रोशन किया जा सकता है। और इसके लिए हमें तुम्हारी मदद की जरूरत है।

मेरी मदद?
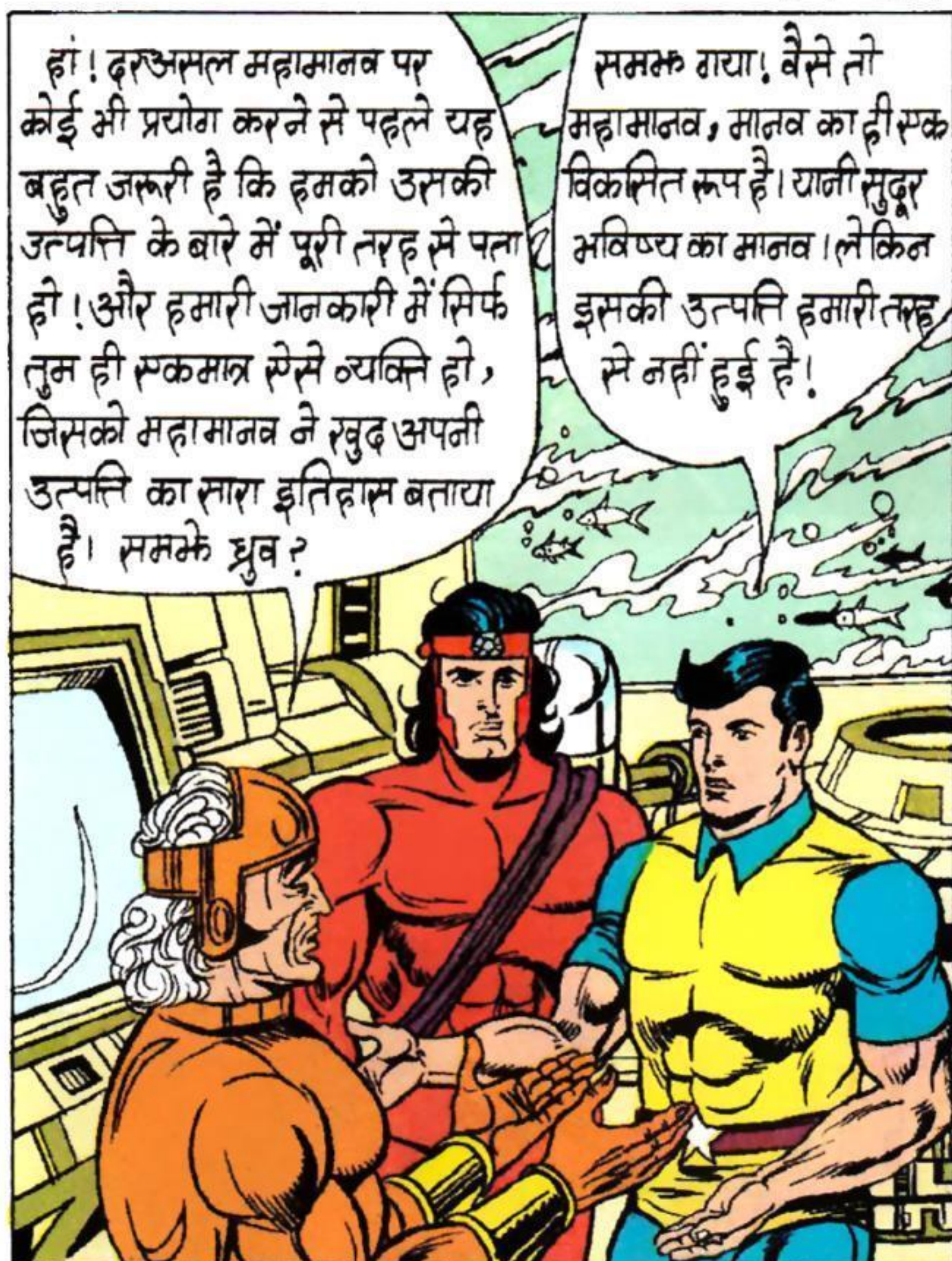
हां ! दरअसल महामानव पर कोई भी प्रयोग करने से पहले यह बहुत जरूरी है कि हमको उसकी उत्पत्ति के बारे में पूरी तरह से पता हो ! और हमारी जानकारी में सिर्फ तुम ही एकमात्र ऐसे व्यक्ति हो, जिसको महामानव ने खुद अपनी उत्पत्ति का सारा इतिहास बताया है। समझे ध्रुव ?
समझ गया। वैसे तो महामानव, मानव का ही एक विकसित रूप है। यानी सुदूर भविष्य का मानव। लेकिन इसकी उत्पत्ति हमारी तरह से नहीं हुई है!
जैसा मुझे महामानव ने बताया था, उसके अनुसार पृथ्वी पर जीवन की उत्पत्ति और महामानव के जीवन की शुरुआत लगभग एक साथ ही शुरू हुई थी। यह बात लगभग दो सौ करोड़ साल पहले की है!
इधर ध्रुव महामानव के जीवन का इतिहास सुनाने जा रहा था-
और इसी वक्त- स्वर्ण नगरी से कुछ ही किलोमीटर के फासले पर-
हमको थोड़ी देर पहले एक 'कोडेड मैसेज' मिला है सर! अरब देशों के एक आतंकवादी संगठन को हमारे इस गुप्त न्यूक्लियर मिसाइल अड्डे का पता चल गया है। वे इस पर हमला करके इस मिसाइल बेस को कब्जे में करने की कोशिश कर सकते हैं!
ऐसी हरकत करके वे मुंह की ही खाएंगे। यह अमरीकी सरकार का 'मिसाइल-बेस' है। हमारे पास ऐसे-ऐसे अत्याधुनिक शस्त्र हैं जो हमारे पास आने वाले किसी भी गोताखोर, शस्त्र या मशीनी यंत्र को पलभर में ढूंढ कर खत्म कर सकते हैं।
उनके लिए बेहतर यही होगा कि हमारे आस-पास भी न फटकें! वर्ना उनकी लाशों को मछलियां ही नोंच-नोंचकर खाएंगी!
बेस-कमांडर को अपने यंत्रों पर बहुत भरोसा था-

लेकिन उसके यंत्र भी क्या कर सकते थे जब उनकी तरफ बढ़ने वाला खतरा न मानव हो, न कोई शस्त्र और न ही मशीनी यंत्र!
वे खतरे हों, सधाई हुई मछलियां, जिनके शरीर पर बंधे हों नर्व गैस के सिलेंडर और हल्के विस्फोटक-
मछलियां तीर की तरह सीधी चलती हुई, उस संयंत्र से टकराईं, जो समुद्री पानी को ऑक्सीजन में बदल रहा था-
एक हल्के से धमाके के साथ उस संयंत्र की ऊपरी सतह भी फट पड़ी और नर्व गैस के सिलेंडर भी। कुछ ही सेकंडों में नर्व गैस पानी में घुल चुकी थी-
और उस पानी से बनी ऑक्सीजन के साथ-साथ खतरनाक नर्व गैस भी मिसाइल बेस के वातावरण में फैलने लगी थी-
यह 'डेंजर सिग्नल' क्यों बज रहा है?
हमारे 'वॉटर ऑक्सीजन कनवर्टिबल प्लांट' में हल्का सा विस्फोट हुआ है। एक-दो बड़ी मछलियां भी तैर रही हैं। पर आस-पास और कुछ भी नजर नहीं आ रहा है!
जरूर उन मछलियों के शरीर पर विस्फोटक ... आऽऽह!
कर्नल! आपको क्या हो र... हा...ऽऽऽ
आऽऽह!
नर्व गैस ने अपना असर दिखाना शुरू कर दिया-

कुछ ही पलों बाद- पूरे 'मिसाइल बेस' में हर तरफ बेहोशी का साम्राज्य था-
मिसाइल बेस से कुछ ही दूर पर इंतजार कर रहे आतंकवादियों का इंतजार खत्म हो गया था-
धमाका हुए दो मिनट हो चुके हैं। राजनगर की मेट्रो रेल पर नर्व गैस का प्रयोग करने वाले हमारे साथियों के अनुसार नर्व गैस अपना असर दिखाने में दो से तीन सेकंड का समय लेती है। अब तक तो पूरे बेस के सैनिक बेहोश हो चुके होंगे!
तो फिर इंतजार किस बात का? चलो, चलकर मिसाइलों को अपने कब्जे में ले लेते हैं!
इधर आतंकवादी मिसाइलों को कब्जे में लेने के लिए बढ़ रहे थे...
...और सतह पर- एक रहस्यमय आकृति समुद्र की खाक छान रही थी-
महामानव की मानसिक तरंगें कहीं आस-पास से ही आ रही हैं। लेकिन ये तरंगें बहुत धीमी हैं। इनकी मदद से महामानव की सही स्थिति का पता लगा पाना बहुत मुश्किल होगा।
ऊपर कोई महामानव को ढूंढ रहा था...
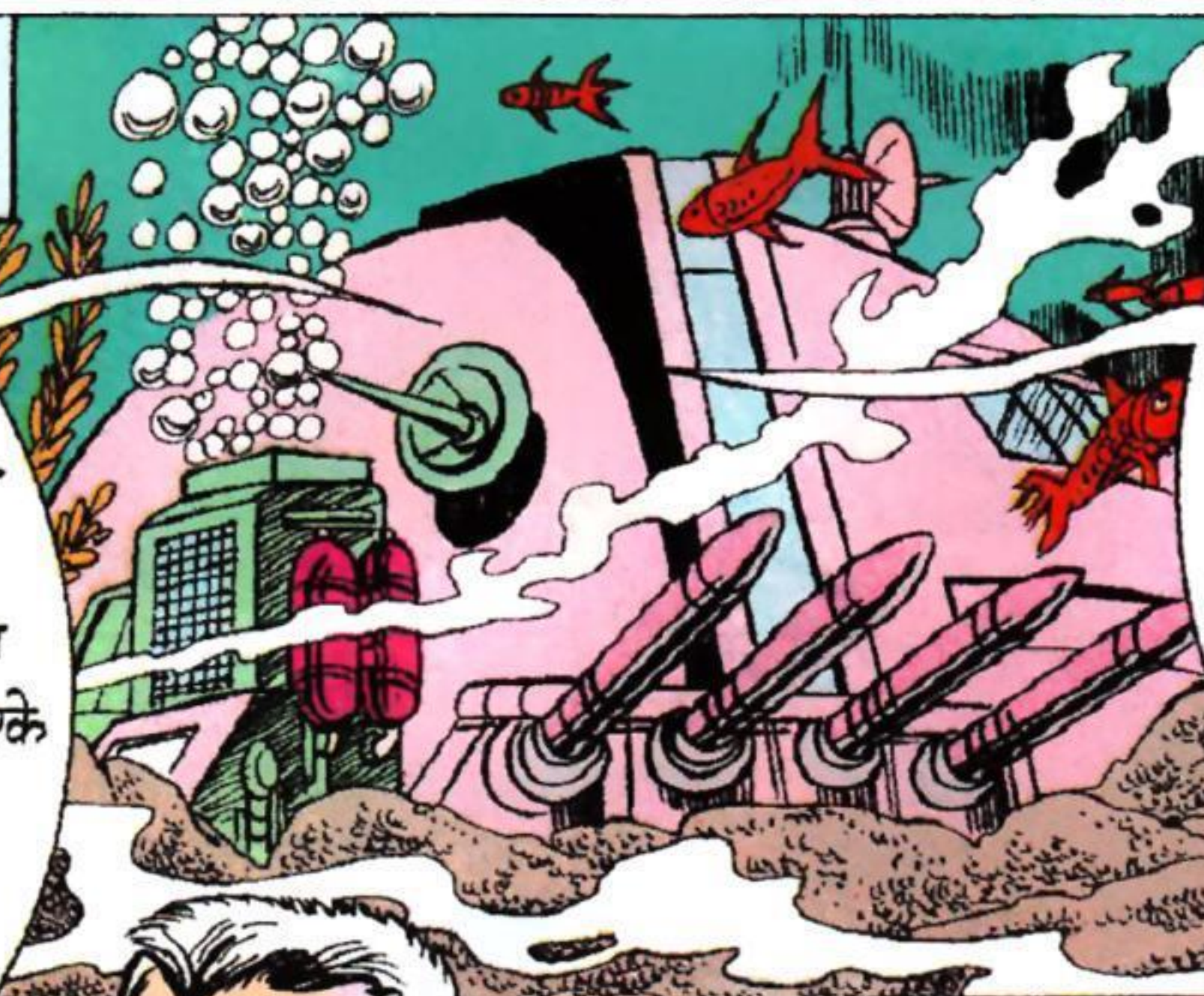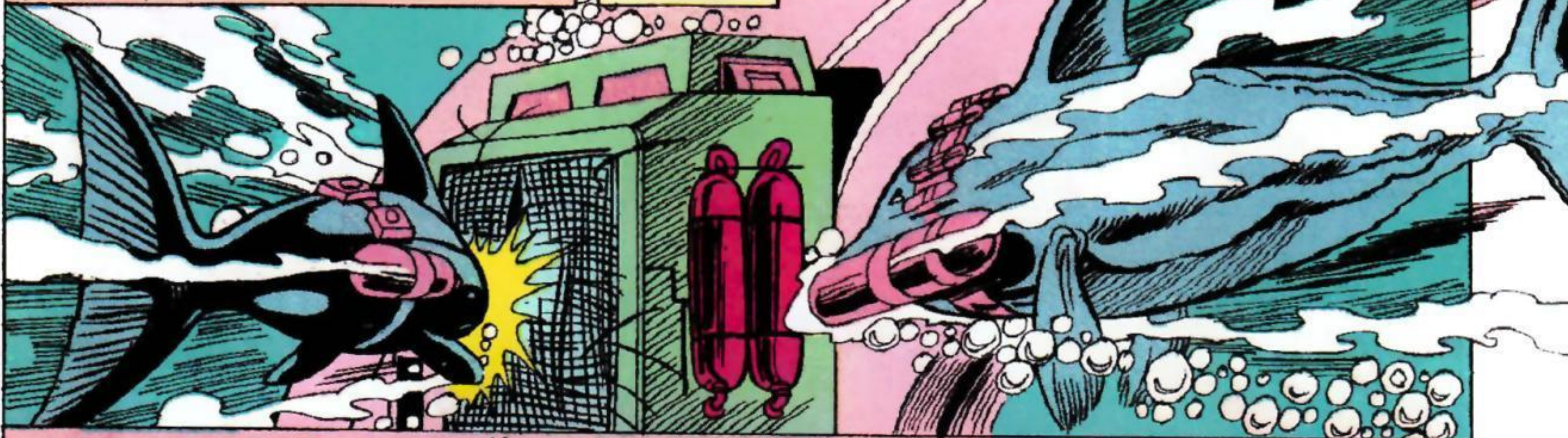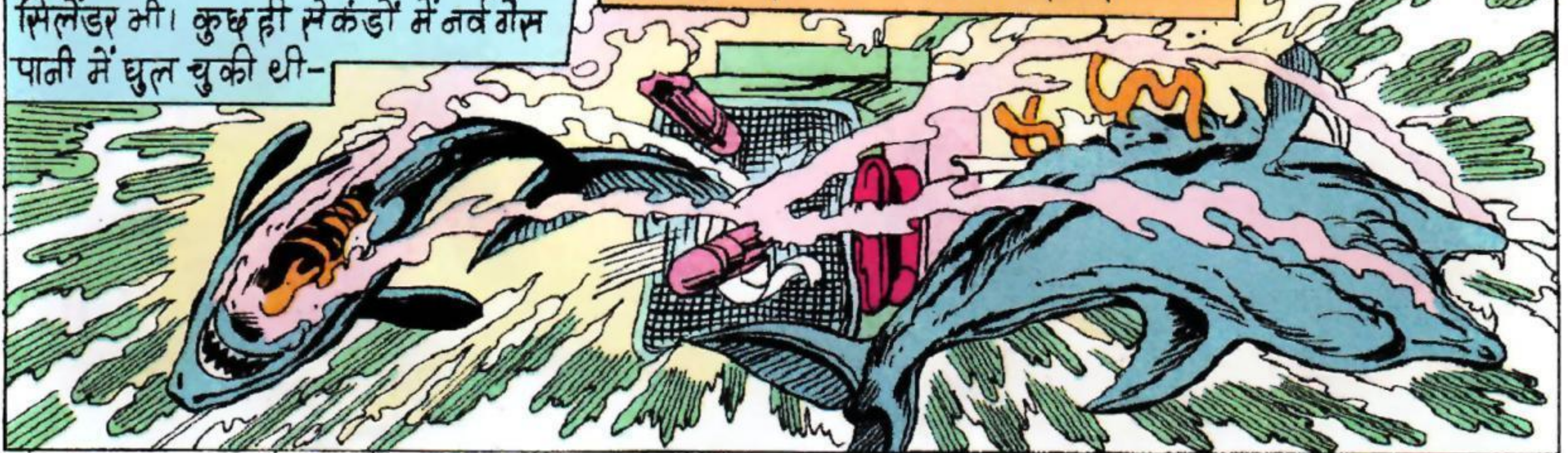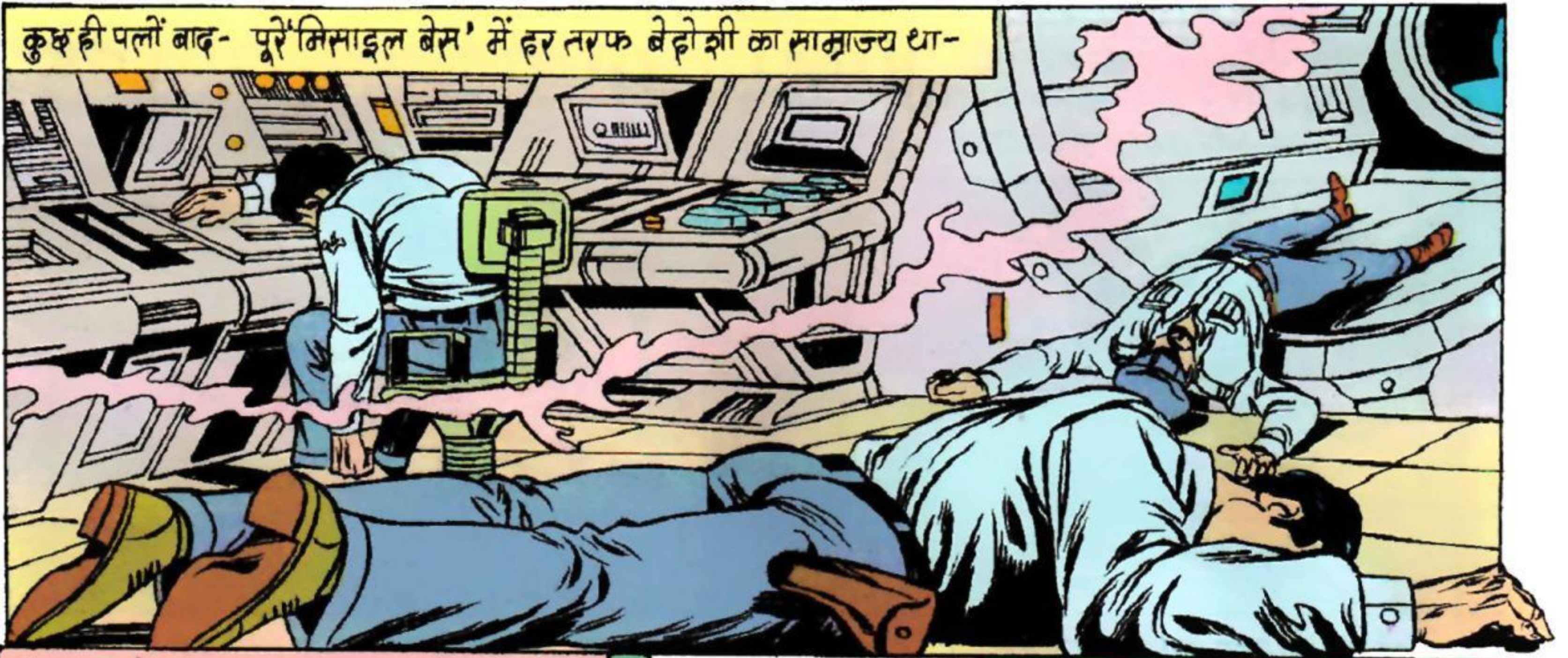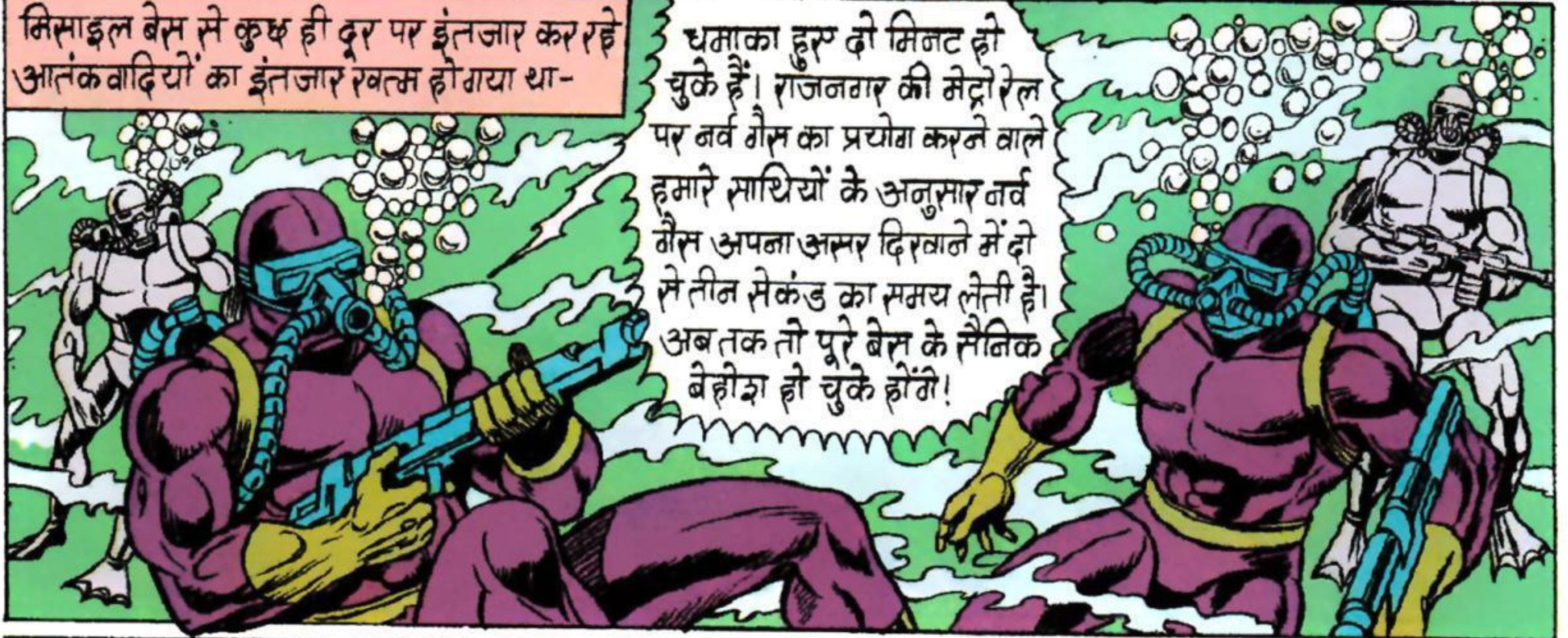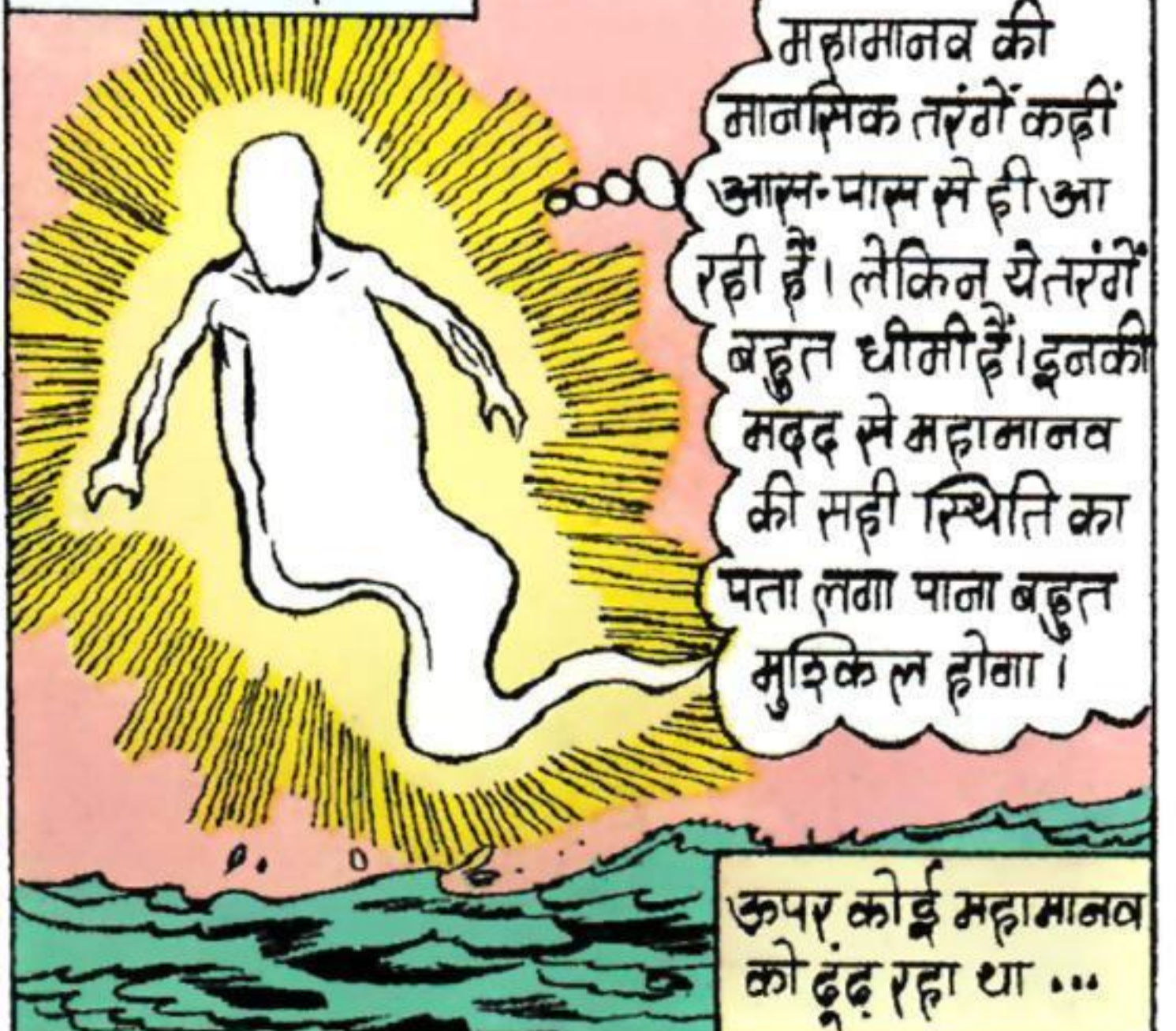
... और वहीं पर पास में- समुद्र की तल में बसी स्वर्ण नगरी में ध्रुव, महामानव के जन्म और विकास की कहानी सुना रहा था-
लगभग दो सौ करोड़ साल पहले पृथ्वी पर जीवन की उत्पत्ति एक कोशिका वाले प्राणियों से आरंभ हुई। जैसे अमीबा या पैरामीशियम।
जैसे- जैसे समय बीतता गया ये प्राणी भी विकसित होने लगे। और लगभग डेढ़ सौ करोड़ साल बाद ये प्राणी विकसित होकर बड़ी- बड़ी विशालकाय छिपकलियां और सरीसृप बन गए। जिनको हम 'डायनासौर' कहते हैं!
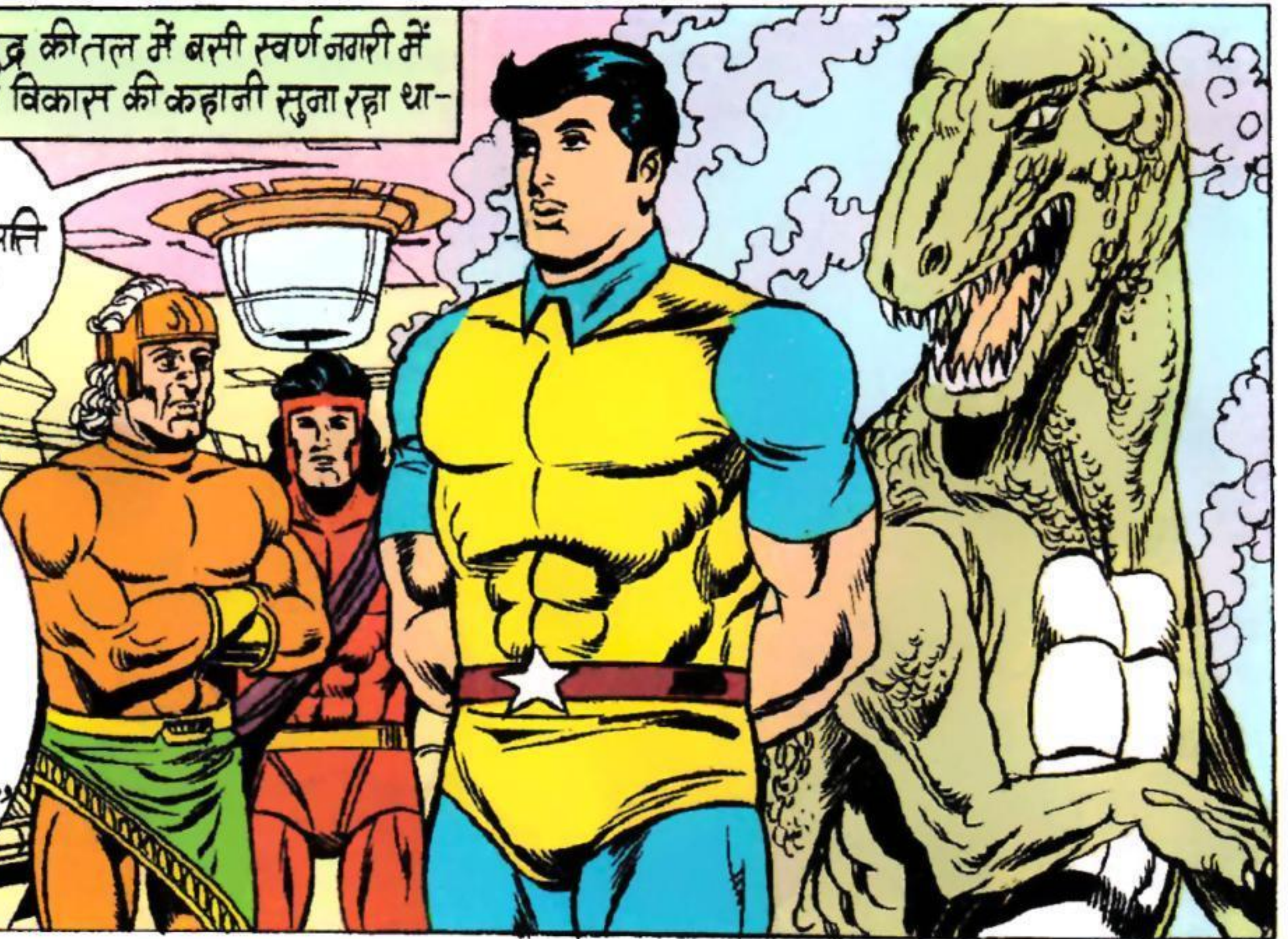
लेकिन इन डेढ़ सौ करोड़ सालों के दौरान, जीवन कहीं और पर भी पनप रहा था। एक कोशिका न जाने कैसे बहते- बहते उत्तरी ध्रुव पर पहुंच गई थी। उस स्थान पर, जहां पर सूर्य की जीवनदायी किरणें, लगातार छः महीनों तक पृथ्वी को ऊर्जा देती रहती हैं।
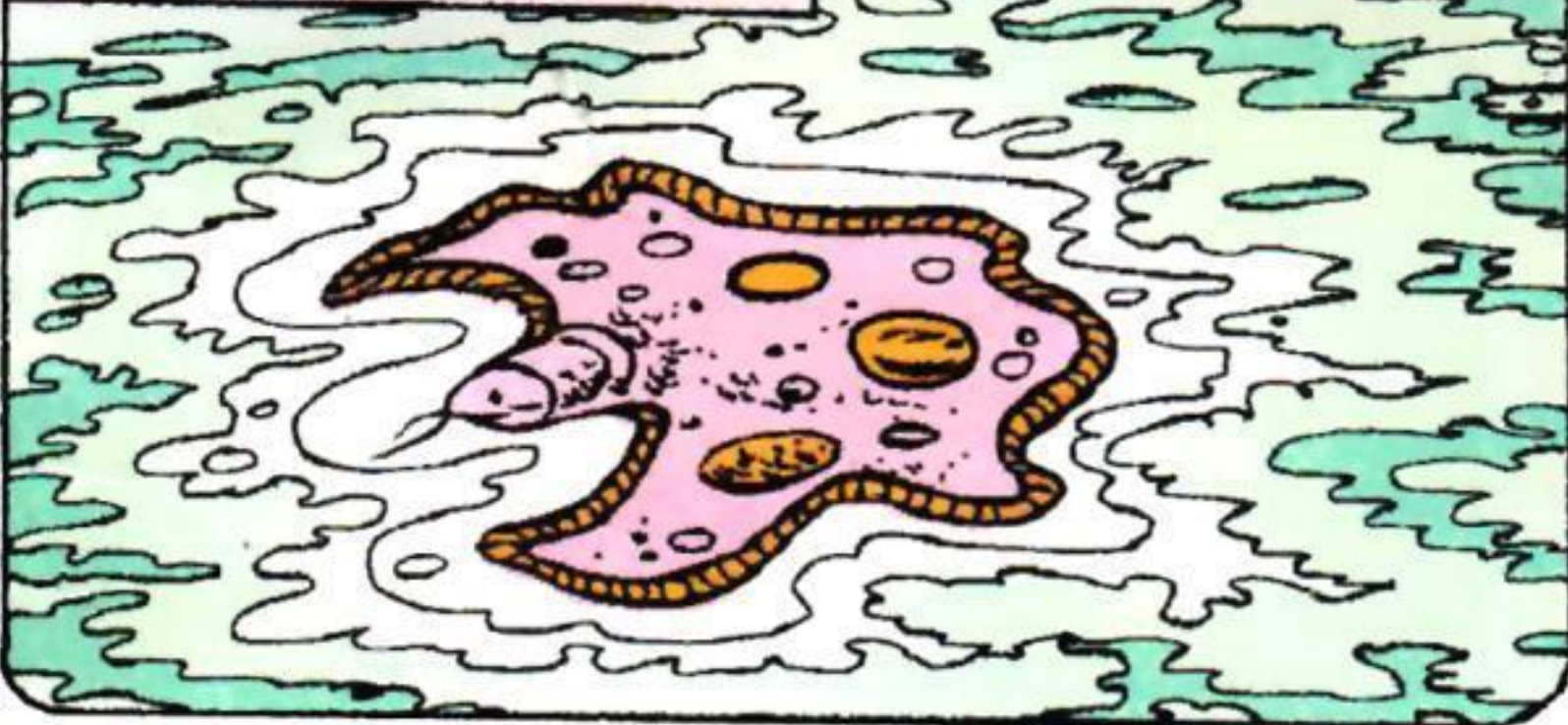
सूर्य की इन जीवनदायी किरणों के लगातार पड़ने से उस कोशिका का विकास बहुत तेजी से हुआ। लेकिन वह कोशिका विकसित होकर डायनासौर नहीं, बल्कि मानव के रूप में बदल गई। बाकी पृथ्वी पर जो विकास करोड़ों वर्षों में होता, उतना उस कोशिका में सिर्फ कुछ लाख वर्षों में ही हो गया।
लेकिन विकास की यह रफ्तार यहीं पर नहीं थमी-

यह मानव भी और विकसित होता गया-
उसका शरीर छोटा होता गया और उसका मस्तिष्क बड़ा और शक्तिशाली-
और आखिरकार वह बन गया- महामानव।

कहानी 19वें पृष्ठ से जारी

उनका कहना है कि चूंकि वह मिसाइल बेस अमेरिकन है, इसलिए उन आतंकवादियों को रोकना भी अमरीकी सरकार का काम है।

अगर वे मिसाइलें आतंकवादियों द्वारा भी छोड़ी गईं तो भी रूस दोषी अमेरिका को ही मानेगा और फिर वह भी अमरीका पर हमला करेगा। इससे विश्व युद्ध की शुरुआत होनी पक्की है।

उन मिसाइलों का कंट्रोल तो यहां पर भी होगा क्या हम उन मिसाइलों को यहीं से बैठे-बैठे रोक नहीं सकते हैं?

उन मिसाइलों का कंट्रोल यहां के अलावा मिसाइल बेस पर भी है सर! और मिसाइलें दोनों ही जगह से छोड़ी जा सकती हैं।

ओह माई गॉड! मैं कुछ उपाय सोचता हूं, तब तक उस इलाके की सभी बैटलशिपों को घटनास्थल पर पहुंचने का आदेश दे दो।
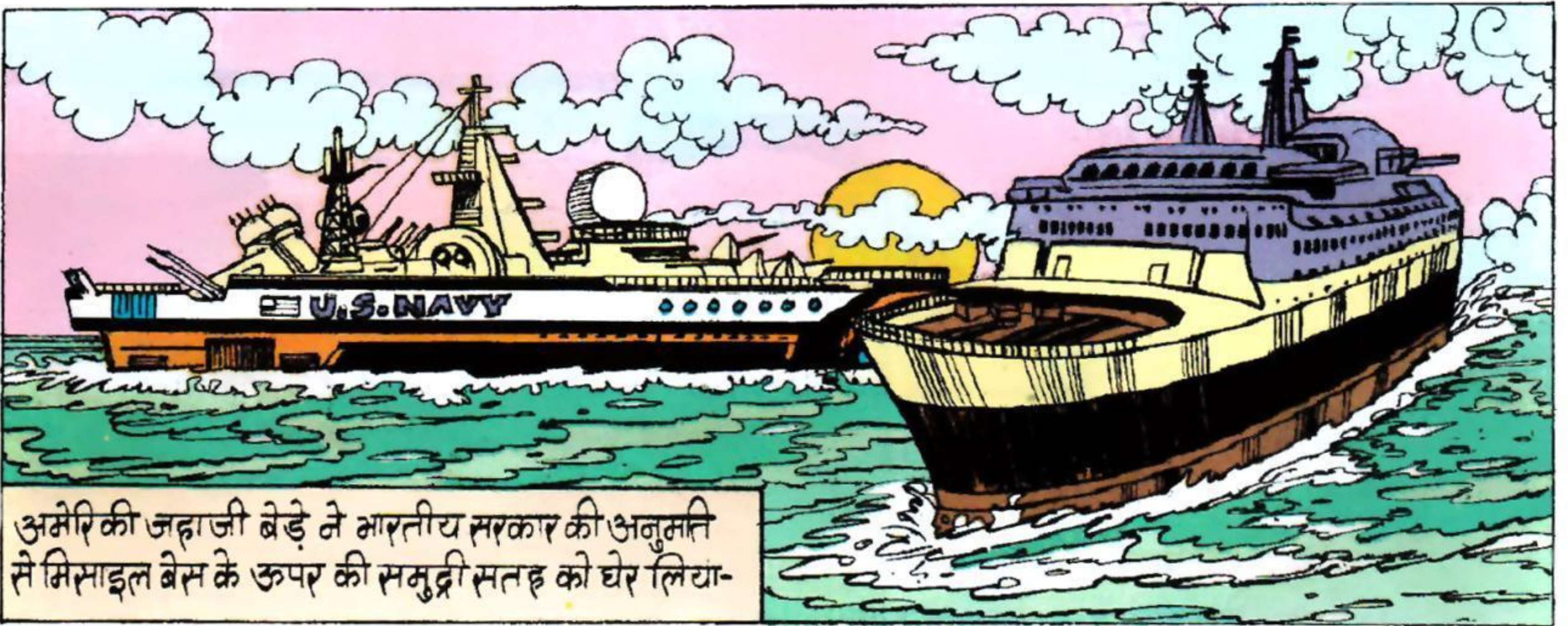
U.S.NAVY
अमेरिकी जहाजी बेड़े ने भारतीय सरकार की अनुमति से मिसाइल बेस के ऊपर की समुद्री सतह को घेर लिया-
और इसने समुद्र के अन्दर पहले से ही पनप रहे तनाव को और भी बढ़ा दिया-
जहाजी बेड़े ऊपर आ गए हैं अहमद!
आने दो! लेकिन नजर रखो उन पर! अगर उन्होंने जरा सी भी गलत हरकत की तो मैं तुरन्त मिसाइलों को दाग दूंगा!
स्वर्ण नगरी में बैठे लोग, आतंकवादियों के इरादे से अन्जान नहीं थे-
हमारे पास ऐसे हथियार जरूर हैं, जो पूरे प्रक्षेपास्त्र अड्डे को तबाह कर सकते हैं।
लेकिन उन पर हमला करने का अर्थ है, प्रक्षेपास्त्रों को यहीं तबाह कर के अपनी तबाही को बुला लेना...
...और फिलहाल वे आतंकवादी इतने सतर्क होंगे कि अड्डे में घुसकर उन पर काबू कर पाना असंभव है। और अगर कहीं कोई चूक हो गई तो वे प्रक्षेपास्त्रों को छोड़ भी सकते हैं।
ऐसा खतरा हम मोल नहीं ले सकते!
आतंकवादियों पर काबू पाने का एक ही रास्ता है। और वह है मिसाइल बेस में घुसकर उन पर काबू पाने का।
अगर किसी तरह से उनका ध्यान सिर्फ एक दो मिनटों के लिए बंटाया जा सकता तो मैं उन पर काबू कर...

...वाह! ध्यान बंटाने का तरीका तो आप लोगों के पास पहले से ही मौजूद है...
...महामानव!
महामानव? वह क्या करेगा?
वह खुद कुछ नहीं करेगा! करना तो प्रसेन को है!
मुझे? मैं क्या कर सकता हूं?
आप महामानव की मानसिक ऊर्जा से अगर विद्युत बना सकते हैं तो उसकी मानस तरंगों से आतंकवादियों के दिमागों को भी कब्जे में कर सकते हैं।
ऐसा प्रयोग महामानव पर मैंने अब तक नहीं किया है!
फिर भी मैं समझता हूं कि मैं कोशिश कर सकता हूं। लेकिन यहां पर बैठे-बैठे नहीं। इसके लिए मुझे महामानव को लेकर प्रक्षेपास्त्र अड्डे के नजदीक जाना पड़ेगा। और उसके बाद भी मैं आतंकवादियों के मस्तिष्कों को पूरी तरह से काबू में नहीं कर पाऊंगा। सिर्फ उनको कुछ देर के लिए भ्रमित सा कर पाऊंगा।
मेरे लिए इतना समय ही बहुत होगा! अगर आप आतंकवादियों को दो मिनट के लिए भी भ्रमित कर सके तो मैं अपना काम पूरा कर लूंगा...
इतना तो मैं कर ही सकता हूं। चलो धनंजय! एक सवारी का इंतजाम करो!
एक पल रुको, प्रसेन! ध्यान से सुनो ध्रुव! तुम जो कुछ भी करने जा रहे हो, उस पर पृथ्वी का भविष्य निर्भर करता है। तुम सफल हुए तो सब बच जाएंगे। लेकिन अगर तुमसे चूक हुई, तो न तुम बचोगे, न हम!
मैं स्थिति की गंभीरता को बखूबी समझ रहा हूं श्रीमान! पर चिन्ता न करें... पृथ्वी मेरा घर है, और अपने घर की रक्षा करना ध्रुव को अच्छी तरह से आता है!
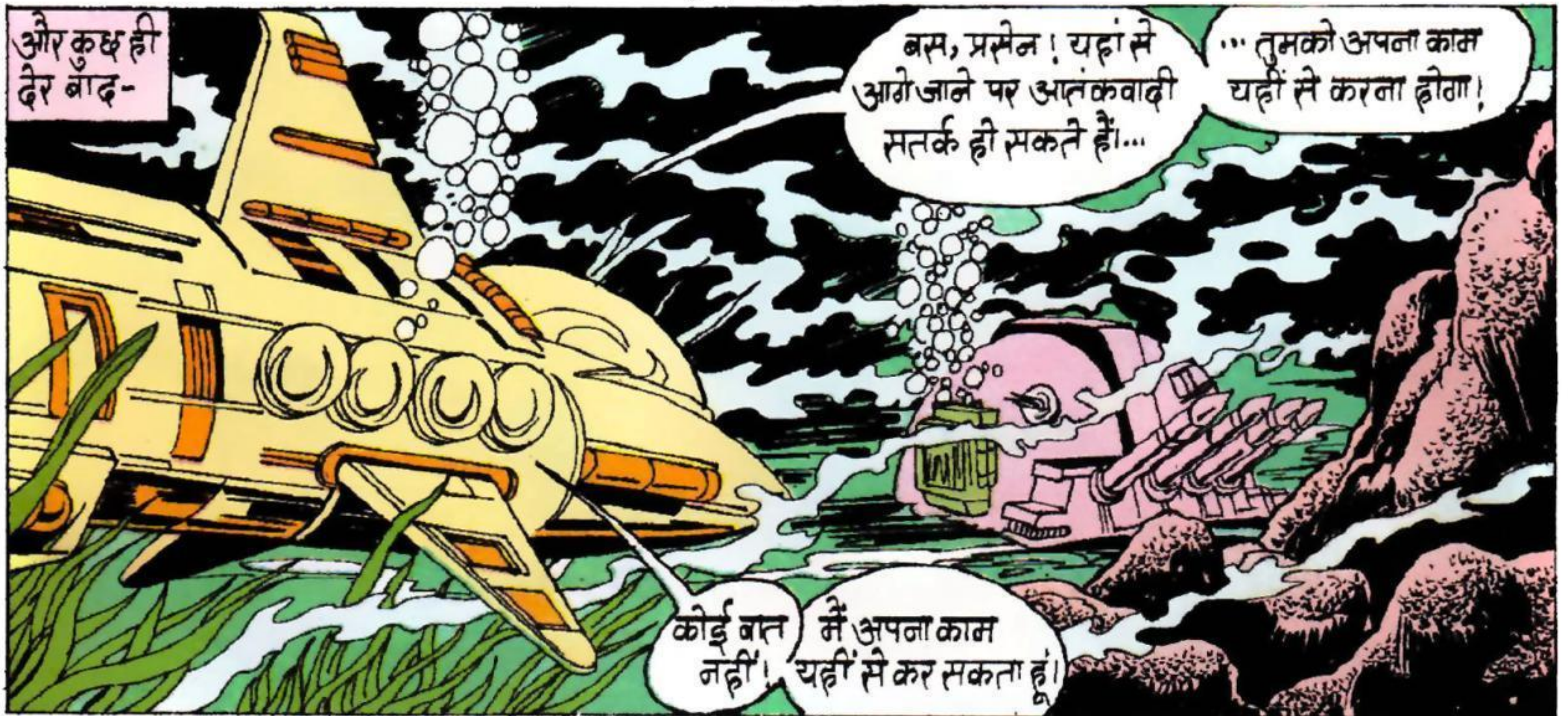
और कुछ ही देर बाद-

बस, प्रसेन! यहां से आगे जाने पर आतंकवादी सतर्क हो सकते हैं...

...तुमको अपना काम यहीं से करना होगा!

कोई बात नहीं!

मैं अपना काम यहीं से कर सकता हूं!

ये देखो, ध्रुव! एक्स और अवरक्त किरणों की मदद से हम प्रक्षेपास्त्र अड्डे की दीवारों के पार भी देख सकते हैं।

इससे तुमको यह पता चल सकता है कि आतंकवादी संख्या में कितने हैं और प्रक्षेपास्त्र अड्डे में कहां-कहां पर तैनात हैं।

ठीक बात है! बेस के अंदर का दृश्य दिखाओ!

और कुछ ही पलों बाद- पृथ्वी के इतिहास का शायद सबसे खतरनाक अभियान शुरू हो गया-

जिसमें जीत और हार का फैसला सिर्फ एक शख्स को ही करना था-

अब मुझे भी अपना काम शुरू कर देना चाहिए। महामानव की मानसिक तरंगों को केन्द्रित करके आतंकवादियों को भ्रमित करने का!
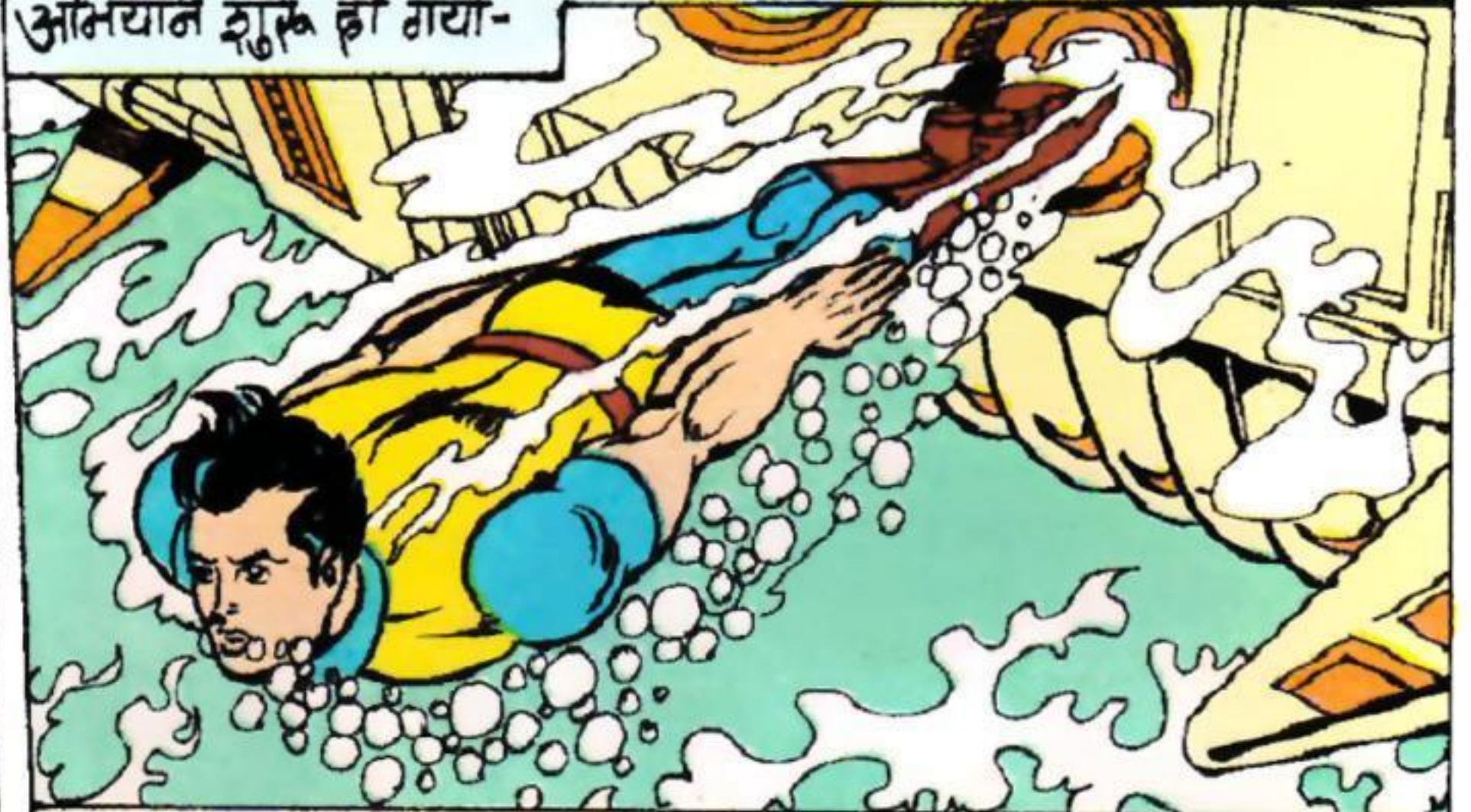
प्रसेन ने महामानव की मानस तरंगों को अपने निशाने पर केन्द्रित किया-

और मिसाइल बेस में तैनात आतंकवादियों के दिमाग, उलझन में पड़ने लगे-
यह... आह! ओह!
क्या कर रहा है अली? स्क्रीन पर नजर रख! अमरीकी जहाज कुछ गड़बड़... अमेरिकी? अमेरिका कहां है?...
मैं कहां हूं? मैं क्या कर रहा हूं!
आतंकवादियों के सोचने-समझने की ताकत गुम हो रही थी-

और यही सही समय था, ध्रुव के मिसाइल बेस में प्रवेश करने का-
एक आतंकवादी इसी प्रवेशद्वार के पास तैनात था!...

... मुझे बहुत संभलकर काम करना होगा। क्योंकि पता नहीं प्रसेन अपने काम में सफल हो पाए हैं या नहीं!
तुम कौन?
इससे पहले कि वह भ्रमित आतंकवादी सोच पाता कि उसे क्या करना है...

... ध्रुव का शिकंजा उसकी सांस की नली पर आ कसा-
और वह शिकंजा तभी खुला, जब उस आतंकवादी का दिमाग बेहोशी की दुनिया में पहुंच गया-

प्रसेन कामयाब तो हुए हैं, लेकिन थोड़ी कमी रह गई है।
ये आतंकवादी भ्रमित तो हुए हैं, लेकिन पूरी तरह से नहीं। मेरे जैसा कोई बाहर का आदमी देखते ही इनका दिमाग वापस जगने लगता है!
यानी मुझे काम बहुत जल्दी पूरा करना है...
...और वह भी चुपचाप!
ये गया नंबर दो! अब बचे हैं सिर्फ दो आतंकवादी!
खट
और वे दोनों एक ही केबिन में साथ-साथ बैठे हुए हैं।...
...खतरा अब शुरू होता है।
कहीं एक ने दूसरे पर हमला होता देख लिया तो उसका दिमाग सतर्क हो सकता है।
इधर ध्रुव महामानव की मानसिक तरंगों की मदद से आतंकवादियों को चुपचाप ठिकाने लगा रहा था-
लेकिन समुद्र की सतह पर, यही मानसिक तरंगें एक महाविनाश को निमंत्रण देने जा रही थीं-
ये मानसिक तरंगें, ये अचानक शक्तिशाली हो रही हैं...
... महामानव इस वक्त समुद्र के नीचे है। मेरे एकदम पास। वाह!

अब मेरी जाति के करोड़ों जीवों का हत्यारा अब मेरे हाथों से बच नहीं सकता।
मानसिक तरंगों का पीछा करती- करती वह आकृति महामानव के पास तक पहुंच गई थी-
आहा! मिल गया महामानव! लेकिन... लेकिन यह क्या? इन स्वर्णमानवों ने इसे मानसिक बन्दी बनाकर रखा हुआ है।
आखिर यह चक्कर क्या है? कुछ करने से पहले मामला समझ लेना चाहिए।...
धनंजय और प्रसेन को इस नए अजनबी के आने का पता नहीं था-
ध्रुव ने दो आतंकवादियों को तो कब्जे में ले लिया है, प्रसेन! लेकिन बाकी दो आतंकवादी अभी भी नियंत्रण-कक्ष में तैनात हैं। अब तुम महामानव की मानसिक तरंगों को इन बचे आतंकवादियों पर केन्द्रित कर दो।
चिन्ता मत करो, धनंजय! मैं इन आतंकवादियों को प्रक्षेपास्त्र दागने नहीं दूंगा। क्योंकि ये प्रक्षेपास्त्र विनाश के साथ- साथ इतनी गर्मी पैदा कर देंगी कि वह इलाका हमेशा के लिए वीरान हो जाएगा।
मामला कुछ- कुछ तो समझ में आ रहा है। यह वक्त है महामानव का इस्तेमाल करके पहले अपना मकसद पूरा करने का। वैसे भी इस रूप में मैं महामानव को खत्म नहीं कर सकता। पर इन मानवों ने महा- मानव के दिमाग को शिथिल करके रखा है...
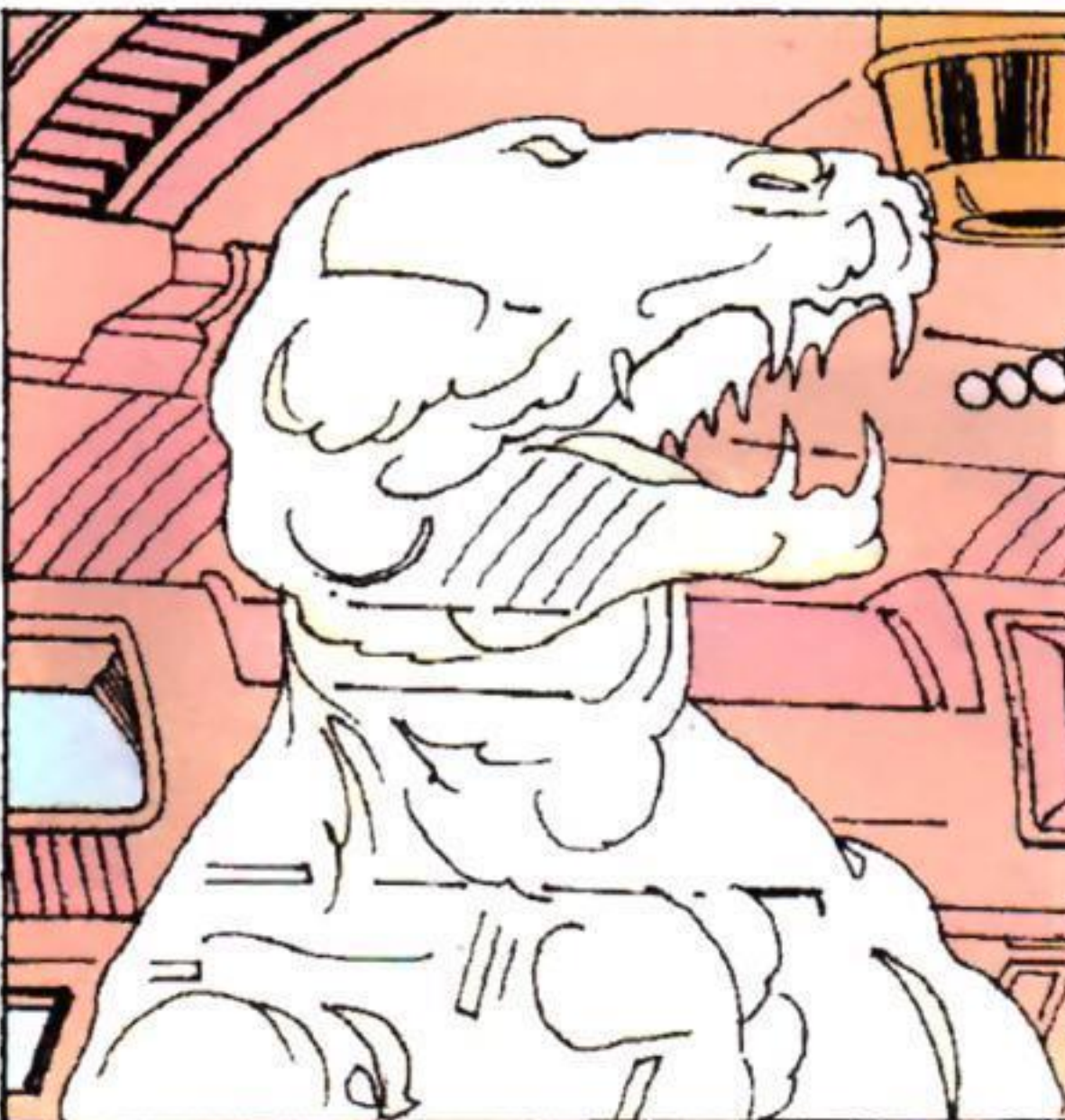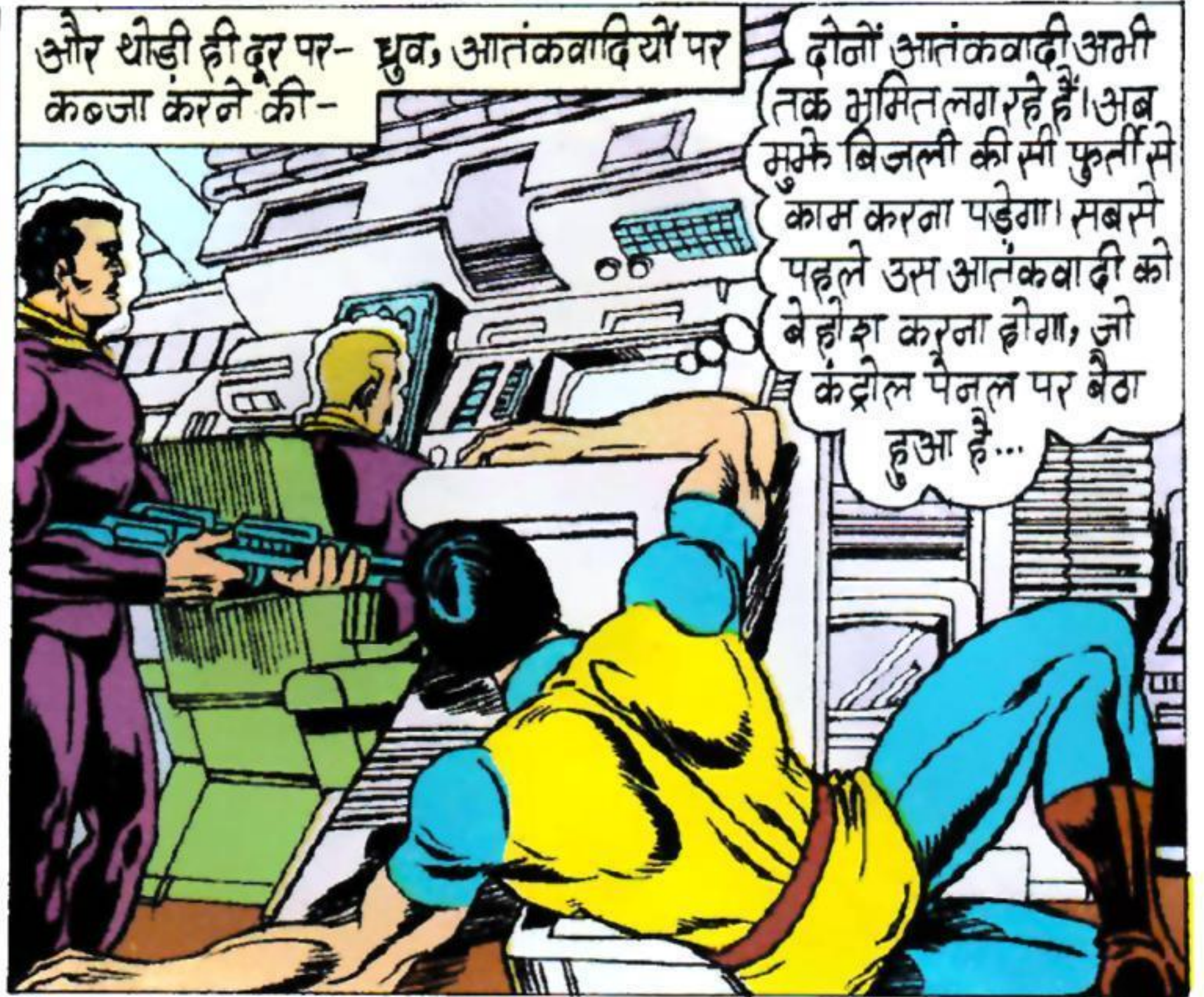
... इस वक्त महामानव के मस्तिष्क को अपने वश में करके अपना मकसद पूरा किया जा सकता है!
वह अंजान आकृति महामानव के दिमाग पर कब्जा करने की योजना बना रही थी-

और थोड़ी ही दूर पर- ध्रुव, आतंकवादियों पर कब्जा करने की-
दोनों आतंकवादी अभी तक भ्रमित लग रहे हैं। अब मुझे बिजली की सी फुर्ती से काम करना पड़ेगा। सबसे पहले उस आतंकवादी को बेहोश करना होगा, जो कंट्रोल पैनल पर बैठा हुआ है...
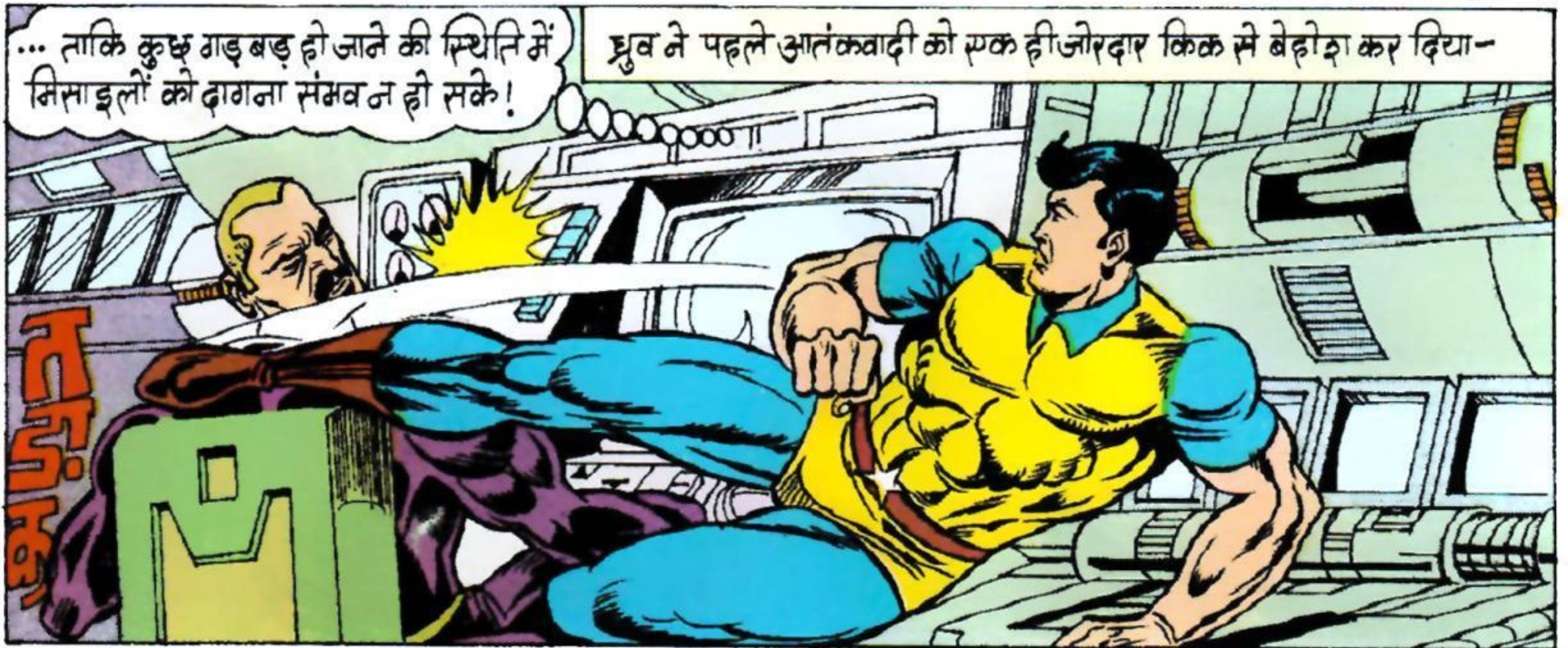
... ताकि कुछ गड़बड़ हो जाने की स्थिति में मिसाइलों को दागना संभव न हो सके!
ध्रुव ने पहले आतंकवादी को एक ही जोरदार किक से बेहोश कर दिया-
तड़ाक

और उस सेकंड के बीतने से पहले ही वह आखिरी आतंकवादी की तरफ घूम चुका था-
यह थोड़ा सतर्क तो जरूर हुआ है, लेकिन इतना नहीं कि मेरा मुकाबला कर सके।
ध्रुव, अहमद की तरफ लपका-

और उसी पल- स्वर्ण पनडुब्बी में मौजूद अजनबी आकृति ने महामानव के दिमाग को अपने कब्जे में लेना शुरू कर दिया-
और महामानव की मानसिक तरंगों का संपर्क मिसाइल बेस से टूटने लगा-

और मिसाइल बेस में आखिरी बचे आतंकवादी अहमद के दिमाग पर से मानसिक तरंगों का प्रभाव छंटने लगा-
तू! तू कौन है? मिसाइल बेस में कैसे घुस आया?
धोखा! मेरे साथ धोखा हुआ है। अब न तू बचेगा और न ही ये दुनिया।
अहमद सब-कुछ तबाह कर देगा।
तड़
तड़.
तड़.
तड़.
अरे! ये एकाएक होश में कैसे आ गया? प्रसेन ने जरूर कुछ गड़बड़ कर दी है।
अब एक ही तरीका बचता है! मुझे इसको मिसाइल छोड़ने वाला बटन दबाने से पहले काबू में कर लेना होगा!
ध्रुव ने कोशिश तो भरपूर की थी...
तड़ाक
... लेकिन अहमद के सिर पर जुनून सवार था। शरीर की पहुंचती चोटें उसको और भी खूंखार बना दे रही थीं-
धड़ाक
अब मैं तुझे मारने में अपना समय खराब नहीं करूंगा...
... पहले मैं अपना ऑपरेशन पूरा करूंगा। 'न्यूक्लियर मिसाइलें' लांच करने का।
और उसके बाद चाहे मैं तुझे मार डालूं या तू मुझे मार डाले, उससे कोई फर्क नहीं पड़ेगा।
ACTIVE
ध्रुव ने आज तक किसी की जान नहीं ली है अहमद!...
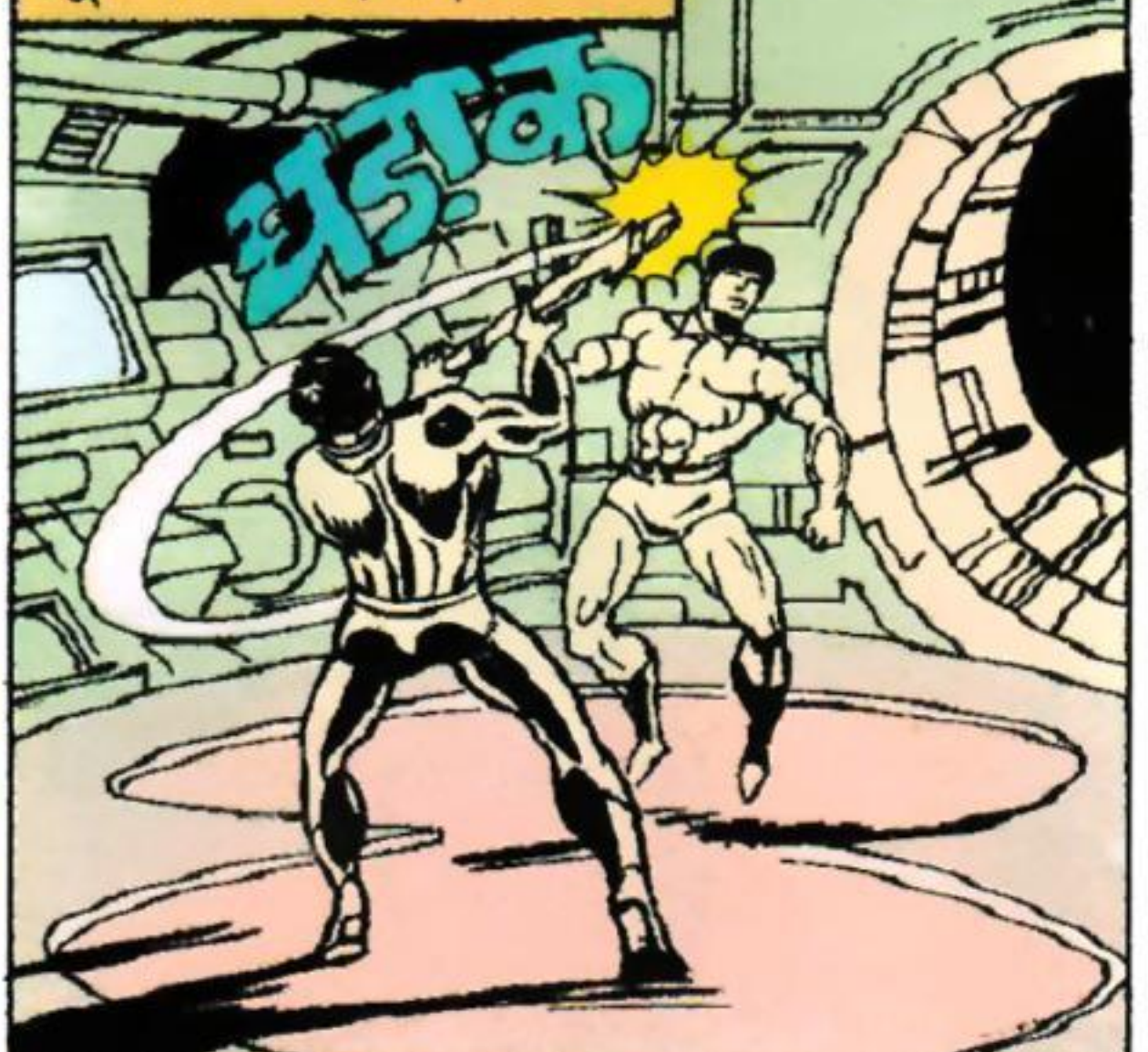
... लेकिन अगर आज मुझे तुम्हारी जान लेनी भी पड़े तो भी मुझे अपने उसूल के टूटने पर कोई दुःख नहीं होगा।
अहमद का हाथ, उस विनाशकारी बटन के काफी नजदीक पहुंच चुका था-
ध्रुव, समय रहते उसको रोकने के लिए वहां तक नहीं पहुंच सकता था-
लेकिन जो अहमद तक पहुंच सकता था...
... वह था ध्रुव का स्टार ब्लेड-
बटन की तरफ उठी उंगली कटकर दूर जा गिरी-
ईयाआ
खचाक
अहमद दर्द से चिल्ला उठा-
और उसी पल ध्रुव ने उसको दर्द से छुटकारा दिला दिया-
तड़ाक
यह बीच में क्या गड़बड़ हुई थी? प्रसेन का बनाया हुआ मानसिक नियंत्रण एकाएक खत्म कैसे हो गया था?
खैर! ये थोड़ी देर में खुद प्रसेन से ही पूछ लूंगा। फिलहाल तो इन कीड़ों को सही हाथों के हवाले कर दिया जाए।
और फिर सतह पर-
आतंकवादियों की तरफ से कोई खबर आई?
नो सर! लेकिन सतह पर बुलबुले फूट रहे हैं। कुछ ऊपर आ रहा है?

कुछ ही पलों बाद- ऊपर आने वाली चीज साफ नजर आने लगी थी-

ये... ये... ये तो... ... ये तो...

ये आतंकवादी हैं कैप्टेन! मैंने इनको कब्जे में कर लिया है। अब कोई खतरा नहीं है!

और फिर-आपस में परिचय होने के बाद-

तुमने तो कमाल कर दिया ध्रुव! ऐसा खतरनाक अभियान तो शायद 'यू.एस. मैरीन' भी पूरा न कर पाते।

तारीफ के लिए शुक्रिया सर! लेकिन अगर ये मिसाइलें छूट जातीं तो फिर आप लोग क्या करते?

अभी हम इसी पर माथापच्ची कर रहे थे। आओ दिखाता हूं।

N. MISSILE LAY OUT

ये देखो! मिसाइल के सारे कंट्रोल इस पैनल के अंदर रहते हैं। हर मिसाइल के अंदर एक 'फिक्स टारगेट' की फोटो और उसके रास्ते के बारे में जानकारी भरी होती है।

लेकिन इस विस्फोट से आजाद हो गया था...

... महामानव-

आहा! महामानव आजाद हो गया। अब मैं इन कीड़ों को दिखाऊंगा कि महामानव से मैं क्या करवा सकता हूं।

और सिर्फ दो सेकंड के बाद-

ओ माई गॉड! ओ माई गॉड! ये मिसाइलें कैसे छूट गईं!

ये तो अनर्थ हो गया। इनको रोको!

अब इनको रोक पाना लगभग असंभव है ध्रुव!
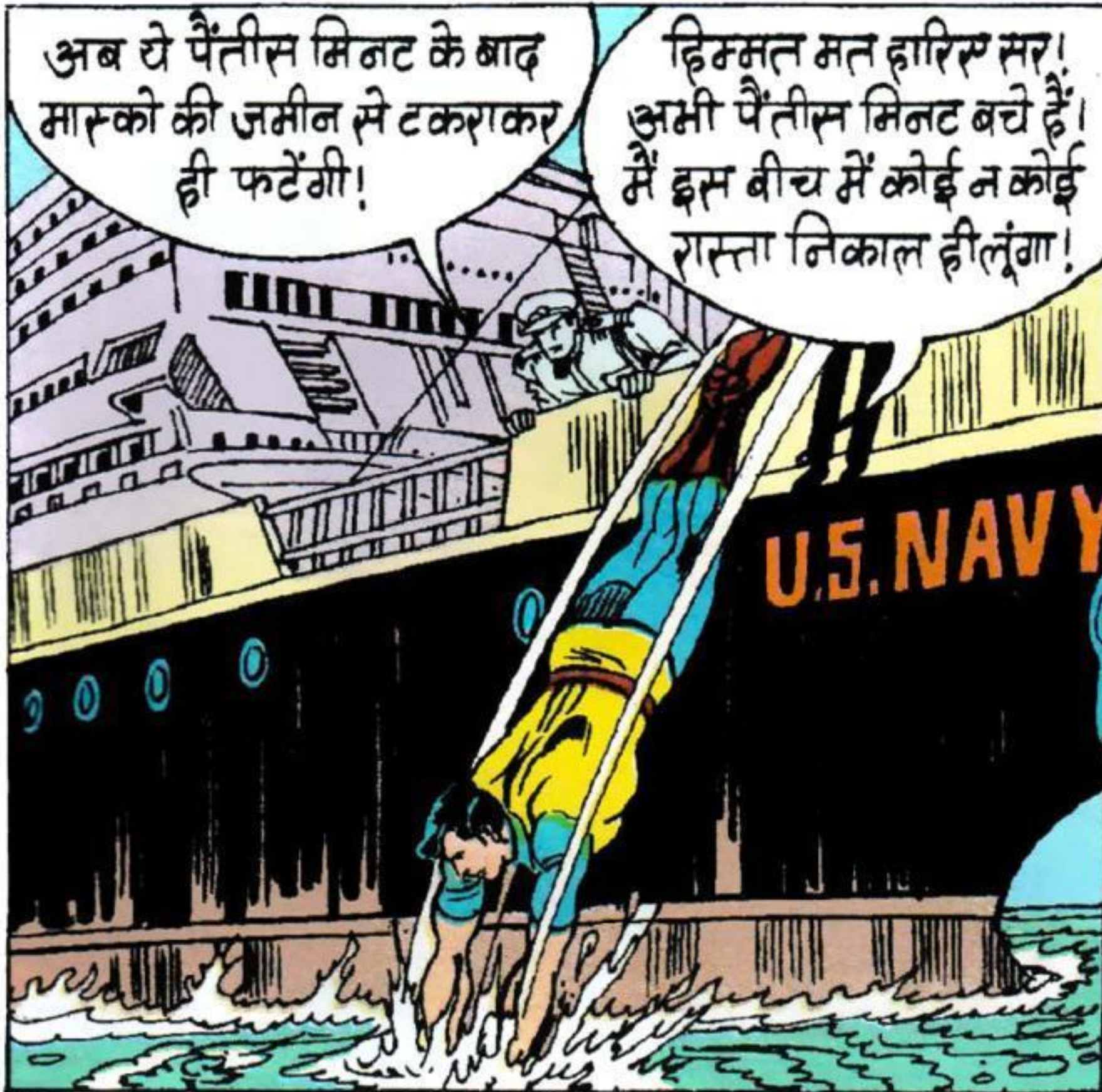
अब ये पैंतीस मिनट के बाद मास्को की जमीन से टकराकर ही फटेंगी!
हिम्मत मत हारिए सर! अभी पैंतीस मिनट बचे हैं। मैं इस बीच में कोई न कोई रास्ता निकाल ही लूंगा!
U.S.NAVY
कुछ ही देर बाद ध्रुव, धनंजय और प्रसेन के साथ स्वर्णनगरी में खड़ा था–
फिर न जाने कैसे महामानव आजाद हो गया। और उसने अपनी मानसिक शक्ति से प्रक्षेपास्त्रों को दाग दिया!
ओह! अब हमारे सामने दो खतरे हैं। बड़ा खतरा महामानव और छोटा खतरा मिसाइलें हैं। लेकिन पहले मिसाइलों को रोकना होगा।
तुम लोगों के पास तेज गति से चलने वाले वायुयान हैं या नहीं!
हैं! जिनको तुम लोग उड़न तश्तरी कहते हो! लेकिन उनका प्रयोग हम ज्यादा नहीं करते!
कोई बात नहीं! अब तुम फटाफट दो काम करो। एक तो मुझे एक स्वर्ण पोशाक दो, जो मुझे तेज हवा के घर्षण से बचाए रख सके!
और दूसरे मिसाइलों की सही स्थिति का पता करो। बाकी सब मैं संभाल लूंगा। जल्दी करो!
समय बीतता जा रहा था। मास्को को तबाह करने के लिए बढ़ती मिसाइलें हिमालय श्रृंखला तक पहुंच चुकी थी–
लेकिन उनको रोकने के प्रयास शुरू हो चुके थे–
इस आयामी द्वार से हम मिसाइलों के ठीक बगल में निकल आए हैं। तुम्हारी गणना एकदम सही निकली धनंजय!
अब यान को उस मिसाइल के पास ले चलो! और साथ-साथ उड़ाओ!
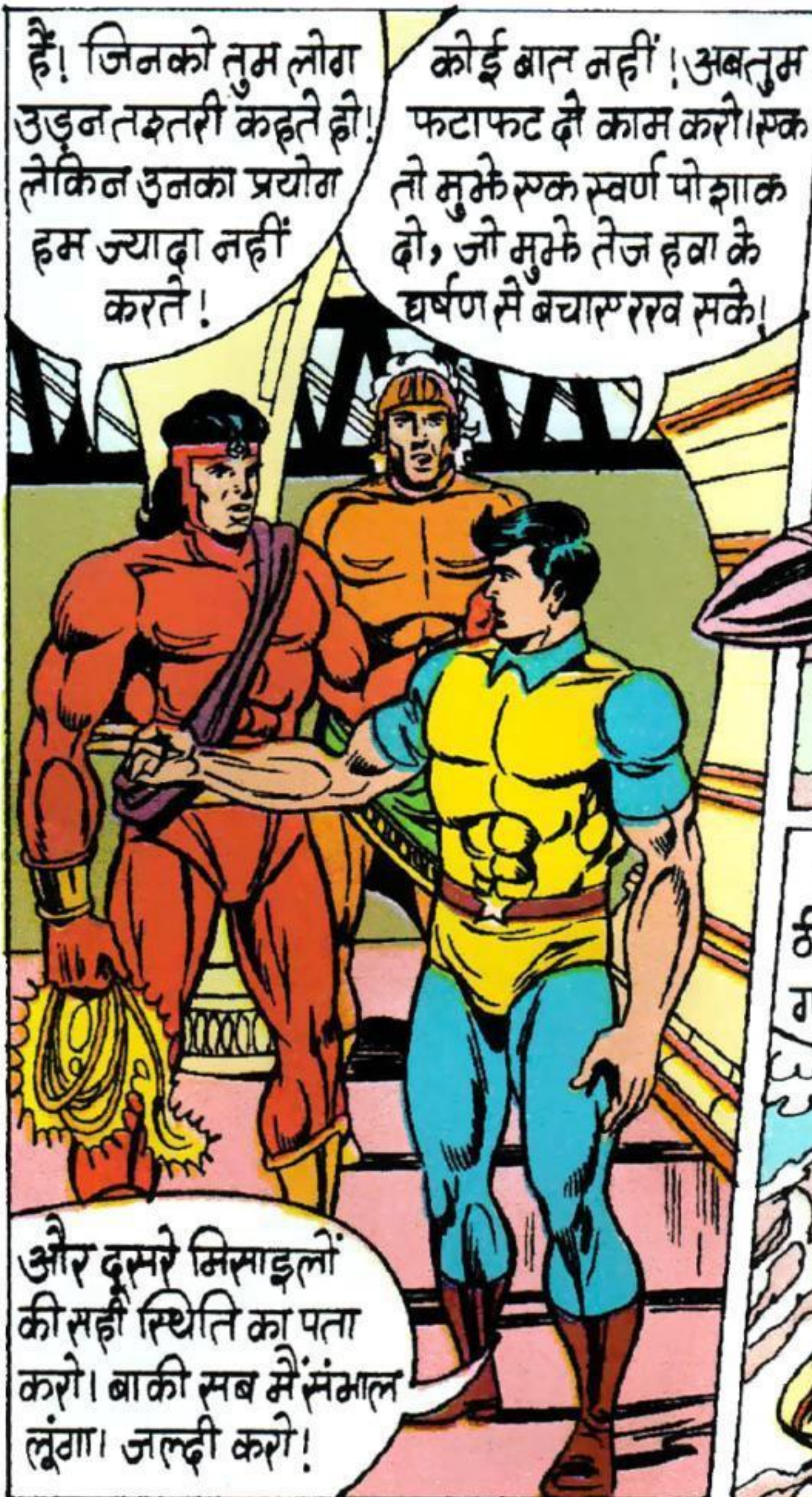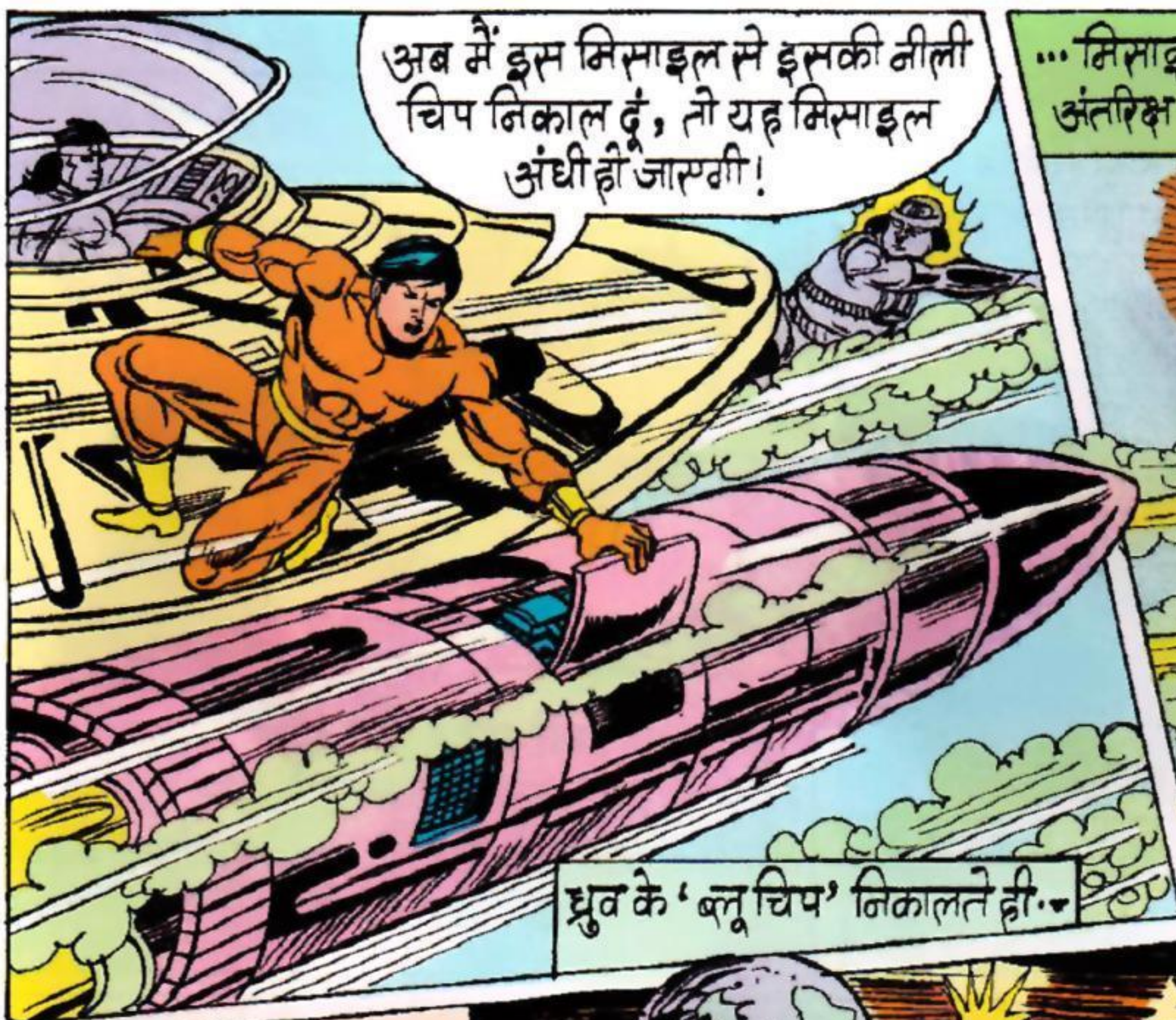
अब मैं इस मिसाइल से इसकी नीली चिप निकाल दूं, तो यह मिसाइल अंधी हो जाएगी!
ध्रुव के 'ब्लू चिप' निकालते ही...
...मिसाइल अपना रास्ता बदलकर अंतरिक्ष की तरफ मुड़ गई–
और एक बेआवाज धमाके के साथ नष्ट हो गई–
यह देखकर महामानव के मस्तिष्क को नियंत्रित कर रही वह रहस्यमय आकृति चिन्तित हो उठी–
यह क्या? महामानव से ये मिसाइलें तो मैंने इसलिए छुड़वाई थीं ताकि ये आणविक मिसाइलें फटकर पृथ्वी के वातावरण को गर्म कर दें और मेरा शरीर होश में आ जाए!
लेकिन ये दोनों मानव मेरी योजना में रुकावट डाल रहे हैं। महामानव को आदेश देकर इनको भी नष्ट करना पड़ेगा!
और अगले ही पल - महामानव की एक घातक मानस तरंग ने उड़न तश्तरी के भी परखच्चे उड़ा दिए–
ओह, नहीं! कूदो, ध्रुव!
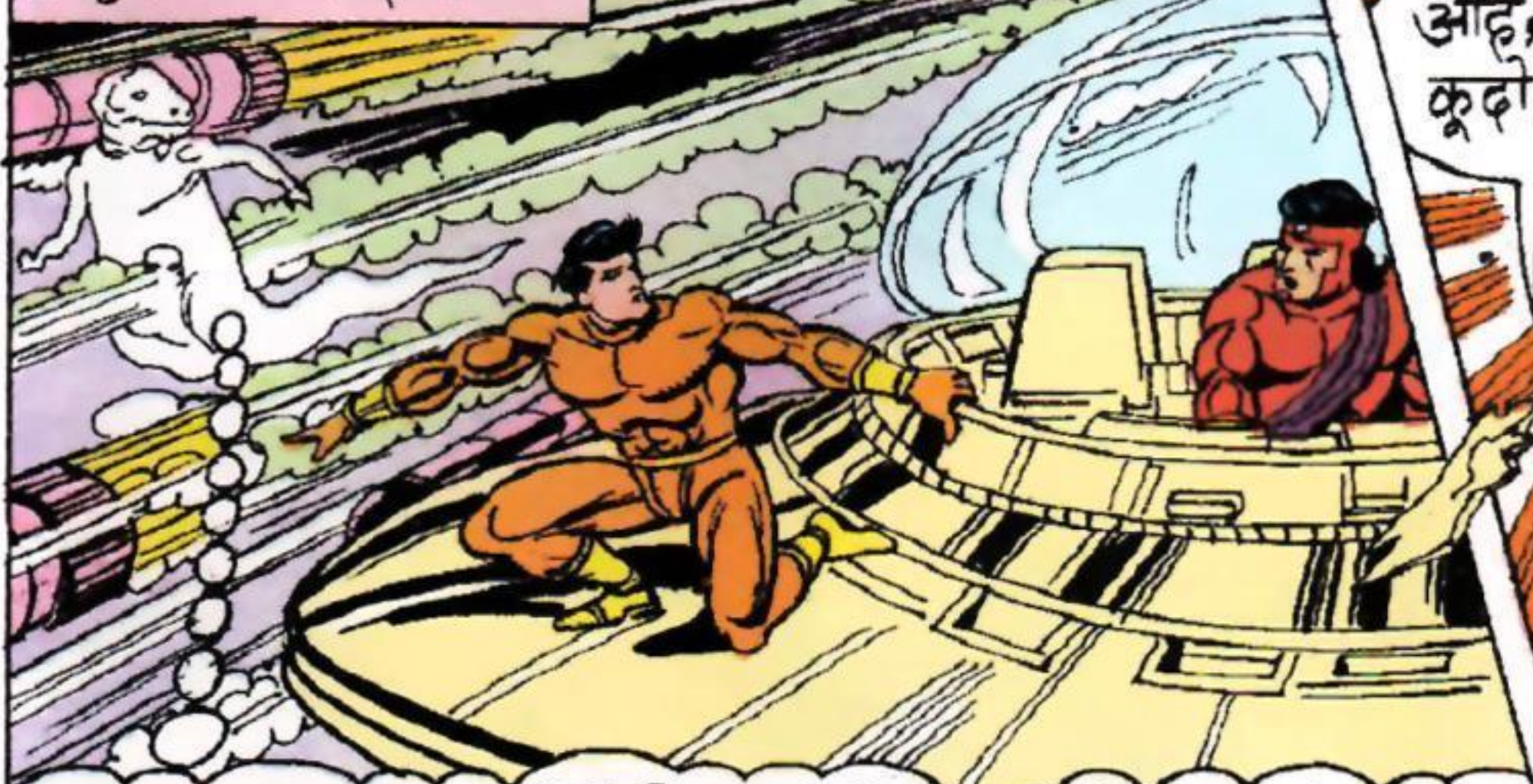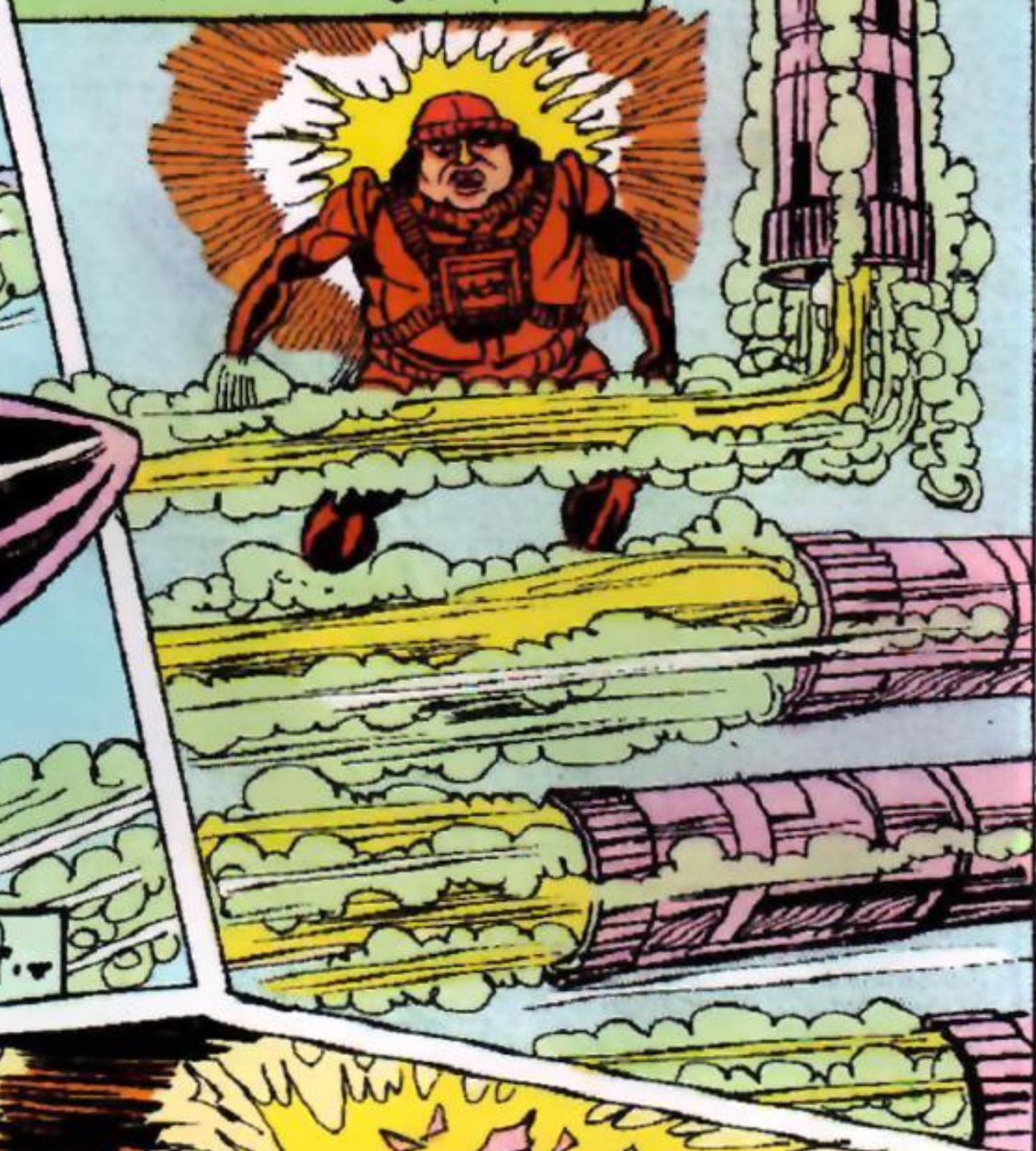
स्वर्ण पोशाक ने ध्रुव और धनंजय की हड्डियों को टूटने से बचा लिया-
ओह! महामानव ने हमको बेबस कर दिया है। अब हम प्रक्षेपास्त्रों को रोक नहीं सकते।
रोक सकते हैं धनंजय! अगर तुम इन मिसाइलों के रास्ते पर एक ऐसा आयामी द्वार बना दो जिसके दूसरी तरफ अंतरिक्ष हो, तो मिसाइलें अंतरिक्ष में चली जाएंगी!
मैंने ऐसा करिश्मा पहले कभी नहीं किया ध्रुव! इतनी दूर पर आयामी द्वार बना पाना आसान काम नहीं है। मुझे अपनी शक्ति के हर कतरे का इस्तेमाल करना पड़ेगा!
फिर भी मैं हार नहीं मानूंगा। क्योंकि सिर्फ यही एक तरीका है जो पृथ्वी को विनाश से बचा सकता है!
धनंजय ने अपनी पूरी इच्छाशक्ति को एकत्रित कर लिया। चेहरे से पसीने की धारें फूट पड़ीं-
लेकिन बाकी दुनिया भी चुपचाप नहीं बैठी थी-
मास्को में-
मिसाइलें अब हमसे सिर्फ तेरह मिनट की दूरी पर हैं, राष्ट्रपति जी!
तो फिर अब हम भी हाथ पर हाथ धरे बैठे नहीं रह सकते!
तुरन्त उन मिसाइलों को रोकने के लिए 'इंटरसेप्टिंग' मिसाइलें भेजो, जो उनको हवा में ही खत्म कर दें।
हम उन मिसाइलों को रूस की धरती से टकराने नहीं देंगे!
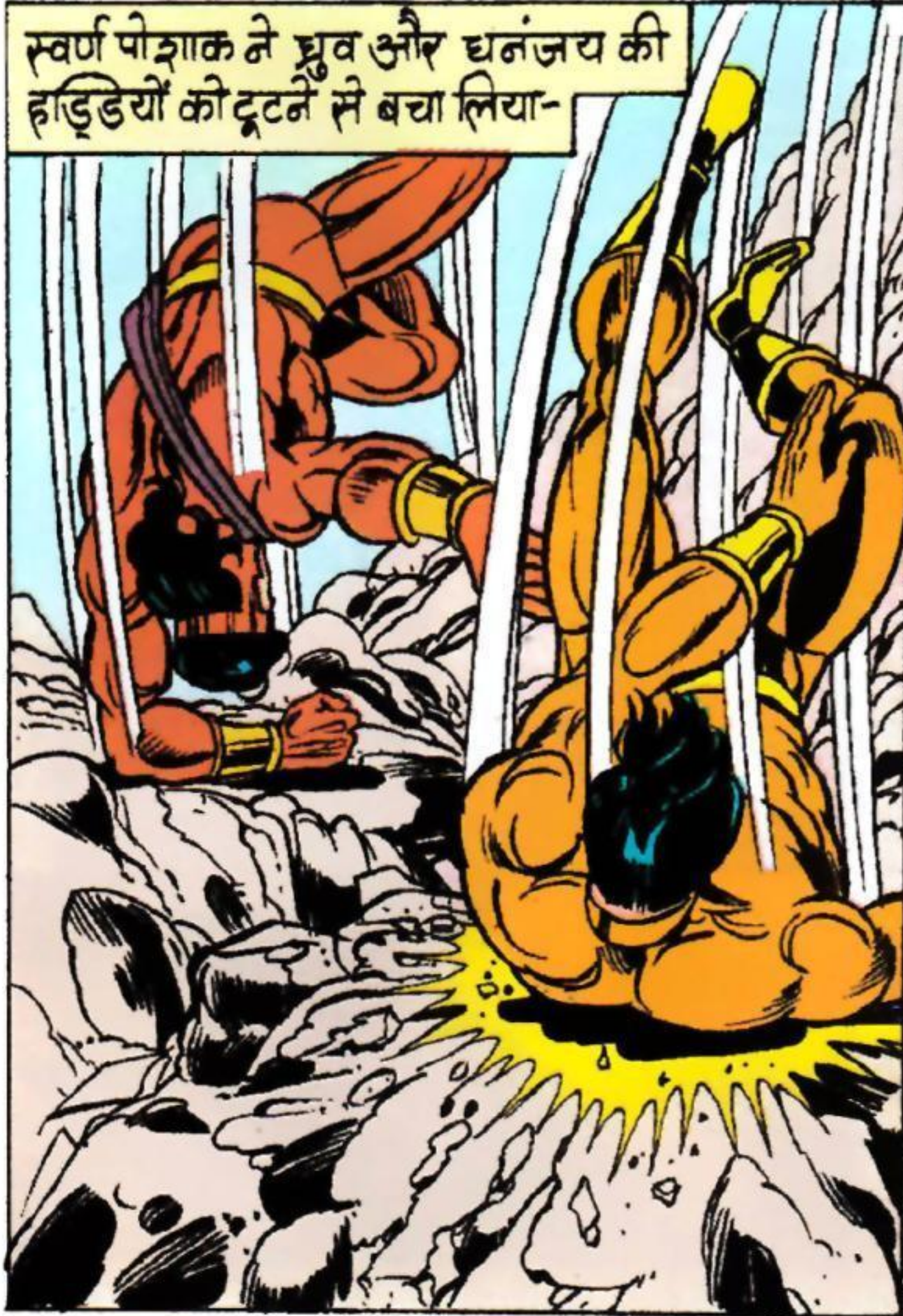
उधर धनंजय, मिसाइलों के रास्ते पर आयामी द्वार बनाने में जी-जान लड़ा रहा था-

जल्दी करो धनंजय! ये मिसाइलें तो और दूर होती जा रही हैं! जल्दी!
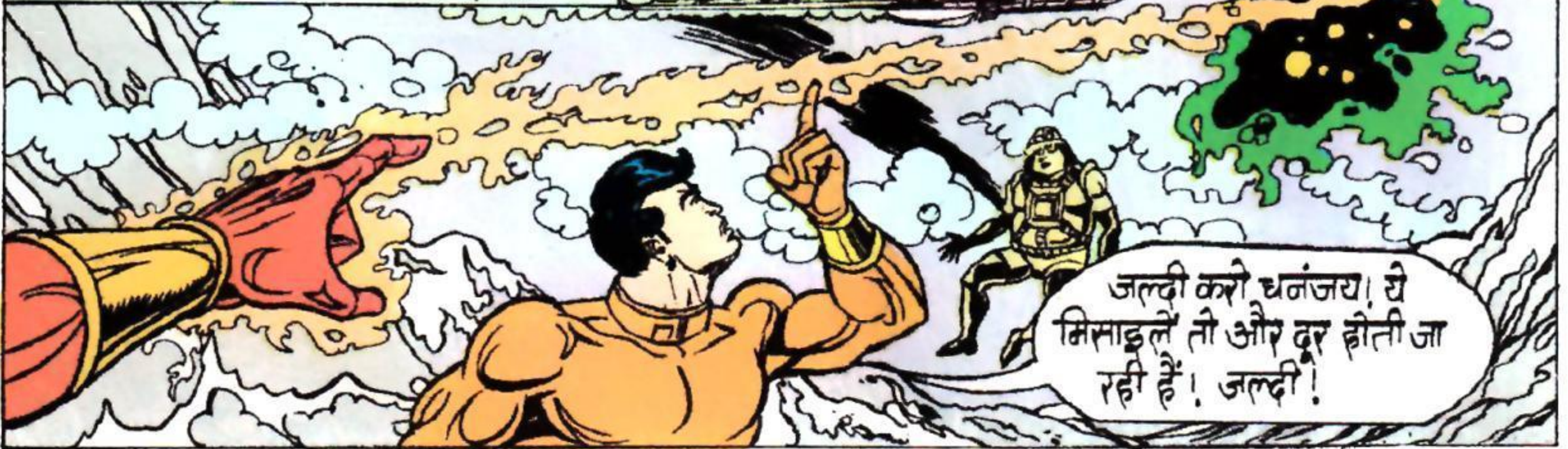
मैं आयामी द्वार को और बड़ा बनाने की कोशिश कर रहा हूं। ताकि इसमें से तीनों बचे प्रक्षेपास्त्र एक साथ गुजर जाएं।

लेकिन समय रहते द्वार इतना बड़ा नहीं बन सका-

दो मिसाइलें तो आयामी द्वार को पार करती हुई अंतरिक्ष में जा पहुंची-

पर एक मिसाइल आयामी द्वार की नजर-अन्दाज करती हुई उसके बगल से गुजर गई-

नजरें घुमाते ही ध्रुव और धनंजय के शरीर थरथरा उठे-
कुछ ही दूरी पर एक 'इंटरसेप्टिंग मिसाइल' आणविक मिसाइल को नष्ट करने के लिए आगे बढ़ रही थी-
ओह! अगर ये दोनों मिसाइलें आपस में टकरा गईं तो यह जगह नर्क का प्रतिरूप बन जाएगी। कुछ करो धनंजय!
मैं आयामी द्वार बनाने में अपनी बहुत ऊर्जा खर्च कर चुका हूं ध्रुव! अब इन प्रक्षेपास्त्रों को रोकना तो दूर, मैं बच निकलने के लिए आयामी द्वार तक नहीं बना पा रहा हूं!...
बहुत अच्छा! तब तो मैं इन मिसाइलों को हवा में टकराकर बेकार नहीं होने दूंगा!...
...ज्यादा अच्छा होगा कि ये मिसाइलें तुम दोनों के शरीरों से टकराकर फटें!
?
हा हा हा! अब ये मिसाइलें फटकर पृथ्वी का तापमान बढ़ाएंगी!
महामानव की मानसिक शक्ति के शिकंजों ने मिसाइलों का रुख धनंजय और ध्रुव की तरफ मोड़ दिया-
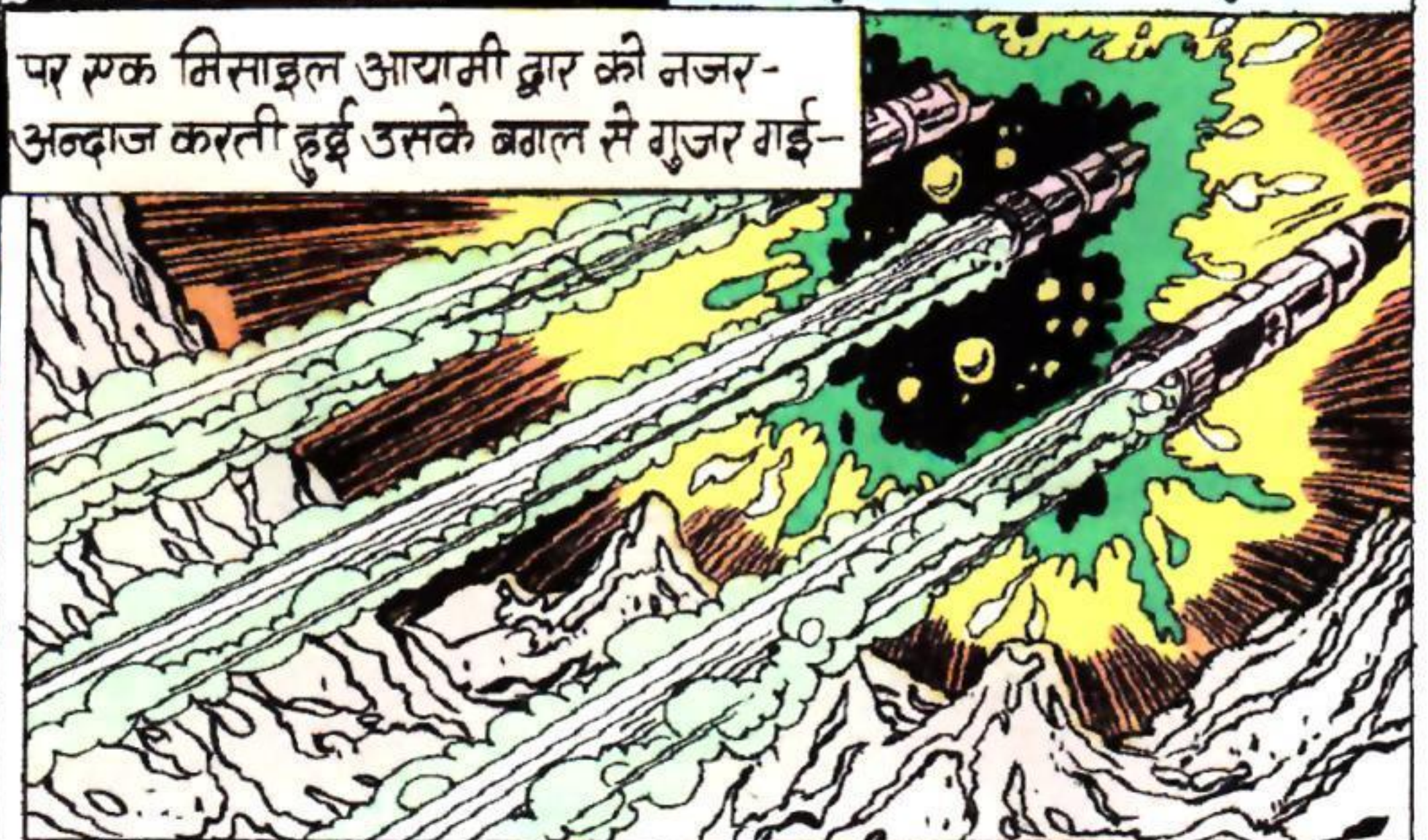
★ निंजा किरीगी के बारे में विस्तार से जानने के लिए पढ़ें 'किरीगी का कहर'

... क्योंकि उस स्थिति में ये प्रक्षेपास्त्र यहां फटकर वातावरण को दूषित करने के साथ-साथ तुम्हारी जान भी ले लेते। और ध्रुव की जान जाए, यह निंजा किरीगी को मंजूर नहीं।
अगर तुझे इस लड़के की जान को बचाने का इतना ही शौक है तो इसके साथ-साथ तुझे अपनी भी जान मुझे देनी होगी निंजा!
महामानव की मानसिक ऊर्जा ने मिसाइलों को धकेलना शुरू कर दिया-
और किरीगी की यौगिक ऊर्जा ने मिसाइलों को रोकना-
दोनों ऊर्जा के टकराव से वातावरण में चिंगारियां उड़ने लगीं-

और महामानव के मस्तिष्क को नियंत्रित कर रही उस अजनबी आकृति को अपने मानस रूप में एक नई शक्ति का संचार होता हुआ महसूस होने लगा-
वाह! इन दोनों के टकराव से जो ऊर्जा वातावरण में बिखर रही है, मेरा मानस रूप उसको सोख-सोखकर जमीन के नीचे दबे मेरे शरीर तक मानस तरंगों के जरिए पहुंचा रहा है। अब मुझे मिसाइलों को फटवाकर वातावरण को गर्म करने की जरूरत नहीं है।

अब मैं महामानव के जरिए ऐसी-ऐसी परिस्थितियां पैदा करता रहूंगा कि इन दोनों का टकराव होता रहे।...
...और मैं इन दोनों की शक्तियां सोख-सोखकर फिर से शक्तिशाली बन जाऊं!

लेकिन इस वक्त महामानव की मानसिक शक्ति ज्यादा ताकतवर साबित हो रही है, क्योंकि मिसाइलों की अपनी गति भी उसी दिशा में काम कर रही है...
...मुझे महामानव को मानसिक निर्देश देकर मिसाइलों पर उसकी पकड़ को ढीला करवाना होगा!
उस रहस्यमय आकृति का मानसिक निर्देश पाते ही महामानव का शिकंजा ढीला हो गया-
और किरीगी के यौगिक हाथों ने मिसाइलों को तेज गति से ऊपर हवा में उछाल दिया-
और हवा में ऊपर उठती मिसाइलें सीधे अंतरिक्ष में ही जाकर रुकीं-
जहां वे दो खामोश धमाकों के साथ नष्ट हो गईं-
अब बोलो! तुम ध्रुव को क्यों मारना चाहते थे बौने?
यह महामानव है, किरीगी! भविष्य का मानव!
तू इस लड़के की चिंता कर रहा है मूर्ख! अरे ऐसे मच्छरों को तो महामानव की छींक भी मार सकती है।
मेरी शक्तियां तो इस पृथ्वी से मानवों को ही खत्म कर सकती हैं!
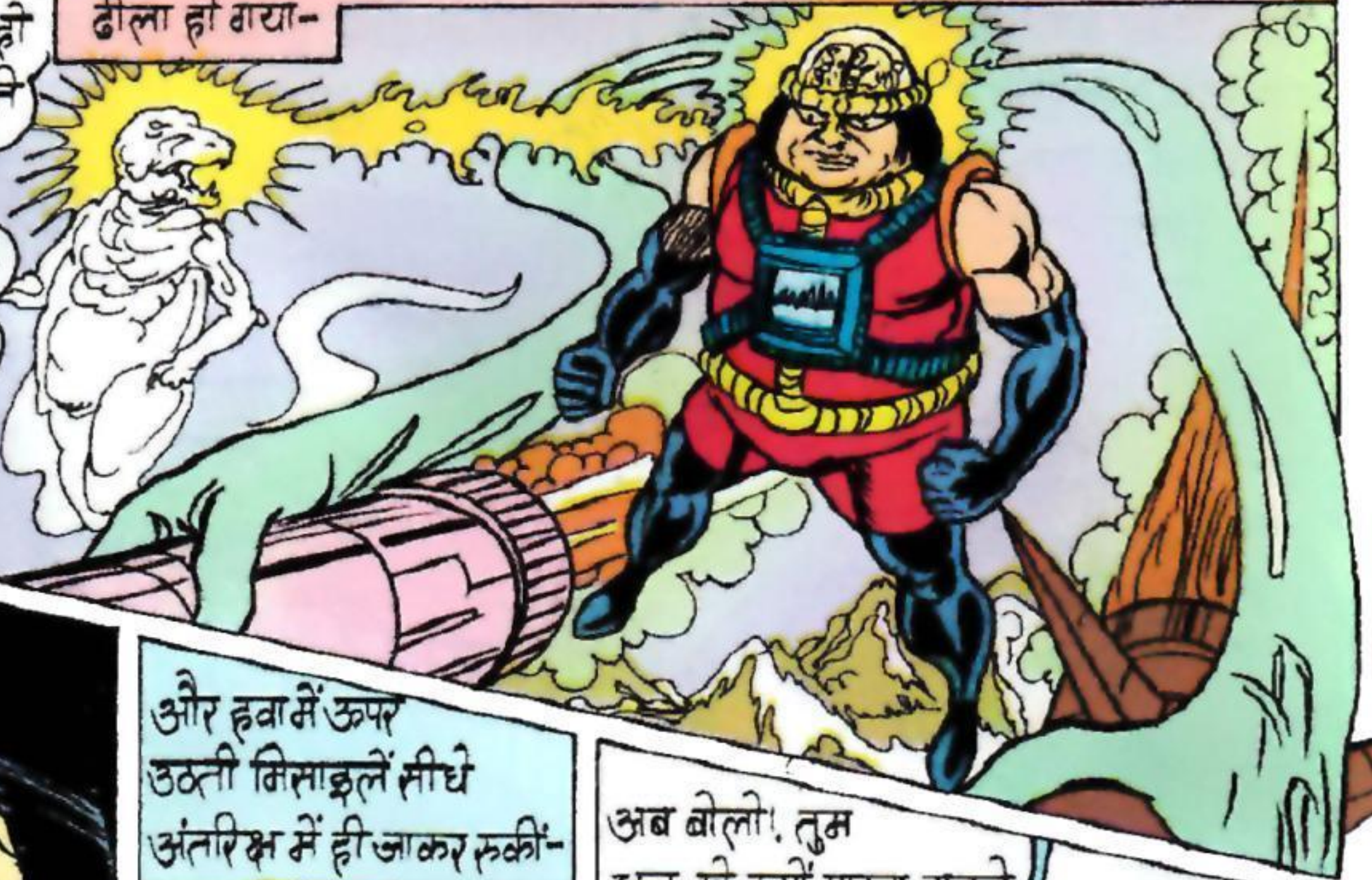
नमूना देखना चाहता है तो देख ले !
महामानव के बन्दी मस्तिष्क ने मानसिक किरणों के जाल को पृथ्वी के पार फैलाना शुरू कर दिया-
और दूर- दूर तक अंतरिक्ष में तैरते चट्टानों के टुकड़े एक दूसरे के नजदीक आकर आपस में जुड़ने लगे-
कुछ ही देर में चट्टानों के टुकड़ों ने मिलकर एक विशालकाय चट्टान का रूप धारण कर लिया-
और यह विनाशकारी चट्टान तेजी से पृथ्वी की तरफ गिरने लगी-
ऊपर देख किरीगी! पृथ्वी की मौत, पृथ्वी की तरफ बढ़ रही है।...
...यह चट्टान पांच सौ किलोमीटर लंबी और इतनी ही चौड़ी है। जब यह पृथ्वी से टकराएगी तो धरती की आधी आबादी कम हो जाएगी।
हे भगवान, मुझे तुरन्त वापस स्वर्ण नगरी जाना होगा ध्रुव...

अब मेरा ऊर्जा स्तर सामान्य हो रहा है। कम से कम मैं स्वर्ण नगरी तक जाने के लिए एक आयामी द्वार तो बना ही सकता हूं!
और स्वर्ण नगरी में हमारे पास ऐसे प्रक्षेपास्त्र जरूर मौजूद होंगे जो इस विशाल उल्का को नष्ट कर सकें!
यह दृश्य गौर से देख रही वह रहस्यमय आकृति चिन्तित हो उठी-
यह स्वर्ण मानव काफी शक्तिशाली है। शायद ये सच-मुच उल्का को नष्ट कर दे!
और उस स्थिति में यौगिक और मानसिक ऊर्जा का टकराव नहीं होगा और न ही मैं ऊर्जा को सोख पाऊंगा। इसको जाने से रोकना होगा।
महामानव को फिर से एक मानसिक संकेत मिला-
और अगले ही पल-
तू न तो कहीं जाएगा, और न ही उल्का को पृथ्वी से टकराने से रोकेगा!
अगर तू कहीं जाएगा तो सिर्फ मुर्दों की दुनिया में।
असावधान धनंजय पर एक घातक वार हुआ-
और फिर वह उठ नहीं सका-
ओह! यह सिर्फ बेहोश हुआ है! स्वर्ण-पोशाक ने इसे मरने से बचा लिया!
लेकिन अब इस उल्का को सिर्फ तुमको ही रोकना होगा किरीगी!
घबराओ मत ध्रुव! यौगिक शक्ति मानसिक शक्ति से ज्यादा शक्तिशाली होती है। क्योंकि यौगिक शक्ति में मानसिक शक्ति के साथ-साथ शारीरिक शक्ति भी मिली होती है।
इसलिए विजय मेरी यौगिक शक्ति की ही होगी!

मैं यौगिक रूप धारण कर रहा हूं !...
मेरी यौगिक शक्ति पहाड़ों के सीने में भी छेद कर सकती है। इसलिए मेरा यौगिक रूप इस चट्टानी उल्का को भी थाम लेगा।
ध्रुव की आंखें उस विलक्षण दृश्य को देखकर फैलती चली गईं-
किरीगी का यौगिक रूप पहाड़ों से भी अधिक विशाल होता जा रहा था-
यौगिक रूप का बढ़ना जारी रहा। पहले हिमालय से बड़ा, फिर महाद्वीप से, फिर सारे महाद्वीपों से और आखिरकार पृथ्वी को भी घेरता हुआ वह रूप अंतरिक्ष में गिरती उल्का तक जा पहुंचा-
इस उल्का को रोकने के लिए मुझे अपनी यौगिक शक्ति का एक-एक कतरा लगाना पड़ रहा है।
क्योंकि एक तो इस उल्का में अपनी ही गति मौजूद है...
... और दूसरे इसको महामानव की मानसिक शक्ति और पृथ्वी की गुरुत्वाकर्षण शक्ति भी नीचे की तरफ खींच रही है...
... लेकिन फिर भी मैं इसे गिरने नहीं दूंगा।
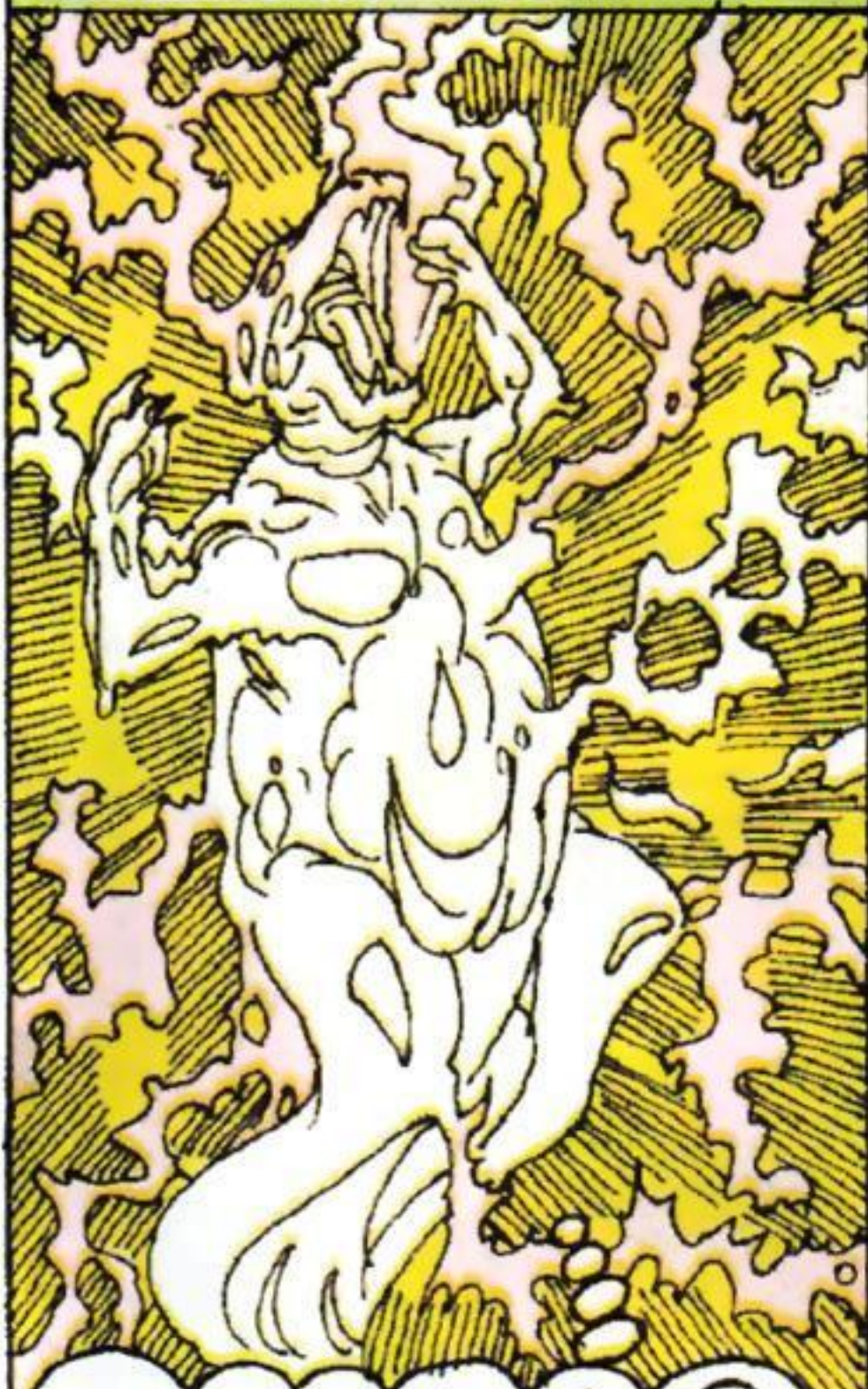
वह रहस्यमय आकृति खुशी से उछलती जा रही थी-
आहा! आहा! इतनी शक्ति! इतनी ऊर्जा! ऐसे दो-तीन टकरावों के बाद तो मैं महाशक्तिशाली हो जाऊंगा।
लेकिन पृथ्वी के मानव भी इस विपदा से निबटने का रास्ता तलाश कर रहे थे-
मिसाइलों की मुसीबत तो रहस्यमयरूप से टल गई थी। फिर ये विशालकाय उल्का अचानक कहां से आ गई?
पता नहीं सर! हमारा 'सेटेलाइट सिस्टम' भी इस पर कोई जानकारी उपलब्ध नहीं करवा पा रहा है।
इस मुसीबत से निबटने का एक ही तरीका है। लांग रेंज न्यूक्लियर मिसाइलें!
सभी देशों को सूचना भेज दो कि अपनी-अपनी मिसाइलें इस उल्का पर दाग दें! तुरंत!
कुछ ही मिनटों बाद-पृथ्वी के अलग-अलग इलाकों से दर्जनों आणविक मिसाइलें विशाल उल्का की तरफ बढ़ चलीं-
और इतने बड़े निशाने पर, वार चूक सकना असंभव था-
अरे! अरे! ये मूर्ख क्या कर रहे हैं! इन शस्त्रों से ये इस उल्का को नष्ट नहीं कर सकते...
...बल्कि इससे तो खतरा और बढ़ जाएगा। इससे ये एक बड़ी उल्का कई छोटी-छोटी उल्काओं में बंट जाएगी। और ये छोटी उल्काएं, पृथ्वी के कई शहर एक साथ नष्ट कर देंगी।
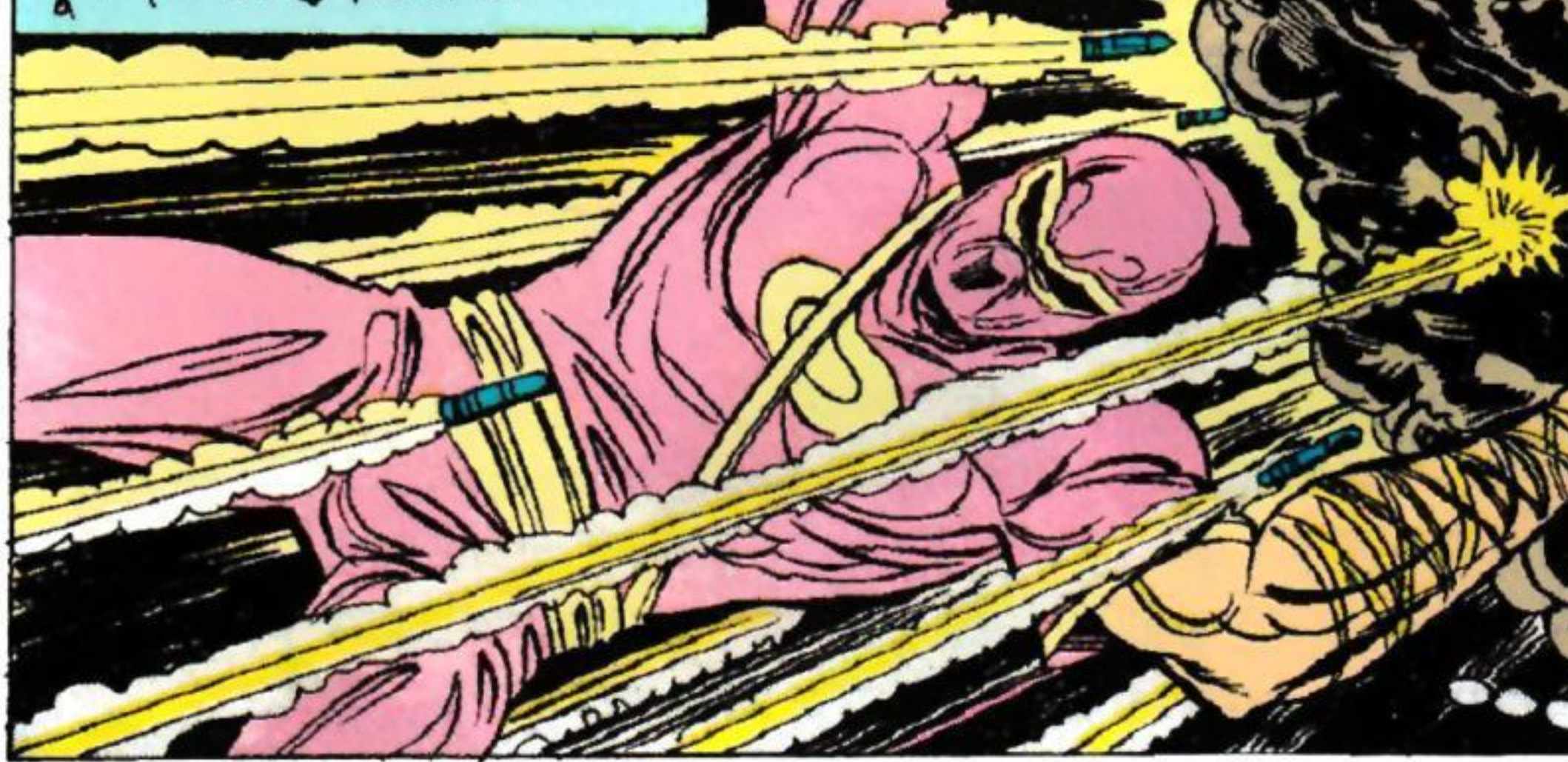
सभी मिसाइलें एक के बाद एक अपने निशाने से टकराकर फटने लगीं, और-
ओफ़! वही हुआ जिसका मुझे डर था! अब मैं इतने सारे टुकड़ों को एक साथ पृथ्वी पर गिरने से रोक नहीं सकता! मुझे यौगिक रूप छोड़ना होगा!
पूरी दुनिया में तुरन्त ही हाहाकार मचने लगा। उल्का के बड़े-बड़े कई टुकड़े पृथ्वी के अलग-अलग कई इलाकों की तरफ गिर रहे थे-
और हिमालय पर-
अब क्या होगा किरीगी?
मानवों ने अपनी मौत खुद ही बुला ली है ध्रुव! अब मैं कुछ भी नहीं कर सकता। महामानव अपने मकसद में कामयाब हो गया लगता है!
नहीं! एक तरीका है! तुम्हारा खड्ग! यह किसी भी चीज को काट सकता है!...
...और इसे तुम्हारी यौगिक ऊर्जा द्वारा दूर से भी संचालित किया जा सकता है!
तुमने ठीक याद दिलाया ध्रुव! मेरा खड्ग उल्का के इन बड़े टुकड़ों को इतने छोटे-छोटे टुकड़ों में काट सकता है कि वे पृथ्वी के वायु मंडल में प्रवेश करते ही वायु के घर्षण से खुद ही जलकर नष्ट हो जाएं!

यौगिक शक्ति द्वारा दूर संचालित खड्ग हवा में ऊपर की तरफ उछलकर...
... कुछ ही मिनटों में अंतरिक्ष में पृथ्वी की तरफ गिरती उल्काओं तक पहुंच गया-
और उनको बिजली से भी तेज गति से ऐसे काटने लगा, जैसे नर्म मांस को तेज छुरी काटती है-
कुछ ही देर में किरीगी के चमत्कारी खड्ग ने कुछ को छोड़कर बाकी सभी उल्काओं के छोटे-छोटे टुकड़े कर दिए थे-
पृथ्वी पर आया खतरा टल रहा था-
लेकिन ध्रुव और किरीगी के लिए खतरा बढ़ रहा था-
किरीगी! एक उल्का ठीक इसी जगह पर गिरने आ रही है!
ओह! लेकिन मैं इस वक्त अपनी यौगिक शक्ति का प्रयोग अपने खड्ग द्वारा, उन उल्काओं को काटने के लिए कर रहा हूं जो किसी भी क्षण, आबादी वाले इलाकों पर गिर सकती हैं।
इस वक्त मैं अपनी यौगिक शक्ति का इस्तेमाल इस उल्का को रोकने के लिए नहीं कर सकता!
तो फिर हम सब मारे जाएंगे किरीगी! एक साथ!
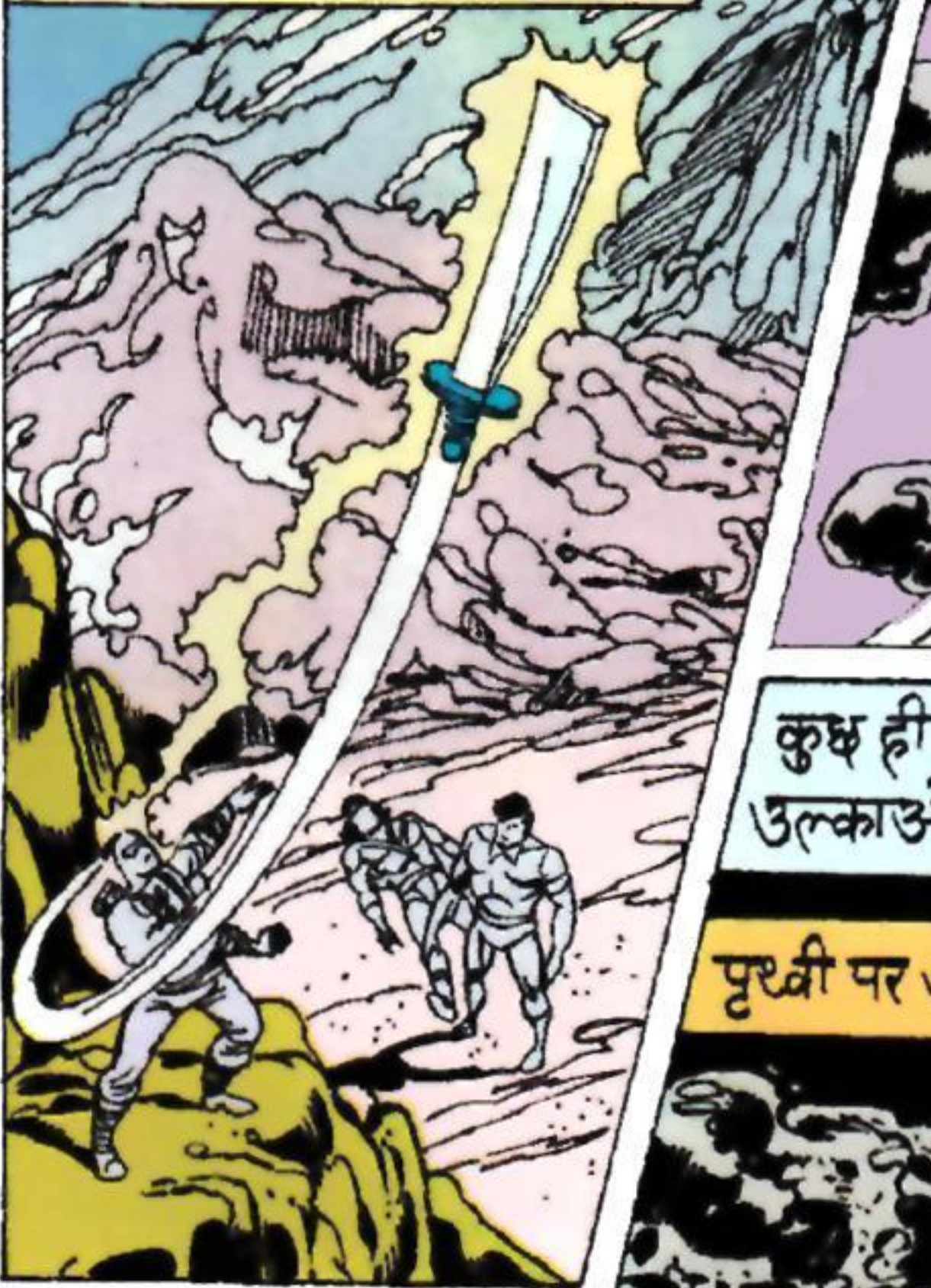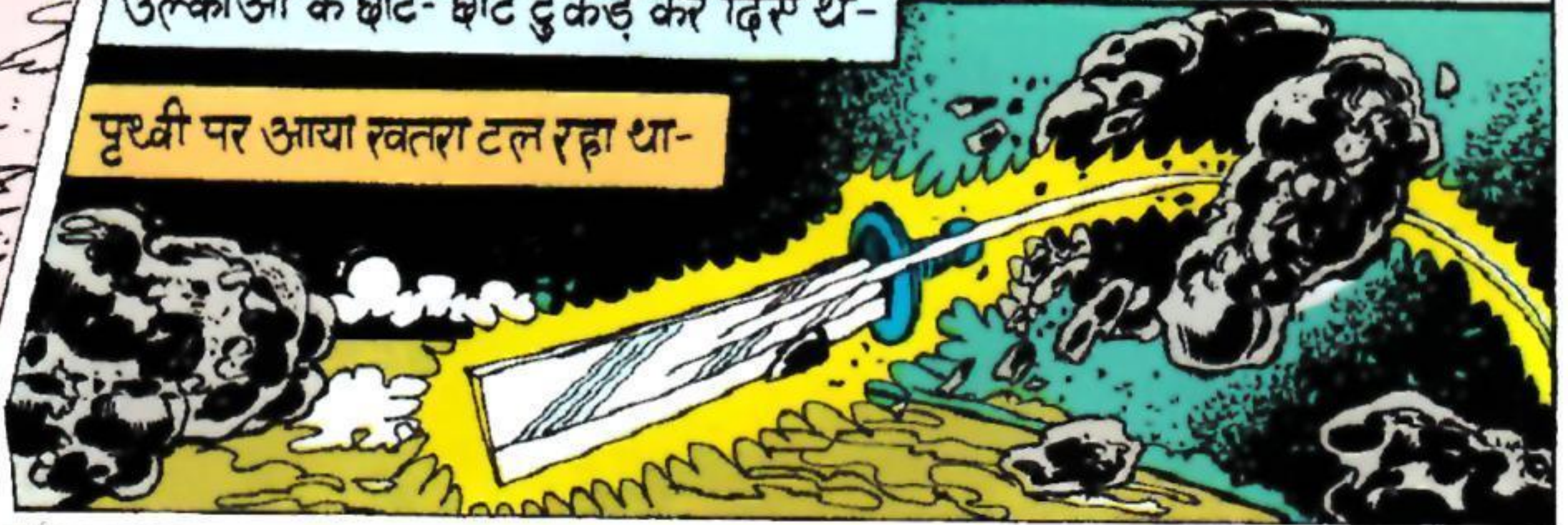
लेकिन उल्का के, पहाड़ों से टकराने से ठीक पहले-
घबरा मत लड़के! महामानव तुम लोगों को मरने नहीं देगा!
क्योंकि अभी तो खेल शुरू हुआ है!
तुमने हम लोगों को बचाया! लेकिन क्यों? तुम्हारा तो मकसद हम लोगों को खत्म कर देना होना चाहिए था!
क्योंकि तुम पृथ्वी से मानवों को खत्म कर देना चाहते हो, और हम लोग उसमें बाधा डाल रहे हैं।
मैं शक्ति परीक्षण के लिए कभी युद्ध नहीं करता, महामानव! मैं सिर्फ किसी की रक्षा के लिए ही युद्ध करता हूं।
तुम मुझे युद्ध करने के लिए मजबूर नहीं कर सकते!
तू जान बचाने के लिए युद्ध करता है न? तो फिर इस लड़के की जान बचाने के लिए मुझसे लड़!
ठीक कह रहे हो! लेकिन अब मुझे इस खेल में मजा आ रहा है लड़के!
अभी जरा इस नकाबपोश से थोड़ी सी जोर-आजमाइश और करने का मन है।
मैं इस लड़के को यहां से ले जा रहा हूं। अपनी शक्ति का प्रयोग करके इसका पता लगा। और फिर वहां पर आकर इसको बचा!
महामानव की तीव्र मानस तरंगों ने ध्रुव को किसी अंजान जगह पर भेज दिया-

और फिर वह खुद भी वहां से विलुप्त हो गया-
हा हा हा! किरीगी! अब तू मेरे पीछे-पीछे ऐसे आएगा जैसे मालिक के पीछे कुत्ता! आ! और आकर मुझे हरा ले! हा हा हा!
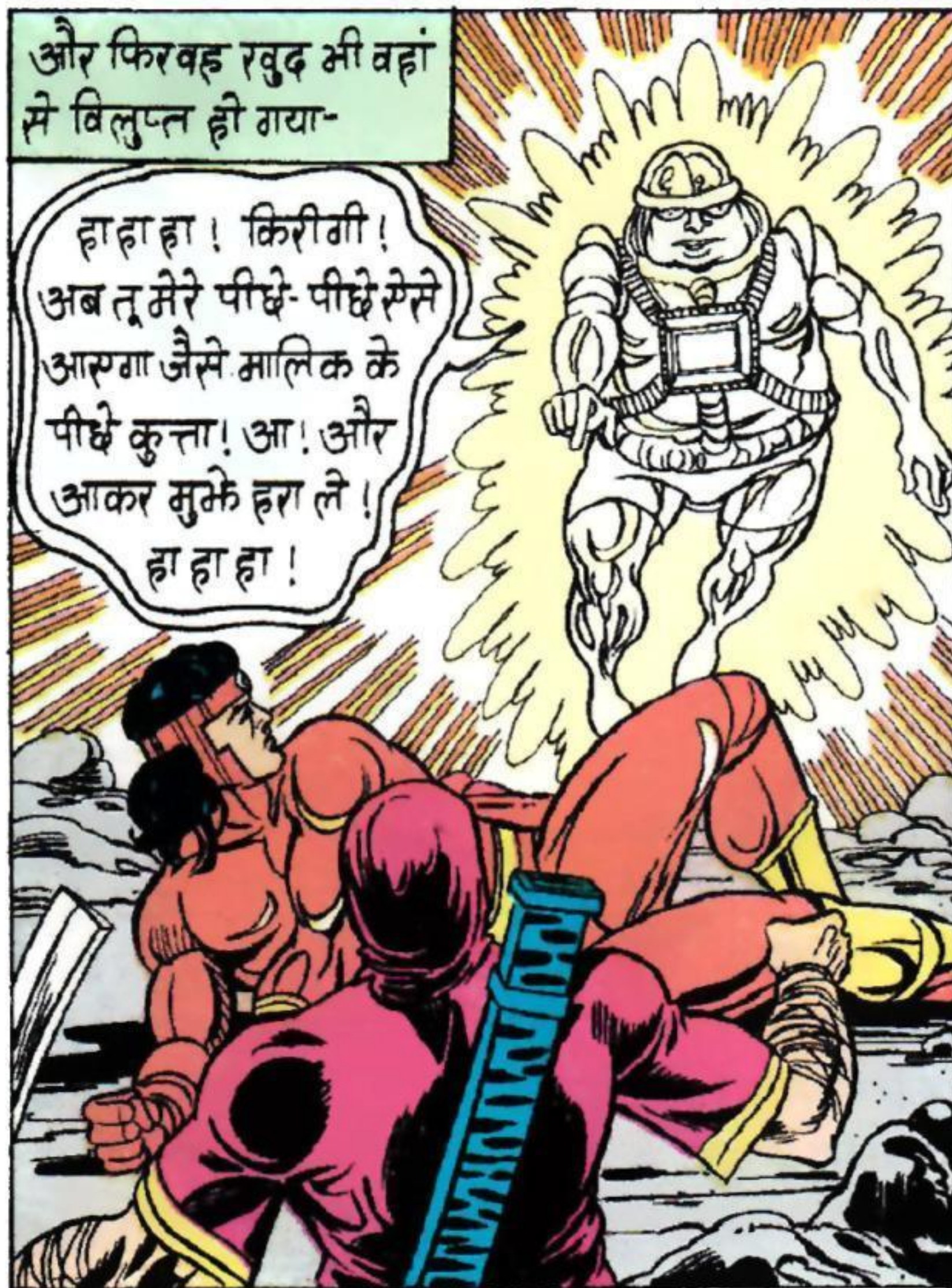
अब तक धनंजय के होश भी वापस आ रहे थे-
यह सब क्या हो रहा है किरीगी?
महामानव और ध्रुव दोनों ही गायब हो गए! पर कहां?
महामानव, ध्रुव को किसी अज्ञात स्थान पर ले गया है! और मुझे वहां पर जाकर उसे बचाने की चुनौती भी दे गया है! पर चिन्ता की कोई बात नहीं है।
मेरा खड्ग मुझे अपने-आप उसी स्थान पर ले जाएगा जहां पर महामानव और ध्रुव हैं।

मैं भी स्वर्ण-नगरी जाकर अपने यंत्रों द्वारा उस स्थान का पता लगाने की कोशिश करता हूं।
किरीगी की यौगिक शक्ति उसे उसी स्थान की तरफ खींचकर ले जाने लगी जहां पर उसका मित्र भी था और शत्रु भी-

और यह दृश्य देखकर किसी की बाछें खिल गईं-
वाह! सारा काम बिना किसी व्यवधान के पूरा हो रहा है। अभी तक किसी का ध्यान इस तरफ नहीं गया है कि महामानव की इन हरकतों के पीछे किसी और का यानी मेरा हाथ है।
वैसे भी इस टकराव के बाद मेरा काम पूरा हो जाना चाहिए। फिर दुनिया पर राज करूंगा मैं। और मेरे पैर दबाएंगे किरीगी और महामानव!
अब मुझे भी उस स्थान पर पहुंच जाना चाहिए, जहां पर मैंने इन दोनों महाशक्तियों के टकराव की व्यवस्था कर रखी है।

किरीगी को ध्रुव और महामानव तक पहुंचने में ज्यादा वक्त नहीं लगा। और वहां पर जो स्थिति उनका इंतजार कर रही थी, वह सचमुच बहुत भयानक थी-
आहा! आओ, किरीगी आओ! मुझे पूरा यकीन था कि तुम मुझे आखिरकार ढूंढ निकालोगी!
जब तक तुम्हारे जैसा देखने वाला न हो, तब तक ऐसा तमाशा दिखाने का मजा ही क्या है!
मैं इस वक्त जिस जगह पर खड़ा हुआ हूं, वह समुद्र के बीच का एक छोटा सा द्वीप नहीं है, बल्कि समुद्र के अन्दर के एक पहाड़ का शिखर है।...
...पहाड़, जो एक सुप्त ज्वालामुखी होने के साथ-साथ, इस पृथ्वी का सबसे महत्त्वपूर्ण पहाड़ है!...

... क्योंकि इसी पहाड़ से निकले हैं इस पृथ्वी के सारे पहाड़! पृथ्वी के सभी पहाड़ समुद्र के अंदर से इस सुप्त ज्वालामुखी से जुड़े हुए हैं। अब मैं अपनी मानसिक ड्रिल से इस पहाड़ में एक छेद करूंगा, जो लावे से भरे हुए पृथ्वी के केन्द्र तक जाएगा...
...'मानसिक ड्रिल' के कंपनों से इन सारे पहाड़ों में एक भीषण कंपन पैदा होगा, जिससे पृथ्वी में जगह-जगह पर मीलों लंबी दरारें बन जाएंगी। समुद्र का पानी इन दरारों से होकर पृथ्वी के गर्म लावे तक पहुंचेगा। फिर भाप बनेगी। और इस भाप का भीषण दबाव पृथ्वी को कागज के लिफाफे की तरह फाड़ देगा!
यह सब कुछ होने में सिर्फ मिनटों का समय लगेगा। और इन मिनटों के दौरान इस लड़के पर लिपटा हुआ मेरा 'मानसिक खोल' कसता जाएगा...
... इतना कसेगा कि इसकी सारी हड्डियां चूर-चूर हो जाएंगी। यह चीखेगा और इसकी चीख तू मानसिक खोल के अंदर से भी सुन सकेगा।
अब मेरा पृथ्वी को नष्ट करने का आपरेशन शुरू होता है।
अब मर्जी तेरी है या तो इस लड़के को बचा ले, या फिर पृथ्वी को!
'मानसिक ड्रिल' ने पहाड़ के अंदर छेद करना शुरू कर दिया और मानसिक खोल ने ध्रुव को कसना-
घर्रर्र
लेकिन किरीगी अब तक समझ ही नहीं पा रहा था कि वह ड्रिल की तरफ बढ़े या ध्रुव की तरफ-

तभी ध्रुव ने उसकी दुविधा दूर कर दी -
किरीगी, तुम ड्रिल को रोको! मेरी फिक्र मत करो। मैं बचने का कोई न कोई रास्ता खुद ही ढूंढ लूंगा।
किरीगी ने अपनी यौगिक शक्ति को मानसिक ड्रिल को रोकने की तरफ केन्द्रित कर दिया-
और एक बार फिर दो महाशक्तियों के टकराव से ऊर्जा की चिंगारियां वातावरण में फैलने लगीं-
और उस अंजान आकृति की इच्छा एक बार फिर पूरी होने लगी-
हा हा हा! यह स्थिति भी बहुत सटीक बैठी है। कुछ ही देर में मेरा काम हो जाएगा। पर मुझे ध्यान रखना होगा कि मैं जरूरत से ज्यादा ऊर्जा न सोख लूं...
... वर्ना इन शक्तिशाली ऊर्जाओं के आघात से मेरा मस्तिष्क एक बार फिर बेहोशी की दुनिया में चला जाएगा।
ध्रुव भी अपने दिमाग का इस्तेमाल कर रहा था-
महामानव मेरी तरफ से एकदम निश्चिन्त है। वह जानता है कि मैं इस मानसिक खोल से निकल नहीं सकता! लेकिन अगर किसी तरह से मैं महामानव के दिमाग को कोई आघात पहुंचा सकूं तो यह मानसिक खोल इतना कमजोर हो सकता है कि मैं इसे तोड़कर निकल सकूं।
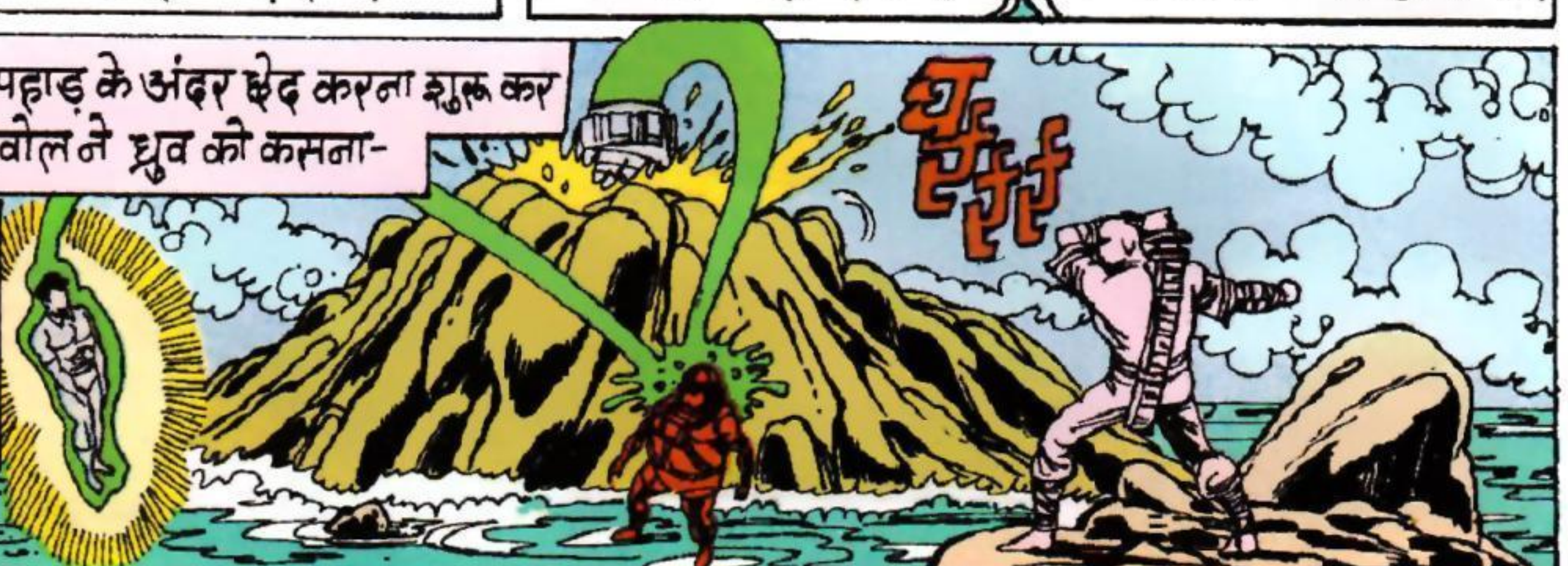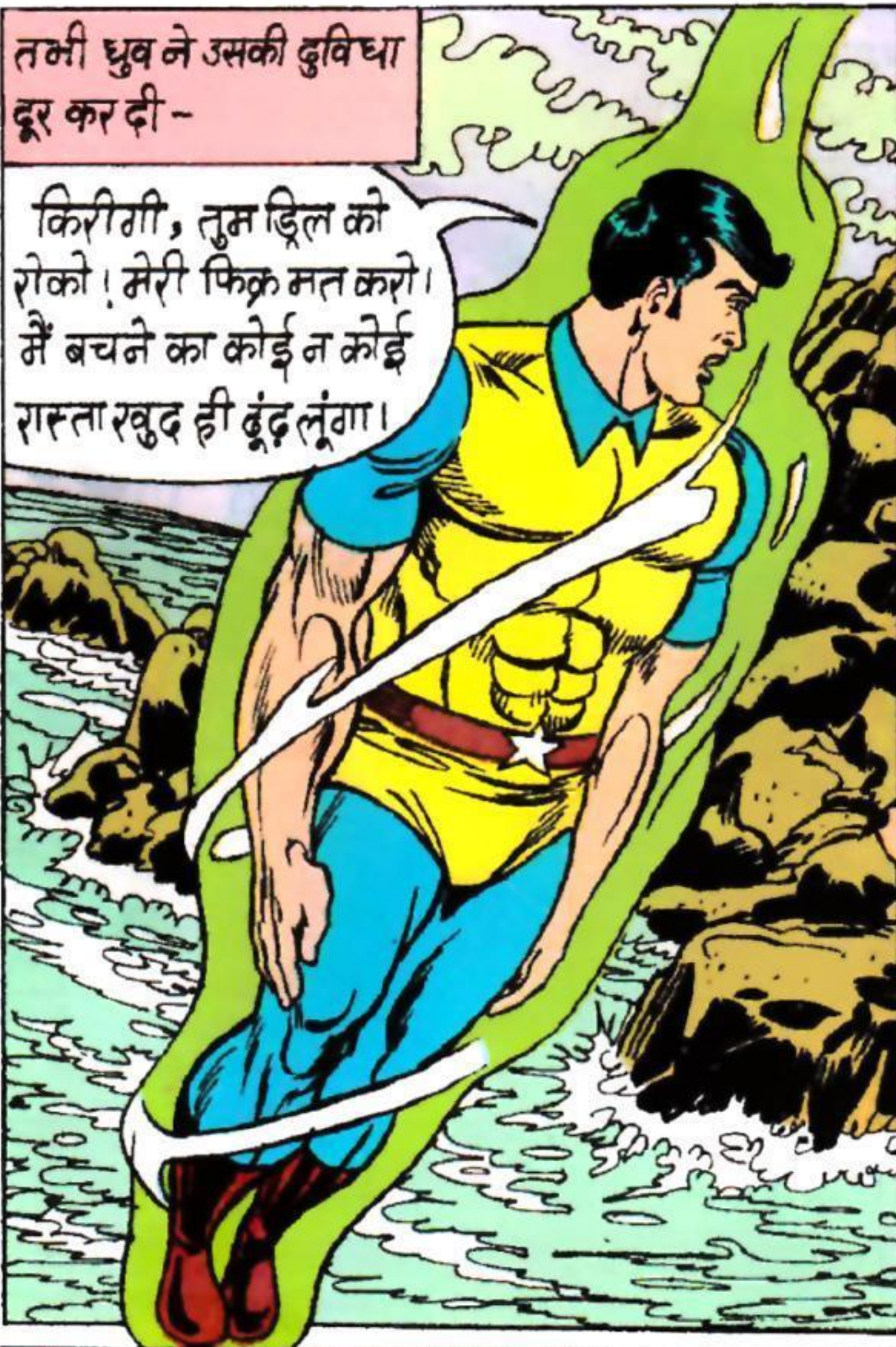
फिलहाल महामानव एक गलती कर गया है। इस वक्त वह पानी पर खड़ा है। शायद मेरे मित्र इस वक्त मेरी कुछ मदद कर सकें!
ध्रुव के गोल होंठों से एक खास सीटी उभरी...

...और लगभग तुरन्त ही - सीटी के जवाब में एक डॉल्फिन पानी की सतह पर उभर आई। ध्रुव के होंठों से सीटी का निकलना जारी रहा-
डॉल्फिन ध्रुव की बात को समझते ही...

...पानी में वापस गोता लगा गई-
उम्मीद है कि डॉल्फिन मेरी बात समझ गई होगी...

...अब, जब ये वापस आएगी तो अपने साथ लेकर आएगी एक फुल साइज वाली 'ईल मछली'...
...जो अपने शरीर में इतनी बिजली बना सकती है जो एक ही झटके में घोड़े तक को बेहोश कर दे।

और जब यह असावधान महामानव को करेन्ट मारेगी तो इसका दिमाग कुछ देर के लिए तो बेहोशी की दुनिया में चला ही जाएगा।
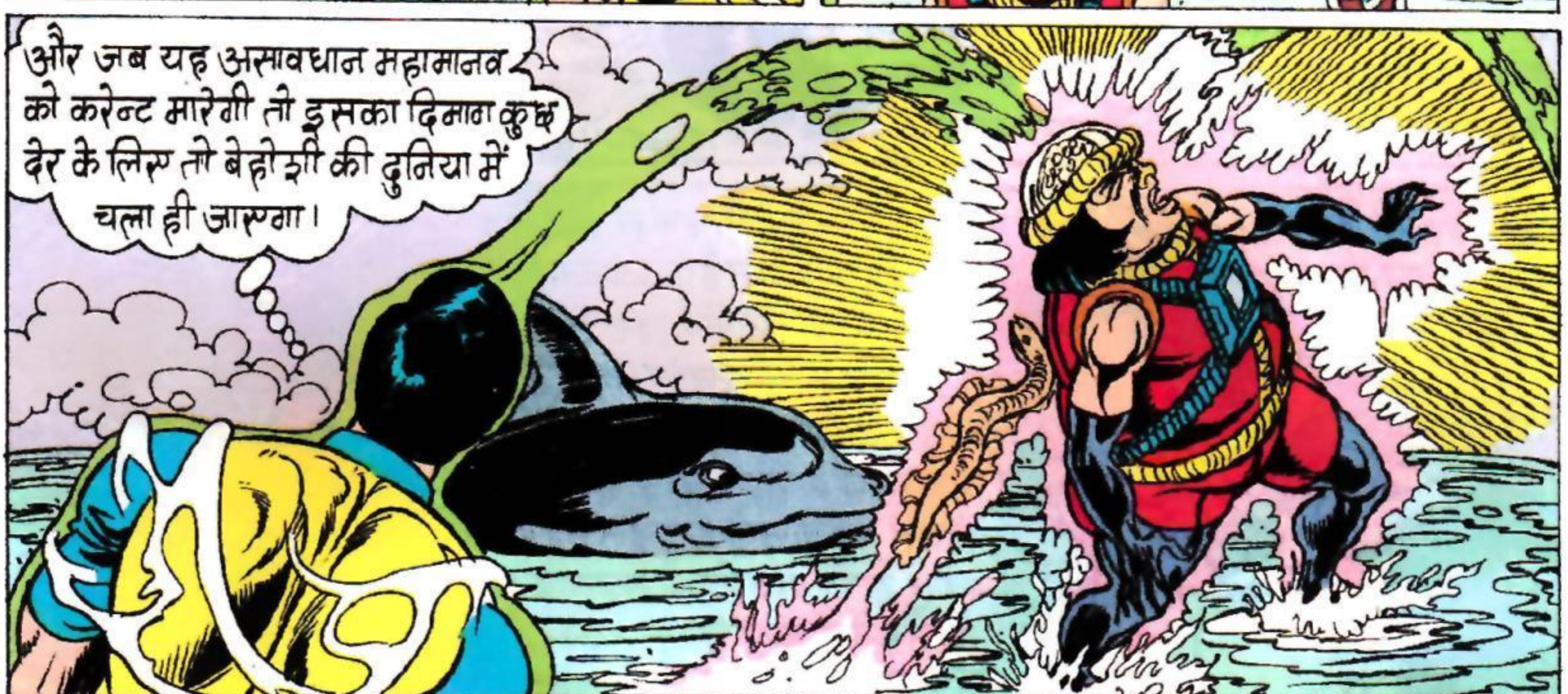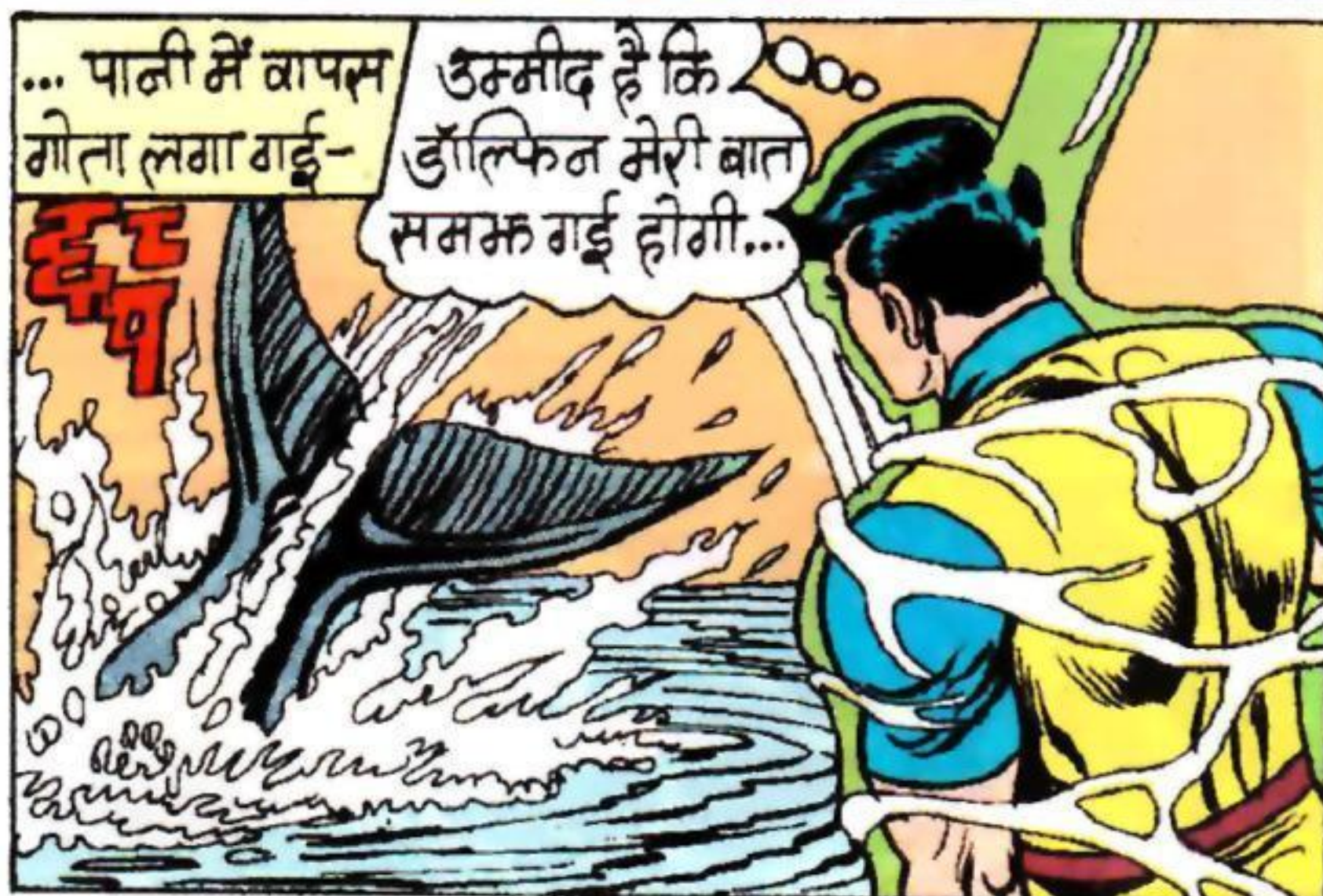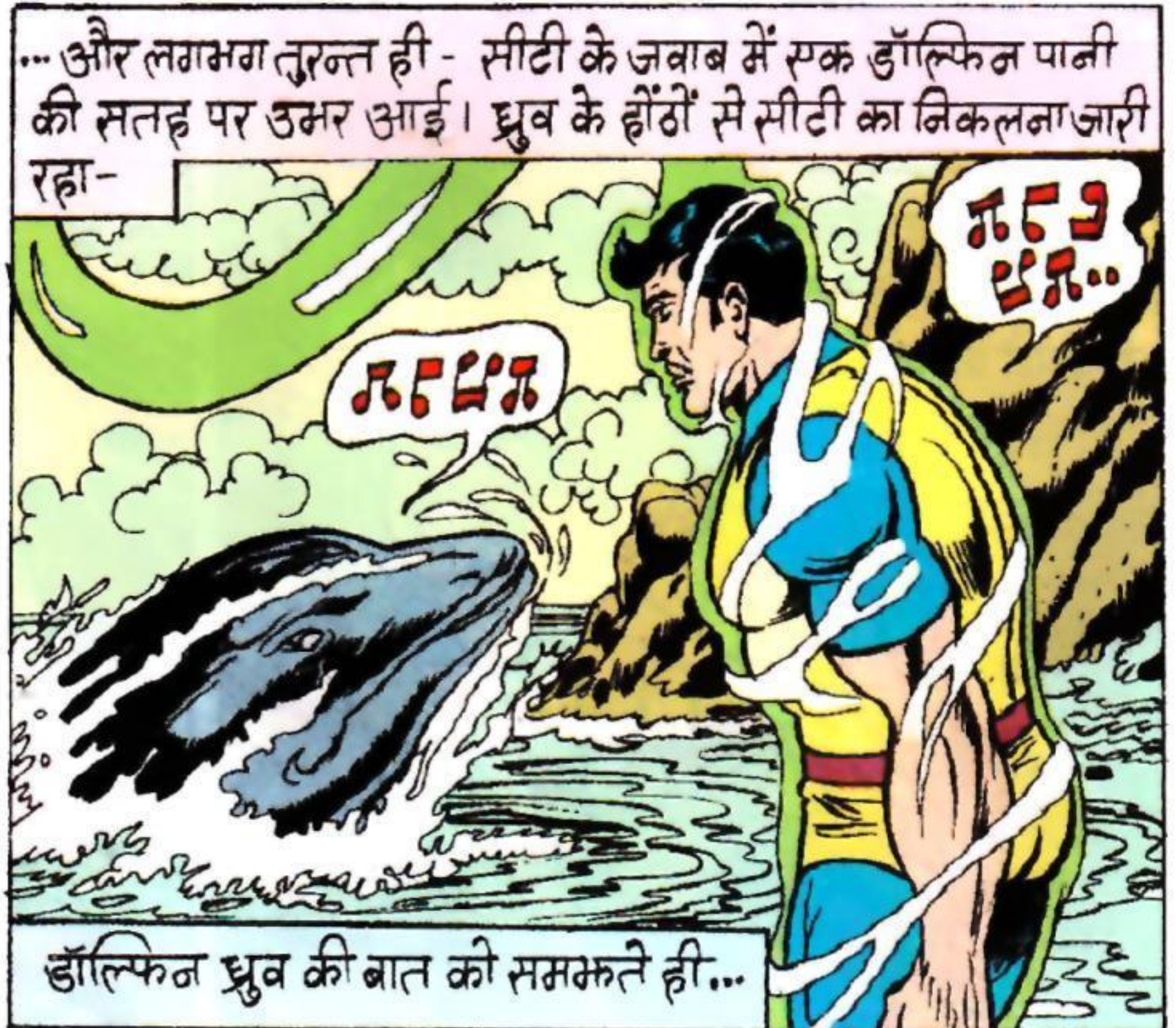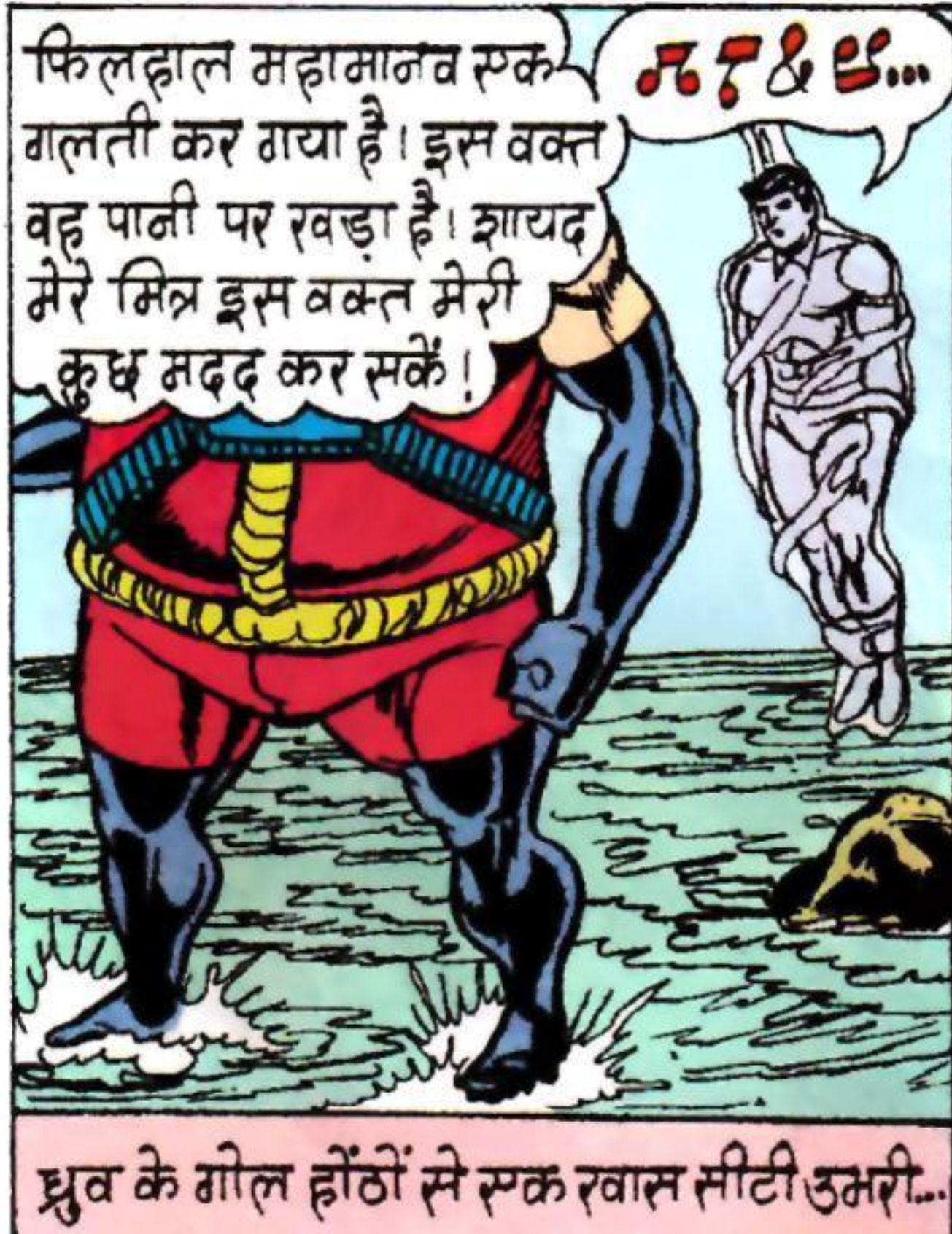
और इसका 'मानसिक खोल' इतना कमजोर हो जाएगा कि मैं इसे पतली 'पोलीथीन की तरह फाड़ सकूं।...

... और इसकी कैद से आजाद हो जाऊं!

ध्रुव के इस अप्रत्याशित वार ने उस आकृति को भी चिन्तित कर दिया-

ओह! महामानव का जाग्रत मस्तिष्क आधी बेहोशी की हालत में पहुंच गया है। अब मुझे अपना मानसिक कंट्रोल इसके सुप्त मस्तिष्क पर करना होगा!
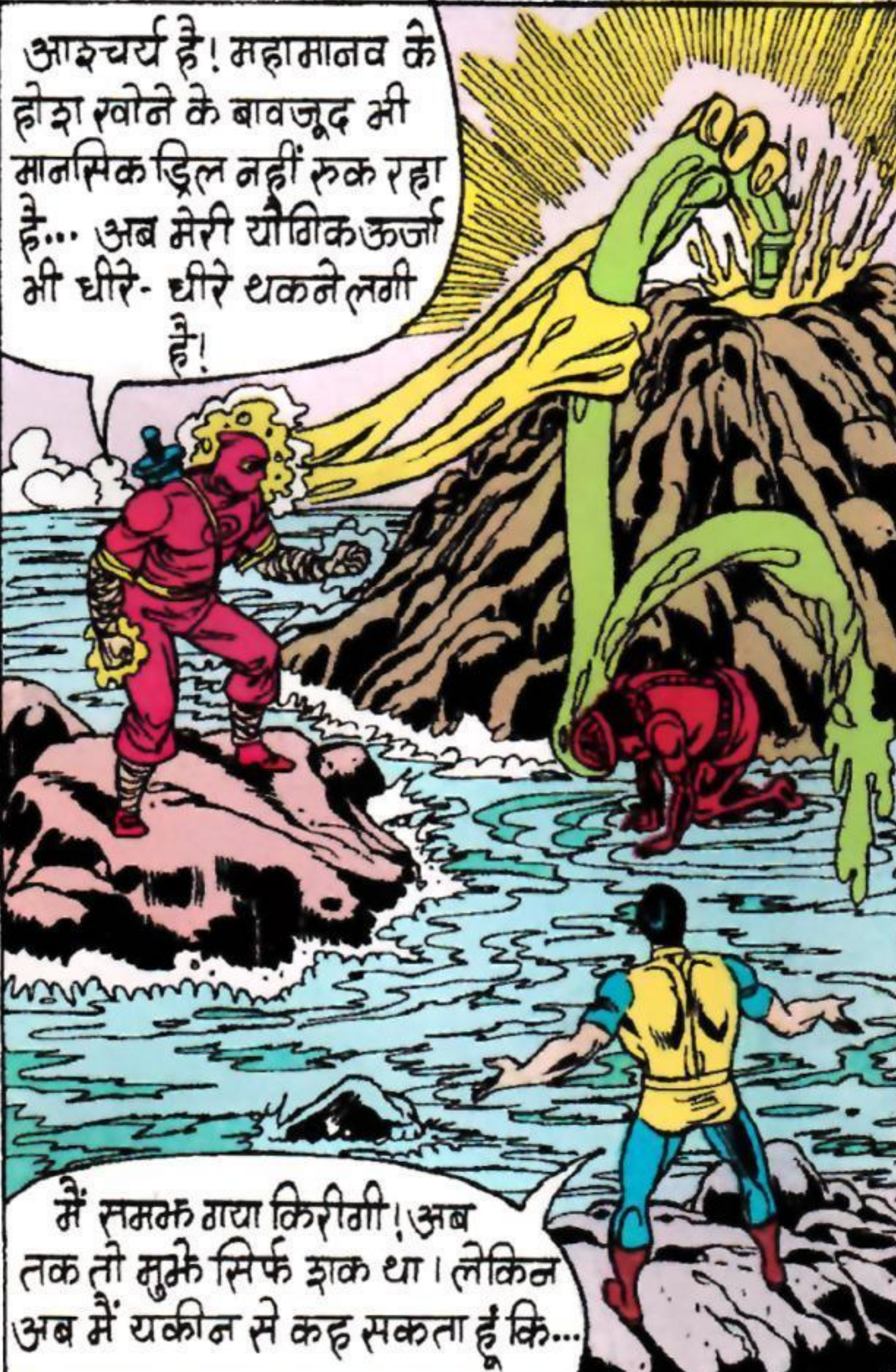
★ किसी भी मस्तिष्क के दो भाग होते हैं, एक जाग्रत भाग जो सिर्फ जगने के दौरान काम करता है, और दूसरा सुप्त भाग, जो सोने और जगने दोनों वक्त ही काम करता है।

फिर मैं समझ गया। महामानव अपने-आप कोई काम नहीं कर रहा है। उसका दिमाग किसी और के कब्जे में है। उसी ने महामानव से मिसाइलें छुड़वाईं, और अब किसी मतलब के लिए किरीगी और महामानव का टकराव करवा रहा है।

महामानव का मुझे देख कर भी न पहचानना और हिमालय पर गिरती विशाल उल्का से मुझे और किरीगी को बचाना भी इसी तरफ संकेत कर रहे हैं!

महामानव हम लोगों को कभी न बचाता! क्योंकि उसकी नजर में हम कीड़े-मकोड़े हैं!

और मेरे शक को इस बात ने पक्का कर दिया है कि बेहोश हो जाने के बाद भी महामानव की मानसिक ऊर्जा रुकी नहीं है।

मतलब साफ है! महामानव के मस्तिष्क का इस्तेमाल कोई और अपने फायदे के लिए कर रहा है!

अगर यह सही है तो वह है कहां? और हम उसे रोकेंगे कैसे?
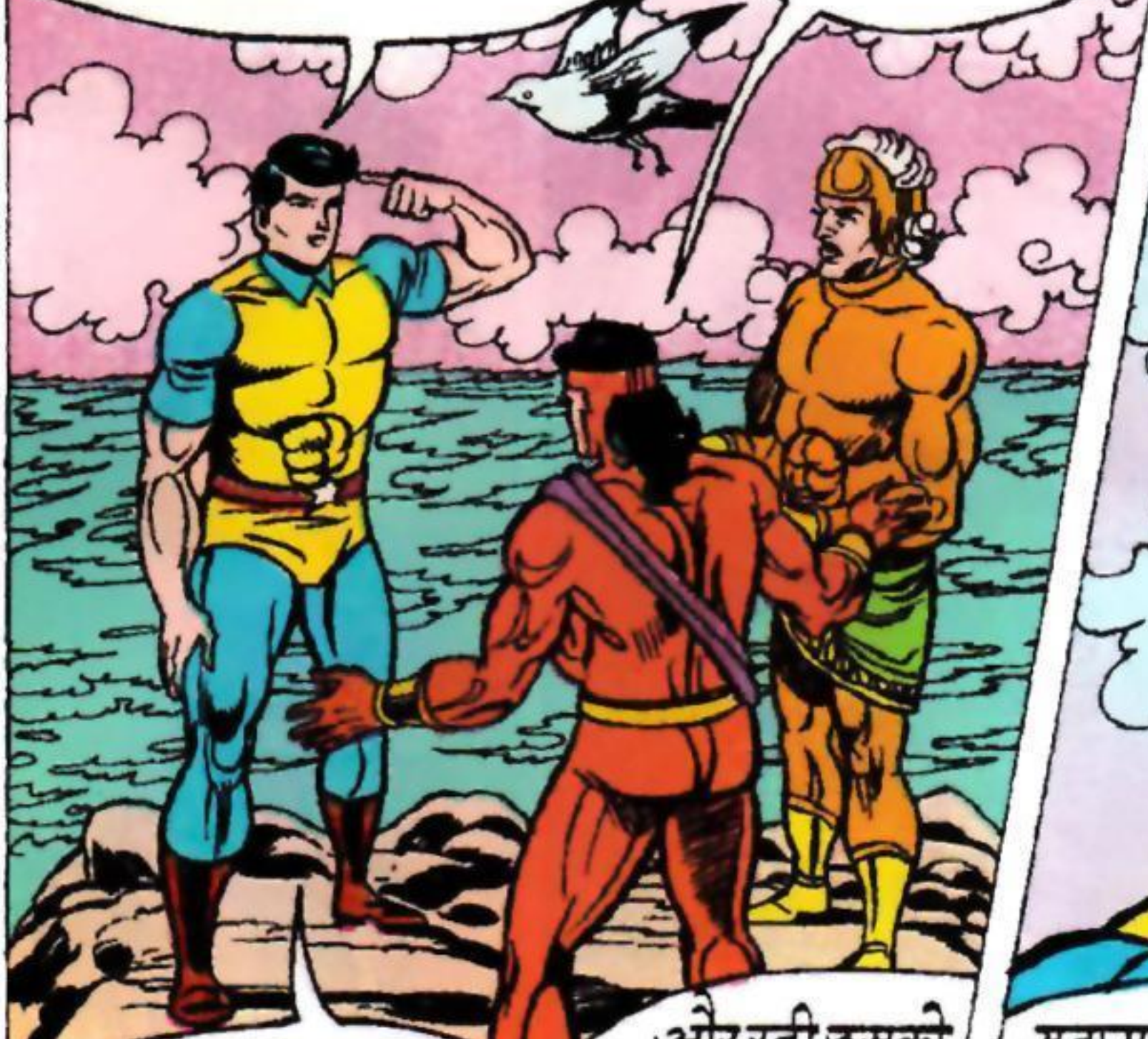
वह जो कोई भी है हमारे आस-पास ही है। तुम लोग अपने यंत्र के जरिए उसको ढूंढ़ो!

और रही उसको रोकने की बात तो उसका सिर्फ एक ही तरीका है...

...और वह यह कि महामानव के शरीर पर बंधे यंत्र को उतार दिया जाए।

यह क्या कह रहे हो ध्रुव? इससे तो महामानव आजाद हो जाएगा। और एक बार वह आजाद हो गया तो फिर उसको पकड़ना असंभव हो जाएगा!

महामानव के मस्तिष्क पर कब्जा करने वाली शक्ति सिर्फ इसी कारण से ऐसा कर पाई, क्योंकि महामानव का मस्तिष्क शांत और शिथिल था।

यह यंत्र उतार देने से महामानव फिर से अपने ऊपर काबू पा सकेगा। फिलहाल पृथ्वी को फट पड़ने से बचा सकने का सिर्फ यही एक तरीका है!

ठीक कह रहे हो! फिलहाल सामने आई समस्या से तो निबटा जाए। महामानव से तो बाद में भी निबटा जा सकता है।
हम इस यंत्र से उस व्यक्ति को ढूंढ़ने की कोशिश करते हैं जो शायद आसपास ही छिपा हुआ होगा।
और मैं महामानव के शरीर से वह यंत्र उतारता हूं।
प्रसेन ने यंत्र से तरंगों को छोड़ना शुरू कर दिया-
और ध्रुव ने एक खतरे को काटने के लिए दूसरा खतरा मोल ले लिया-
महामानव के शरीर से यंत्र उतरते ही-
महामानव के होश वापस उसके काबू में आ गए-
और पहाड़ में छेद कर रही 'मानसिक ड्रिल' गायब हो गई-
तुम! तुम यहां पर क्या कर रहे हो? और... और मैं यहां पर कैसे आ गया? मैं तो ज्वालोक में था। फिर... फिर शायद मुझे स्वर्ण नगरी ले जाया गया था... फिर मैं यहां कैसे...
कुछ पलों के लिए धीरज रखो महामानव! फिलहाल मैं तुम्हारा दुश्मन नहीं हूं...
... तुम्हारा दुश्मन...
ध्रुव! ये देखो! हमारी तरंगों ने एक मानसिक आकृति को ढूंढ़ निकाला है।
शायद ये ही इस सारी गड़बड़ का कारण है।
'शायद' नहीं! मैं ही इस सारे घटनाक्रम का सूत्रधार हूं।
और तुम मेरी मानसिक आकृति को देख कर क्या करोगे?
मैं तुमको अपना असली शरीर ही दिखा देता हूं!...

... वह शरीर जो इसी सुप्त ज्वालामुखी के नीचे सुषुप्तावस्था में पड़ा था। और अब वह होश में आ गया है। करोड़ों साल बाद!
देखो!
उस मानसिक आकृति की बात खत्म होते ही पहाड़ थरथराने लगा। चट्टानें लुढ़कने लगीं–
और पहाड़ की चट्टानी सतह को कागज़ की तरह फाड़ती हुई एक भयानक आकृति प्रकट हो गई–
हे भगवान! यह तो एक डायनासौर है!
डायनासौर! तो तुम्हारी भाषा में यह नाम है मेरा! वैसे मेरे जमाने में दूसरे डायनासौर मुझे 'गलाला-गीचा' कहते थे। गलाला-गीचा यानी सबका सरदार!
लेकिन अजीब सा है। ऐसे डायनासौर का तो कहीं जिक्र तक नहीं पढ़ा है!
वैसे मैंने अपने मानस रूप में कुछ मानवों के मस्तिष्क का अध्ययन भी किया है। मैं जानता हूं कि तुम मानव हम लोगों के बारे में क्या सोचते हो?

हमारे जीवाश्मों की छानबीन करके, तुम लोगों ने यह निष्कर्ष निकाला है कि डायनासौर की बड़ी खोपड़ी में छोटा सा दिमाग था। यानी डायनासौर मूर्ख थे!...

गलत समझे तुम सब।

आज से लगभग पैंतीस करोड़ साल पहले, जब पृथ्वी पर अलग-अलग तरह के डायनासौरों का विकास हो रहा था, उस वक्त मेरे जैसे बुद्धिमान डायनासौरों का विकास भी लगभग तुरन्त ही शुरू हुआ था-

इसलिए जिस समय तक पृथ्वी पर डायनासौर छा चुके थे, उस वक्त तक मेरे जैसे बुद्धिमान डायनासौर गिनती के ही थे। हमारा मस्तिष्क काफी विकसित था। और इसका इस्तेमाल हम दूसरी जाति के डायनासौरों को नियंत्रित करने में करते थे-

मेरी प्रजाति के डायनासौरों में भी मेरा मस्तिष्क सबसे अधिक विकसित था। गजब की मानसिक शक्तियां पैदा हो रही थी मुझमें-

★ पढ़ें 'महामानव'

बचने का एक ही रास्ता था। हम सरीसृपों के अन्दर यह खासियत होती है कि हम अपने शरीर का तापमान गिराकर एक लंबी नींद के लिए सोने जा सकते हैं। तुम मानव इसको 'सुषुप्तावस्था' कहते हो। मैं अपने शरीर को 'मानसिक खोल' में बंद करके एक लंबी नींद सोने चला गया। ताकि जब पृथ्वी का तापमान फिर से बढ़े तो मैं वापस जाग सकूं। सोने के लिए मैंने इस सुप्त ज्वालामुखी को ही चुना। इसके अंदर घुसकर मैं सो गया-

मुझे जगाने में तुम मानवों ने बड़ी सहायता की। वैसे तो मेरे होश में आने लायक तापमान बढ़ने में और वक्त लगता लेकिन मानवों ने वायु प्रदूषण फैलाकर पृथ्वी का तापमान समय से पहले ही बढ़ा दिया। तापमान इस स्तर तक आ गया कि मैं सोया तो रहा, लेकिन मेरे मस्तिष्क का एक हिस्सा जग गया। और फिर मेरा मानस रूप अपने बंधुओं के हत्यारे महामानव की खोज में निकल पड़ा-

मैंने महामानव को मारने से पहले उसके जरिए अपना काम साधने, यानी पृथ्वी का तापमान बढ़ाकर पूरी तरह से होश में आने की ठान ली। मैंने ही उसको आजाद कराकर उसके द्वारा मिसाइलें दगवाईं।
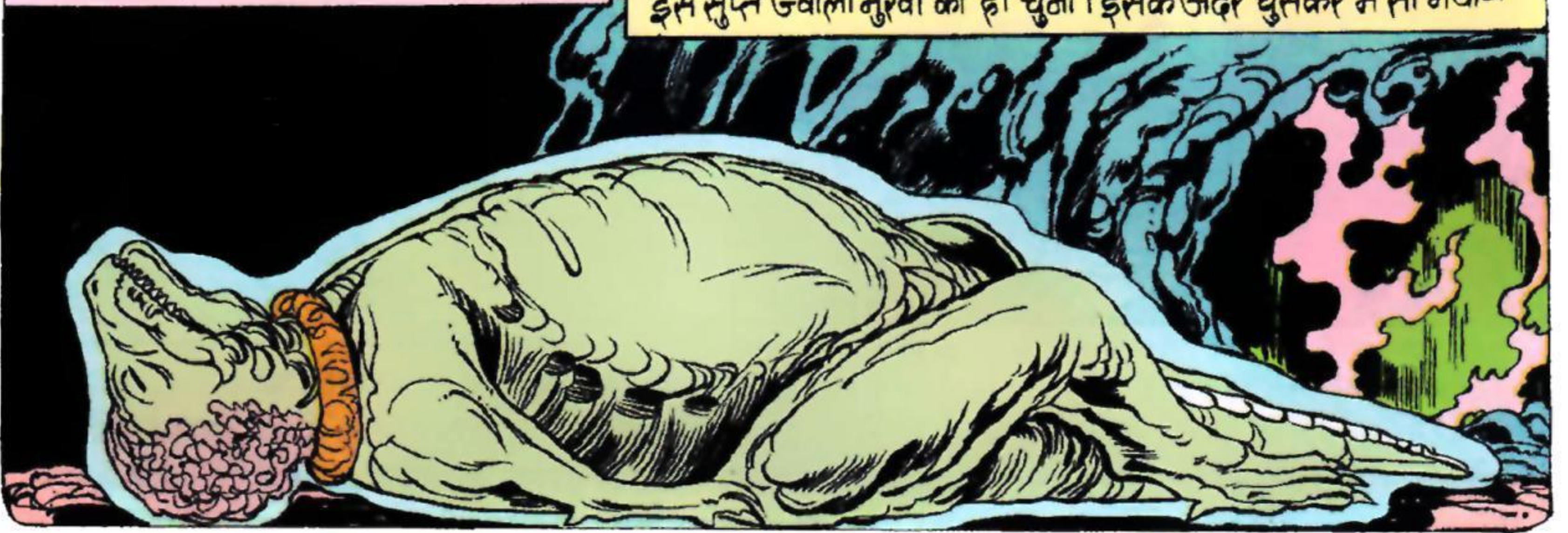
लेकिन फिर किरीगी और महामानव के टकराव से जो ऊर्जा पैदा हुई, वह भी मुझे जगाने को काफी थी। मैंने ऐसी- ऐसी परिस्थितियों को रचना शुरू कर दिया, ताकि किरीगी और महामानव का टकराव होता रहे और मैं उनकी मानसिक और यौगिक ऊर्जा सोखता रहूं।
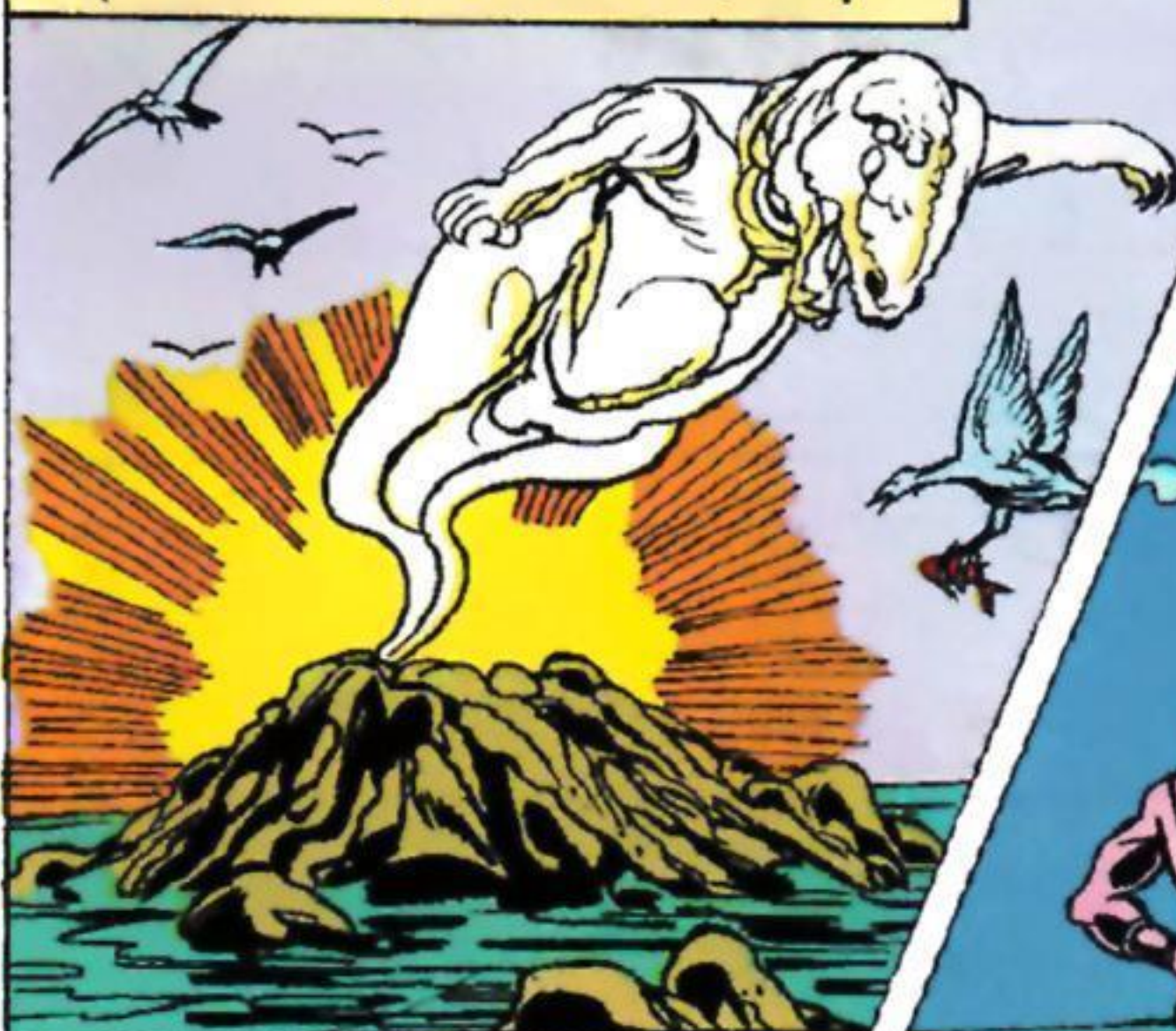
और जब महामानव मुझे मिला तो तुम लोगों ने उसे पहले ही बंदी बना रखा था। उसका मस्तिष्क शिथिल था। इस वक्त उसके मस्तिष्क पर कब्जा करना मामूली सा काम था-

मैंने वही किया और नतीजा अब तुम लोगों के सामने है। तुम लोगों का शासक एक लंबी नींद से जाग चुका है।

अब या तो तुम मानव और महामानव मेरे पैरों को चूमोगे, या फिर अपनी मौत को गले लगाओगे!
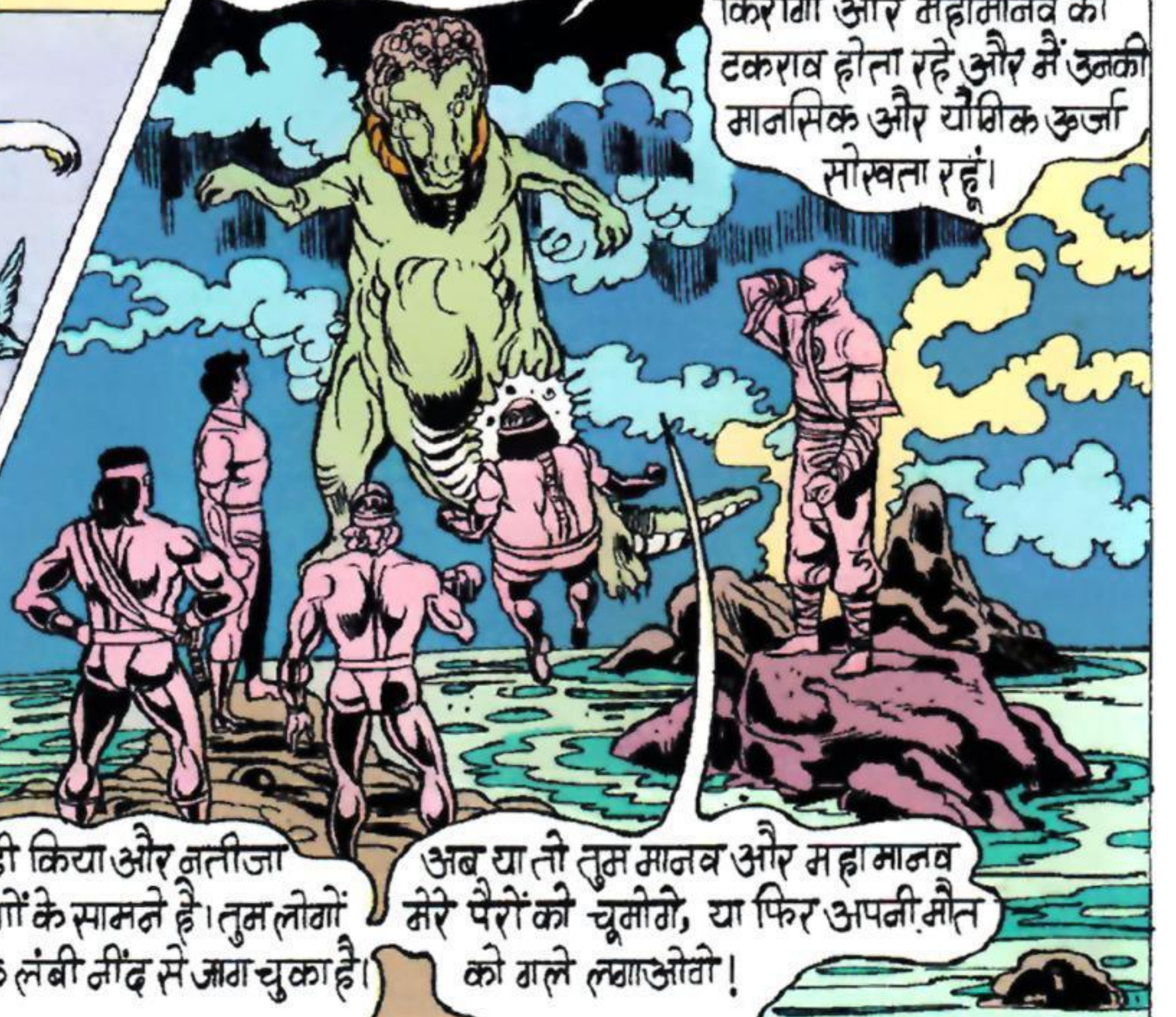
मौत को गले यहां पर लगाने वाला सिर्फ तू है गलाला-गीचा! मानव एक प्रकार से मेरे पूर्वज हैं। अगर कोई दूसरी प्रजाति का प्राणी मानवों की जान का दुश्मन बनेगा तो महामानव उसका दुश्मन बन जाएगा!
मानवों की मौत और जिन्दगी देने का अधिकार सिर्फ महामानव के पास है!
तू भूल रहा है महामानव कि मानसिक शक्तियां मेरे पास भी हैं...
...और मानसिक वार करना मुझे भी आता है।
लेकिन अभी दूसरी महाशक्तियां अपने होश में थीं--
मेरा खड्ग तेरी गर्दन को काटकर तुझे एक बार फिर एक बहुत लंबी नींद सुला देगा, सरीसृप!
तू भी महामानव की तरह यह भूल रहा है किरीगी, कि मैंने तेरी यौगिक ऊर्जा भी सीखी है।..
महामानव ने मानसिक वार किए तो बहुत थे लेकिन खाया एक भी नहीं था! एक ही वार ने महामानव की आधी ताकत को चूस लिया--
अब तू भी अपनी यौगिक शक्ति का स्वाद खुद ही चख ले!

असावधान किरीगी जब तक अपने बचाव का रास्ता सोच पाता, उसी की यौगिक शक्ति से भरा खड्ग, उसके शरीर से आ टकराया-
खड्ग, वज्र जैसे कड़े किरीगी के शरीर को काट तो नहीं सका, लेकिन ऊर्जा का झटका ही किरीगी को कुछ देर के लिए बेहोश कर देने को काफी था-
महामानव और किरीगी से निबटने के बाद गलालागीचा बाकी तीनों की तरफ मुड़ा-
तुम तीनों कीड़ों से मुझे कोई खतरा नहीं लग रहा है। वैसे भी इतने साल सोए रहने के बाद मेरी भूख भड़क उठी है।...
...और मैं तय नहीं कर पा रहा हूं कि तुम तीनों में से पहले किसे खाऊं? तुम्हीं बताओ, अपने राजा का पहला भोजन बनने का सौभाग्य कौन प्राप्त करना चाहता है?
ये दोनों भी काफी शक्तिशाली मानव हैं, गलालागीचा। बाद में तुम्हारे काम आएंगे। मैं तुम्हारे किसी काम का नहीं हूं। तुम मुझे ही खा लो।
क्या कह रहे हो ध्रुव? तुम पीछे हो जाओ। हम इससे किसी न किसी तरह से निबट ही लेंगे।
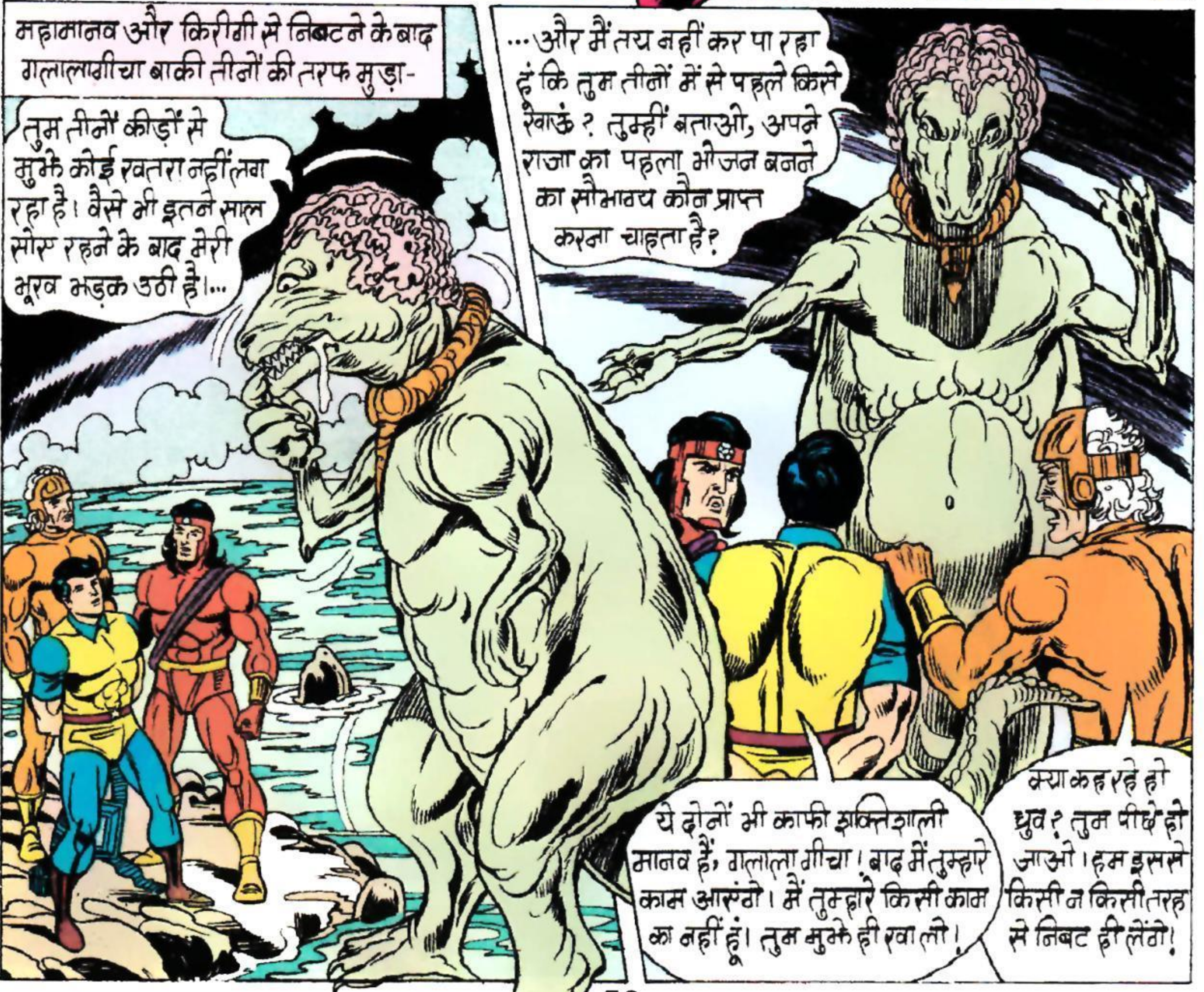
और उसी पल ध्रुव ने बिजली की सी फुर्ती से वह यंत्र, गलालागीचा की छाती पर चिपका दिया, जो उसने महामानव के शरीर पर से उतारा था-

लगभग तुरन्त ही गलालागीचा का मस्तिष्क भी शिथिल और शान्त हो गया। यंत्र ने उसको, उसके ही ख्यालों की उस दुनिया में पहुंचा दिया था जहां पर उसकी सारी इच्छाएं पूरी हो चुकी थीं-

मुझे सचमुच बहुत अफसोस है गलालागीचा कि मैंने तुमको अपना शरीर खाने न देकर तुमको भूखा ही छोड़ दिया।...
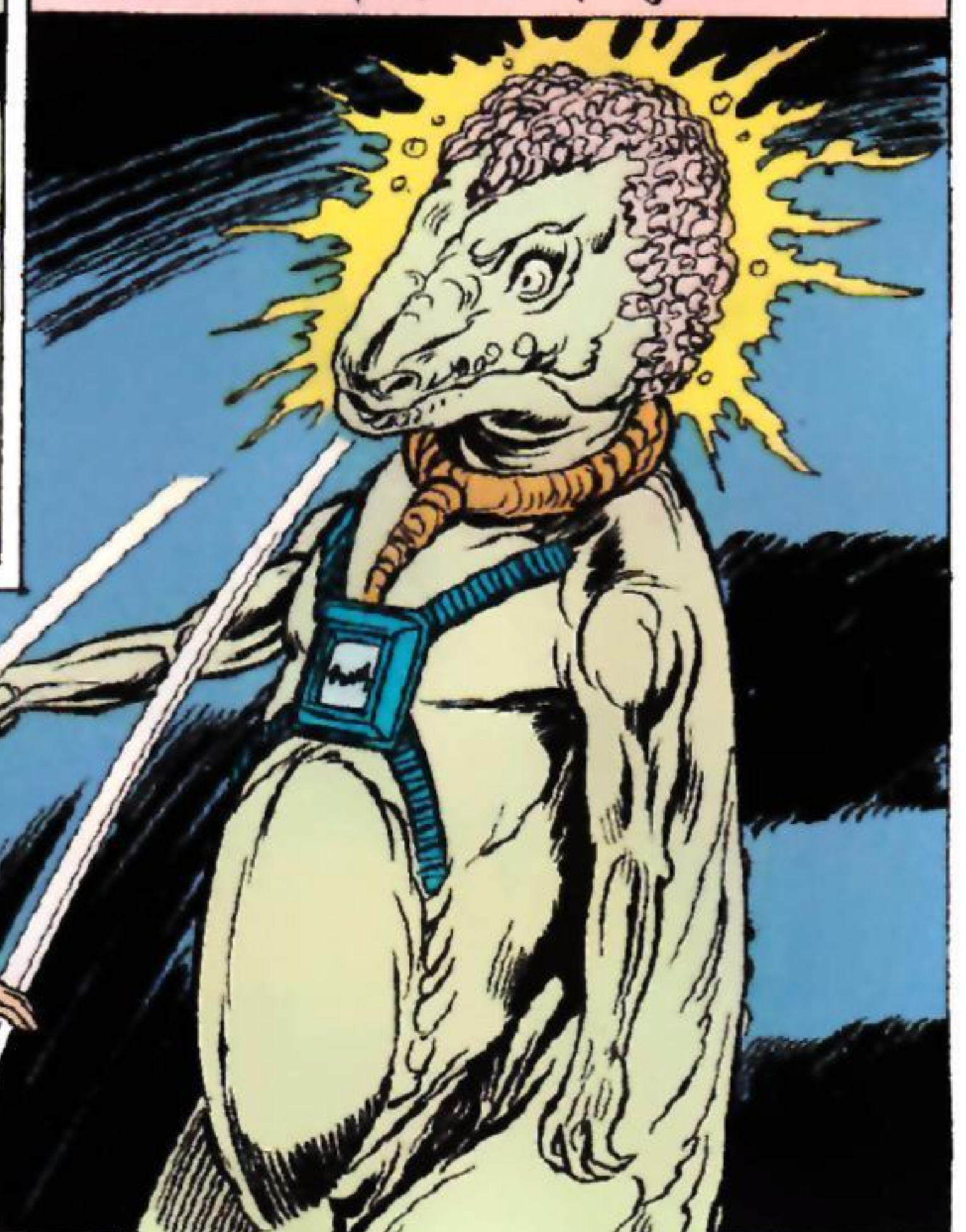
... लेकिन यह यंत्र चिपकाने के लिए मुझे तुम्हारे पास पहुंचना जरूरी था, और तुम्हारे पास पहुंचने का सिर्फ यही एक रास्ता मुझे समझ में आया था...

और फिर-

कमाल कर दिया तुमने ध्रुव! यंत्र तो हमारे पास सारे समय था, लेकिन उसको इस्तेमाल करने का ख्याल सिर्फ तुमको ही आया!

सिर्फ यंत्र का ही नहीं, बल्कि इस पूरे प्रकरण में शक्तियां तो हमारी जरूर थीं, लेकिन उनका सही इस्तेमाल ध्रुव ने ही सुझाया!

मैं तुम्हारी बुद्धि का चमत्कार तीसरी बार देख रहा हूं ध्रुव! और तीनों बार जो काम मेरी मानसिक शक्तियां भी न कर सकीं, वह तुमने कर दिखाया।

शायद मानसिक शक्तियों का बुद्धि से कोई संबंध नहीं है।...

... और अगर ऐसा है तो मानव, महामानव से किसी तरह से कम नहीं है। अब मानवों के बारे में मेरी राय बदल चुकी है। मैं खुद नहीं जानता कि अब मैं क्या चाहता हूं। और यही सोचने के लिए मुझे वक्त चाहिए।...

ध्रुव को वापस राजनगर पहुंचाने के बाद हमको इस सरीसृप का भी इंतजाम करना है धनंजय! इसीलिए अब हमको भी जाना होगा!

समाप्त.

GREEN PAGE-30

सुपर कमांडो ध्रुव के दिवानो, आपसे ध्रुव के जरिए बात करते-करते इतना ऊब गया था कि सोचा आज सीधे-सीधे बात की जाए। आज ध्रुव अपने सफर पर आगे बढ़ता हुआ एक और मील का पत्थर पार कर गया। महाकाल महामानव को आखिरकार एक मानव ने एहसास दिला ही दिया कि दिमाग और बुद्धि दो अलग-अलग चीजें हैं। बुद्धि का सही अर्थ है, ठीक वक्त पर अपने दिमाग का भरपूर इस्तेमाल करना। ध्रुव हर बार यही करता है, और यह तो आप सब खुद भी अच्छी तरह से जानते हैं।

सच बात तो यह है कि ध्रुव का जन्म कॉमिक हीरो के उस दौर में हुआ था, जब हर सुपर हीरो अपने अंदर सुपर पावरों का पुलिंदा समेटे हुए, अपनी शक्तियों के जरिए विलेन को पीट-पीट कर उसकी जान निकाल लेता था। एक आम पाठक के लिए अपने आपको ऐसे हीरो से पूरी तरह जोड़ पाना जरा मुश्किल सा था। इसलिए राज कॉमिक्स के लिए एक ऐसे हीरो की रचना करने की सोची गई, जिसमें सिर्फ एक सुपर पावर थी। उसकी बुद्धि। और यह सुपर पावर सिर्फ ध्रुव में ही नहीं, आप सबके अंदर भी है। आने दो मुसीबतें, लेकिन हिम्मत मत छोड़ो। आप सबके अंदर जो सुपर पांवर बुद्धि है, उसका इस्तेमाल करते रहें। कोई न कोई एक ऐसा रास्ता जरूर निकलेगा, जिससे टकराकर आपकी मुसीबतें उड़न छू हो जाएंगी।

खैर, आपकी मुसीबतें तो दूर हो ही जाएगी, लेकिन ध्रुव के लिए तो मुसीबतों का एक नया दौर शुरु होने वाला है। आज ध्रुव अपनी दुनिया में बहुत खुश है। राजन मेहरा एक ऐसा पिता है जिस पर गर्व किया जा सके, प्यार का ममता का सागर है ध्रुव की मां और अपनी शोखियों और चुलबुलियों के फूल बिखेरती है श्वेता, छोटी सी प्यारी बहन। पर ये शांति आने वाले उस तूफान का सूचक है जो ध्रुव की जिन्दगी के इन तिनकों को बिखेर कर रख देगी। ध्रुव ने अपनी पिछली जिन्दगी में झांकने की कभी कोशिश नहीं की, क्योंकि उसकी कोई पिछली गुप्त जिन्दगी है ही नहीं। उसकी पिछली जिन्दगी है तो सिर्फ उसके असली माता-पिता, श्याम और राधा की गोद में बीता हुआ उसका बचपन और जूपिटर सर्कस में लगी वह भयानक आग जिसने ध्रुव के असली माता-पिता को छीन लिया था।

राजन मेहरा का गोद लिया हुआ पुत्र ध्रुव, अभी तक इस बात से अंजान है कि उसके पिता श्याम की जिन्दगी का वह हिस्सा, जिसमें श्याम के जूपिटर सर्कस में आने से पहले तक की दास्तान लिखी हुई है, अब ध्रुव के सामने एक भयंकर स्वप्न बनकर आने वाला है। खून, खून की तलाश के लिए निकलने वाला है। श्याम का खानदान, अपने वंश के आखिरी चिराग को ढूंढ़ने की जी तोड़ कोशिश करने वाला है। और यह कोशिश जन्म देगी, एक महागाथा को। और जब इस महागाथा द्वारा उठाया गया तूफान थमेगा, तो लहूलुहान ध्रुव अपने आपको एक ऐसे दोराहे पर खड़ा हुआ पाएगा, जहां से उसको खुद यह तय करना मुश्किल हो जाएगा कि वह कौन सा रास्ता चुने।

आने वाले विशेषांकों में आपको नताशा का भी एक नया रूप दिखेगा। राजनगर की तबाही में गायब हो गई ब्लैक कैट यानी रिचा भी एक बार फिर सामने आएगी। और यह भूलिएगा नहीं कि रिचा की जिन्दगी के अब चंद महीने ही बचे हैं। श्वेता अब कॉलेज में आ गई है और अब बचपन की हठ का स्थान ले लेगी, एक बागी विचारधारा। राजन मेहरा भी अपने रिटायरमेंट के नजदीक आ चुके हैं।

ध्रुव की दुनिया अब बहुत तेजी से बदल रही है, और इस बदलती दुनिया के लिए अगर आप अपने सुझाव मुझ तक भेजना चाहें , तो बड़े शौंक से भेज सकते हैं इस पते पर: **ग्रीन पेज नं.-30, 1603, दरीबा कलां, दिल्ली-110006**

लिखते-लिखते पन्ना खत्म हो गया, स्याही खत्म हो गई, लेकिन बातें खत्म नहीं हुई। खैर, फिर कभी इसी ग्रीन पेज पर आपसे फिर मुलाकात होगी।

आपका

अनुपम सिन्हा